॥ श्री ॥

॥ इस गुणविलास छपाणे में प्रयत्नकर्त्ता तथा सहायकर्त्ता सेठ श्रीमान् मोहणलालजी पूनमचंद गोलछा.

(अर्पण पत्रिका)

भीनासरवास्तव्य, चांठिया सेठजी, श्रीहजारी मलजी ऐसें उदार दिलवालेथे, जिनोंनें २२ समुदायवालोंमें, ज्ञानवृद्धिवास्ते, सहस्रो मुद्रायें खर्चकिया, अपणे समुदाइ दीनहीनोका उद्धार करणे में भी हरवख्त कटिबद्धथे, प्रार्थना सफल करणा तो उनोंका परमशीलथा, इस ग्रंथके छपाणेमें भी अधिकांश सहायक श्रीमान् हीथे, अब परलोकसिद्धाये, ऐसें नररत्नकों शांतिमिलो, उन श्रीमान्के पौत्र श्रीबहादरमलजीभी अपणे पितामहकीतरे दिनोदिन धर्ममें दानशूरता दिखायगें, कारण वीरोंके वीरही होते हैं.

[अथ ऋषभदेवजीकी लावणी ।]

॥ शीसनमाकै करूंरे वीनती, चरणकमलमैं चितलाउं हे जीरेचर० ऋपभ देव महाराज, करो सिद्धकाज, आज मैं जसगाऊं, [टेर,] अवल हकीगत कहूंरे आपकी सरवार्थसिद्धथी चवियां, माता कूखै आया, महोन सुखपाया उदर मैं वासलिया, चवदै सुपना आयारे मातानैं माताका हुलसा जोहिया, गई पतीकै पास, अर्थ दैवो भास, सुनो तुम मेरा पिया, [उडावणी] हे अय कहता राजा सुपना भला तो है आया, एहां आया, तुम यहोत खुसींसैं रहो हुसी जिनराया, एहां राया, माता मनमैं हरख पांमियो जायके मंगल गवाउं, ऋ० १, सुभ वेला मैं जनम लियो प्रभु, इंद्रादिक मिलकर आये, मेरू परयतपर, जाय, देव सव आय, महोच्छव करवाये, आठजानके कलस मंगाकै, सुगंधजलसैं भरवाये, प्रभुजीका जसगावै, चमर ढोलावै, प्रभूजीकूं नवाये, [उडावणी] हे इंद्राण्यां मिलकै भगतीसैं मंगल गावै, एहां गावै, अठाई महोच्छव करकै पीछा जावै, एहां जावै, इंद्र प्रभूजीसैं करै वीनती सगं लोकमैं मैं जाऊं, ऋ० २, कंचन वरणी देह प्रभूकी वृपभ लंछन है सुखदाई, धनुप पांचसै है काया मेरे मन भाया यही हैं अधिकाई, जुगला धर्म निवारै प्रभुजी कला वहोत्तर सिखलाई, वरसी दांन प्रभु दिया, जगमैं जसलिया, फेर दीक्षा पाई, [उडावणी] हे सय देवी देवता दीक्षा महोच्छवमैं आये, एहां आये, हे प्रभुजीके चरनमैं लुल २ सीस नमाये, एहां नमाये, च्यार सहससैं लीनी है दीक्षा जिनकूं मैं निन उठ ध्याऊं, ऋ० ३, लाख चौरासी पूरव आयू वीस लाख रहा

कचर पदे, पूर्व लाग दीक्षा पाली, शास्त्रमें [illegible], [illegible] [illegible] घदे. महम [illegible] छद्मस्थाग्ना प्रभुजाकी [illegible] केवली स्वामी. [illegible], [illegible], मोक्ष [illegible] पांनी. [उडावणी] हे कहे आपड महात्मा प्रभु- जीका [illegible], एहां गावै, हे देखो आयागमन निवार [illegible] हम [illegible], एहां [illegible], [illegible] आगो मेरुं आपका दरबार मैं पाऊं, श्र० ४, इतिपदं ॥

[नेमनाथजीकी लावणी]

॥ कहती है राजुलनार [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] म्हारो दिलजानी. नेम गये गिरनार [illegible] [illegible] [illegible] मोरी नही मानी. [टेर.] जिणमें जांन बणाय [illegible] [illegible] है जूनेगढ प्रभू आये हैं, छपन कोट जादव [illegible] [illegible] जांन [illegible] लाये हैं, इन्द्रादिक सब [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मंगल गाये हैं, तोरणका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं, [उडावणी] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] म्हारो पनडो फूल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], जिनकी शोभा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं, घूम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुकार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पशुकं भोजन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

समझावै, नेम गयो तो जावोबाईजी और बींद तोहे परणावैं, जुगमें बींद अनेक ह्मारी स० जोयांरे चितमें चावें, परसनकर मनोगमवरलो यूंसखियां सब बतलावैं, [उडावणी] हे जब राजुलयूं फुरमांईरे, ह्मारे और पुरुष सबभाई,हे मैं किसीकूं परणूं नांईरे,ह्मारे एक बींद जादु-राई सुण राजुलकी बात ह्मारी स० सखी लगी सब पि-छतानें ने० ३. सब सखियां लेलार ह्मारी स० चाली रा-जुलगढ गिरनारे, उठी घटा घनघोर मारगमें मेहवरस्यो मुसलधारे, सब सखियां गई बिछड ह्मारी स० न्यारी २, हुयगईसारे, चीर सुकावण काज सती जब गईहै गुफाके मझारे [उडावणी] हे सती रहनेमी समझायोरे, उनकूं धर्मको राह बतायो, हे जब रहनेमी सरमायोरे, सतीकूं वारंवार खमायो, आवड महात्मा गावै ह्मारीस० पिऊसे पहली गई निरवानी, ने० ४, इतिपदं ॥

॥ प्रभु जाय चढे गिरनारीरे, पाछें छोडी है राजुल-नारी, सुनी पशु पुकारी दयाचितधारी वारी ममताकूं मारी बिसारी, [टेर,] जलचरी खेचरी मरतांउवारी वानें मिरगाकी सुनी पुकारी, पशुवांको छोडदीना,प्रभुजा० १, महसारी वनमें संजमलीनो पंचमहाव्रतधारी, ऋद्धिना त्यागकीना, प्र० २, चौतीस अतिशय पैंतीसवानी, प्रभु भये हैं केवल ज्ञानी, आवडनें छंद कीना, प्रभु जा० ३ इतिपदं ॥

[निवेदन]

॥ पूज्य श्री श्री लालजी ऋषिराज अच्छे सुशील क्षमा दया निस्पृहता इंद्रीदमनादि व्यवहार क्रियासें विराजित साधु आर्यायें भाये वार्योसें सेवितचरण, आर्यावर्त्तमें प्रसिद्ध एक महापुरुष है, किसी गृहस्थ गृहस्थणीसें पत्र-व्यवहार नहीं करते धातूकी नाडीका चस्माभी इनका साधू कोई नहीं लगाता, कपडा रंगने नहीं, न साबूमें धोते हैं, रातपडे बाद सूर्य उदयतक धर्म ध्यानके वास्ते भी यह और इनके साधू स्त्रीकों अपनेपास नहीं आणे देते, साधुओंके वास्ते जो मकान गृहस्थनें वणवाया उसमें नहीं उतरेते हैं, गृहस्थका धातृ वगेरे पात्र काममें नहीं लाते हैं, कठोर ओर मर्मभेदक शब्द नहीं बोलते हैं, महान्पूर्वाचार्य श्रीजिनदत्तसूरिः प्रमुखका बडा उपगार जैनधर्मपर मांनते हैं, पूर्वाचार्यरचित आगम प्रकीर्ण पंचागीयुक्त मांनते हैं, बावीस अभक्षका खाणा पीणा बुरा समझते हैं, व्याकरण पठण अच्छा फरमांते हैं, जिनमंदिरकी भक्ती करणेवालोंकी बुराई, नहीं करते हैं, बलके श्रावकका कुलाचार धर्म फरमाते हैं, अपणे संग-गृहस्थ दूरदिसावर बोहचाणे चलेनो मना करते हैं, निश्राकृत आहार नहीं लेते हैं, गृहस्थकों कहकर गृथादिक नहीं लिखाते हैं, मोल लिख्या हुआ मिले जरूरी होय तो वहरते हैं, चिनपटिले हैं पुस्तकादिक अपणेपास नहीं रखते हैं, न दिशावरोंमें पुस्तकोंकी पारसलें संदूक मंगवाते हैं, पायखाना आदिकमें फरागत यह और इनके साधु नहीं जाते हैं, गृहस्थोंसें पगचंपी आदि वैयावच नहीं कराते हैं, तपभी बडा भारी यह और इनके चारीलोक करते हैं लिफाफा फाड़ मात्र वहरते नहीं

नपास रखते हैं और एसे काम करणेवालेकों साधू नहीं समझते हैं इत्यादि अनेक व्यवहारोंसें अपणे साधुवेषकों शोभारहे है, इत्यादि गुणोंके विलाससें इस ग्रंथका नाम गुणविलास धरा गया है निश्चयसम्यक्ततो केवल बिगर कोन कह सकता है, लेकिन् अच्छा व्यवहार हमेस इस लोकपरलोक में लाभदायक है अढाई द्वीपके पनरे कर्म्म भूमी में रजोहरण पात्र और गुच्छके धारणेवाले जिनाज्ञामुजब पंचमहाव्रत पालणेवाले अठारे हजारशीलांग रथ धारणेवाले अखंड आचार चारित्र पालणेवाले एसें सर्व साधुओंकों सिरसें मनसें वंदन करताहूं, इस ग्रंथकों छपाते प्रथम ग्राहक बणकर–

(सहायता देणेवाले श्रीमंतोंके नाम)	रु०
श्रीयुत जोरावर मल हिम्मतमल माळू	५६।)
श्रीयुत अगरचंद भैरूंदान सेठी	७५॥।)
श्रीयुत चांदमलजी डागा	१८॥।)
श्रीयुत हस्तमल लिखमीचंद डागा	१८॥।)
श्रीयुत सतीदासजी तातेड	११।)
श्रीयुत शिवदासजी कावडिया	११।)
श्रीमान्सेठ पेमराज हजारीमल बांठियां	३००॥।)
श्रीयुत गणेशीलाल डालचंद माळू	१८॥।)
श्रीयुत लाभचंदजी श्रीमाल	१५॥।)
श्रीयुत अगरचंदजी पूगलिया	११।)
श्रीयुत मोहणलाल पूनमचंद गोलछा	१५॥)

[ये पुस्तक बिगरमूल्य बिकानेर पास भीनासरमें सेठ पेमराज हजारी मलकेपास मिलेगी, मूल्यसें विद्याशालामें–

अथानुक्रमणिका.



(जाहिर खबर.)

॥ श्रीजिनायनमः विद्याशाला, बीकानेर, राजपूताना, उपाध्याय श्रीरामलालजी गणिःकी तर्फसें इतने पुस्तक छपके प्रसिद्ध हुये हैं नगदी निछरावलसें मिलता है, परदेशी ग्राहकोंको । वी । पी । से भेजा जाताहै वैरंगपत्र नहीं लेंगें, जो परदेशी ग्राहक प्रथम पुस्तक । वी । पी । से मंगाकर फेर नहीं लेगा वह धोखावाज अपणे २ इष्टधर्मको गुनहगार वे मुख ठहरेगा पुष्ट चिकणे कागज भारतवर्षके नामी निर्णयसागर प्रेसके अक्षर शुद्ध छपाई मसहूरहै, महाराज उपाध्याय श्रीजीके जैनसिद्धातानुसार प्रबल उक्तियुक्तिकेभी अमृतरसके पानकरणाभिलाषी हमेस इन ग्रंथोंके रसिक बणरहे हैं पढ़िये २, लीजिये २, विलंब न कीजिये, सारतत्व देखके धन्यवाद दीजिये, लौकीकसें वाकवहोय अध्यात्मरस पीजिये—

(छपे हुये ग्रंथोंके नांम.)

॥ करुणाबत्तीसी दादासाहिबके गुणानुवाद प्रत्यक्ष दरसाव देणेका मंत्रयुक्त पूजा	।)
सिद्धमूर्ति भाग प्रथम	॥)
सिद्धमूर्ति भाग द्वितीय	॥।)
श्रावक लोकोंका रुजगारी ग्रंथ, धर्म, धन, राजनीति, अनेक दृष्टांतयुक्त	१)
६ षाणात्मका अर्थ, कार्य सिद्ध देखणेकूं शकुनावली, जीणा, मरणा, काल, सुकाल, जीत, हार, इत्यादि अनेक बात जांणनेकूं जैन स्वरोदय	॥।)
जिन पूजामहोदधी, इसमें ३७ गायन पूजा मंत्रयुक्त सर्वविधि	२।)
रत्नसागर नूतन, इसमें जैनधर्मशास्त्रोंका सर्व धर्म कर्त्तव्य, वड़ेस्तवन, छोटेस्तवन, निर्णयें, चो ढालिये, तपस्याविधि, १२ मासपर्व्वाधिकार, लावणी यों जैनधर्मबाटोंके रत्नमें मोज़ है	५)

वैद्य दीपक, ये ग्रंथ सबगृहस्थोंके रखणे योग्य है रोगपासभी नहीं आ सके एसे खानपानका वर्त्ताव धरा गयाहै, पढणेसें मालम होगा, तारीफ क्या लिखें, मनुष्य, स्त्री, बालक, जानवर, और सब तरेके जहरोंका इलाज, देशी, अंग्रेजी, होमियोपथी, और यूनानी, पथ्य, कुपथ्य, सब दवाशोधन, और बणाणेकी विधि, दयाधर्मवालोंके वास्तेही रचागयाहै, इसग्रंथमें सर्वज्ञधर्मका नमूना है; .... ५)

शकुनशास्त्र, श्रीजिनदत्तसूरि रचित इसमें शकुन चिडी, कउआ, कुत्ता, स्याल, हिरण, इत्यादि जानवरोंकी चेष्टासें आगे होणेवाला फल, सब मनुष्योंकी चेष्टासें शुभाशुभ फल, अंगफुरकणका फल, गिलेरी गिरणेका फल, मेघ कब होगा, काल होगा, या सुकाल, इस वर्षमें कोन वस्तु तेज रहेगी, कोनसी मंदी बिकेगी, मकान कराणे जमीनके धूलके रंगका शुभाशुभफल इत्यादि जाणनेको ये ग्रंथ साक्षात केवल ज्ञानीका भान दिखाती है .... ।।)

महाजनवंशमुक्तावली, इसमें सब ओसवालोंके अलग २ गोत्रोंकी उत्पत्ती महेश्वरी, अग्रवाल, श्रावगी, नरसिंघपुरे; गोरारे, हूंबड, पोरवाल श्रीमाल, उत्पत्ती दसावीसा होणेका बयान ८४ गछोत्पत्ती, श्रीभोजगउत्पत्ती, श्रावकोंका, आचार, विचार, शिक्षा .... १।।)

खरतर बृहद्गच्छका पंचप्रतिक्रमण अर्थयुक्त इसमें, सप्तस्मरण, भक्तामर, कल्याणमंदिर, छोटी शांति, बृहच्छांति, ऋषिमंडल, जिनपंजर, तिजयपहुत्त, दोसायहार, जगदूर, नवग्रह शांतिमंत्र तथा पूजाविधि, प्रतिक्रमण पांचोंकी करणेकी विधि, पोसहविधि इत्यादि सब अर्थयुक्त.... .... २)

(इन सब पुस्तकोंके मिलणेका ठिकाणा.)

॥ बीकानेर, मारवाड, उपाध्यायश्रीरामलालजीगणि:, विद्याशाला, मुंबई, बिचला भोईवाडा, श्रीचिंतामणिजीका मंदिर, वा। श्री- जीवणमलजीगणि:, वैद्यपास, नाटपेट पत्र नहीं लेंगें, ये पुस्तकें सब सरकारके ऐन मुजब रजीष्टर कराई हुयी है छापेगा सो सजा धार होगा, पुस्तक मंगाकर फेर लोटायगा वह अपणे इष्टधर्मसें हरामी फरेगा.

॥ स्वप्नसामुद्रक छप रहा है, इसमें स्वप्नेका फल, सामुद्रक, स्त्री, पुरुषोंके, शिरसें पैरतक, अच्छे और बुरे चिन्होंके सब फल प्रगट किया है भाषा कविता बंध है मूलग्रंथ रचयीता भद्रबाहु स्वामी है, छंद रचयिता। श्रीरामलालजीगणि: है, इसमें कामशास्त्रका कुलसार दरसाया है, ज्ञानीकों तो वैराग्यका मूल है, कामी पुरु- षोंकों कोक दरसेगा, ग्रंथनिर्दोष है, रचणेवाले मूल. सर्वज्ञवीत- रागकी वाणीके अनुसार है, किसीकों आरसी; किसीकों तवा सूझेगा, १

———

बावीस समुदाय.

॥ श्रीधर्मशीलसद्गुरुभ्यो नमः शाश्वतशाश्वत् सिद्धायतनस्थ सिद्धेभ्यो नमः इति मंगलं ॥

अथानेक पदानि लिख्यते ।

अथ चौवीस तीर्थंकरोंकी लावणी, चालपणिहारी, चौवीस जिन सब देव है, सुगतीके दाताः सदा मैं तेरा जस गानाजी, टेर, ऋषभ अजित महाराज, तिरणकी जिहाज बडी भारी, संभवकी वाणी सुखकारीजी, अभिनंदन गुणधार सुमनकी जाउं बलिहारी, पद्मप्रभुकी सुरत पियारीजी, उडावणी, जनममहोछवकरवाभणी, इंद्रादिक सहु आय, मेरुगिरिले जायके, मंगल कलस ढोलाय, नेकचार जो करणा है सो करके सब जाता, सदा मैं तेरा जस गानाजी, १, श्रीसुपारसनाथ जगत विख्यात प्रभुचंदा, सुविधि शीतल सुखकंदाजी, श्रेयांसवासुपुज्य, सेवा करता सुरनर इंदा, सेवकका काटो भवफंदाजी, उडावणी, देवलोकांतिक आयके, प्रतिबोध्या जिनराय, तारो तारो जगभणी, एहवा सबद सुणाय, तलक्षण प्रभु संजम लेकर तोडै जगनाता, सदामैं ते० २, विमल अनंत धरमनाथ सोलमा शांति जिन जाणो, जिनोंका ध्यान हिये आणोजी, कुंथुनाथ अरनाथ बहुगुणपात्र पिछाणो, पच्च इन्द्री कुमति ताणोजी, उडावणी, च्यार कर्मधन घातिया, कीनाछै जिन दूर तपजप करणी खपकरी. पाम्या ज्ञान पडूर, चार तीरथसो थाप आप

फिर करता कहलाता, सदा मे ने० ३, मल्लिमुनिसुव्रत थांसमा जाणां तुम भाई नेमी है सबकूं सुखदाईजी, रिठनेमी पारस प्रभुकी महमा हद काई वीरप्रभु सासन वरताईजी, उडावणी, अष्टकर्मदल चुरके, पोहच्या है निरवाण, अटल सुखों में जायके कीया आप असथांन, जनम मरणकी निरसफासमें फेरवो नहीं आना, सदामें ने० ४, चोवीसों महाराज रखो अब लाज आज म्हारी, सरणमे आयाहूं थांरीजी, प्रभुगुण अनंत पावै नहीं अंत सुणो पियारे, करतगुण इंद्रादिक हारेजी, उडावणी, कनीराम जिनद गुण गाया मन अति कोड, एक जिह्वा मेरे प्रभु, कांहा लग गाउं जोड अगम अगोचर तुम अविनासी पार कोण पाता सदा म तेरा जस गाताजी ५. इति पदं ॥

अथ सवइया धनासरी चालरा लिख्यते ।

चोथे आरे केरा वर्ष तीन साढी आठमहिना बाकी रह्या जदवीर मुगत पधार्‍या है पीछे जिन शासनमे मोटा मुनिराज थया आप तिर्‍या समारथी पणा जीवतार्‍या है, सम्वत अठारे पनरेके सालसेन सुदिनवम सुकवार दिननिह्नव निकाल्या है, ढेप करी देव गुरु धर्म तीनूं भेद करी खोटो मत झाल्यो सठा ज्यानें गुरुधार्‍या है, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नाम दीनो कृपा राम कहे खेवो पार दया पाल्यां है १, चोवीशमा महावीर देव ज्यांने चूका कहे ज्यांके नांमसेती माथो मुंडी मांग खावे है, गुरुजीनारथ दया देखी काढ्यो संसार थी ज्यांकी निंदाकर सठ जनम गमावे है, जीवके बचाये मांहे पाप कहे दशआठ

कां करा मेलीनें योधा लोकानें धेकावे है, देव गुरु धर्म तीन तीनांमें बतावे भिन्न सिद्ध पावडेमें कह्यो न्याय नर्क जावे है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो कृपाराम कहे दया पुन्यवांन पावे है, २, सात निह्नव आगे हुवा उवाईमें जिन कह्या आठमो निह्नव सिद्ध पायटियेमें चाल्यो है, वाणियेको सुन ग्राम कंटालेको वासी गुरु गीनारथ दया देखी दुखसुं निकाल्यो है, अविनीत हुवो गुरांकर दियो जुवो मोहकर्म उदय हुवो सठ खोठो मत झाल्यो है, चूका कहे देव सतगुरांमें बतावै दोप जीव बचायां पापकेवै बोले जिमसाल्यो है, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नांम दीनो कृपाराम दयाधर्म पुन्यवान झाल्यो है, ३, जीव दयासुधांमांहि ठाम ठकरी जिन जीवके बचायां पाप कठेही न जाणी है, दशमें अंगरे मांह ग्यांनी दीनो फुरमाय सब जीव दयाकाज कही जिनवाणी है, सूत्र आगम टीकाचूर्णीपयन्ना मांह जिहां तिहां जोवो जीवदयाही बखाणी है, दया रुचै कोई पुन्यवान रे घटमांह निह्नव कसाइ मांस खावे जिणां ताणी है, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नांम दीनो ज्ञानीका वचन सत्त हिरदेमें आणी है, ४, श्रेणक राजारे सुत हाथी भवदया पाली मृगरथराजा दयाकाज धार्‍यो मरणो, धर्मरुचि दयाधार करगया खेवो पार श्रेणक पडहो वजायो सुत्रांमें निरणो, नेमजिन दया पाली छोड दी राजुल नारी मेनारज दया पाली मेट दियो मरणो, तेवीसमां जिनराय तापसके पासे जाय जीवांने बचाय दियो नवकारको सरणो, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नांम दीनो जीवदया धर्म पालो जोथे चाहो निरणो, ५, आज्ञामें आलस मत करो जिन वैणसुणी

आज्ञा [illegible] न करे मनी कीजिये, आज्ञा तीन
प्रकार [illegible] ज्ञान सम्यक्त्व चारित्र चिरा
[illegible] मिथ्यात्वीरी
[illegible] आहार नणो इणकार
[illegible] उत्थापणा करली-
[illegible] नाम दीनो जो मूं
[illegible] निद्रव निकल इण
[illegible] राम मारो
[illegible] दीना कुमाग
[illegible] नहीं
[illegible] बहिरे अ-
[illegible] दर्ग जहर
[illegible] सवइया मथाणी
कीना [illegible] मांही
[illegible] अनुकहै
इत्यादिग्रन्थ [illegible] अनुन
[illegible] पुगम कर्यो
जावै श्रावकने [illegible]
मिनाका अनुन [illegible] नामाको कहीं-
जिन [illegible] सवइया मथाणी
कीनो [illegible] नाम दीना निद्रव [illegible] बाधार्थ बह-
कावे है ८ पडिमा धारी श्रावकने दान दियां पाप कहै
किसो पाप हुवे कहो निद्रयान करणा मौन करणा मौन
जोग ताप गांवा त्याग हुवा जिनरी वस्तारो पडिमानें
मांगलेवणो. निद्रव कपट करी बोरा आगे इम कहे,
साधुके जो आहार वधे वाकि कर्यो नहीं देवणो, कल्प
कुंभोग निर्ग्रन्थोंका लेवे देवें नहीं कपट करी कहे सट

किनरोक रैयणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो पारख्यातो करो यहतेलारे नहीं यैवणो, ९, श्रावकरे तीन करण तीन जोग त्याग हुवा भगवती सूत्र मांहे वीरजी वतायो है, अंबडजी श्रावकरा सातसेही शिष्य लारे तीन करण तीन जोग पाप वोसरायो है, श्रावकने दशाश्रुतस्कंधमें श्रमण भून कह्यो उवाईमें जिन सुसाहु बुलायो है, ज्ञाताजी सुधर्मांह ज्ञानी दीयो फुरमाय श्रावकनी समाव्रत श्रावक नांम पायो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो श्रावकने जहर घटको कहणो कठै आयो है, १०, कवाड देहेडी जिणमांहे नहीं साधपणो उत्तराध्ययन अध्ययन पैंनीसमों वतावेहै, जिहां नहीं कवाड देहेडी एहवो नाम जिहां मनोहर इत्यादिक रह्यां दोष थावे है, वृहद्कल्पमांहे रहणो साधुनें अभंग दुवार आर ज्यांनें रहणो जठै पडदो घंघावे है, गोचरीकी पटीकरो नामले निषेधे ज्यांने कहणो गोचरीमें साधु आर ज्यांजी जावे है, सवइयो सवायो कीनो घनासीरी नाम दीनो कवाड निषेधी घटा कयाटगा जमावे है, ११ भगवती सतक पनरमें फेरोनाम लेई चोवीसमा महावीर ज्यांनें चूका केवे है, अणुकंपा करी जिन आपरो बचायो शिक्ष अछता ओगण बोली माथे आल देवे है, समणासमणी कोई नदीमांहे बहता हुवै आज्ञानें उल्लंघ साधु आप काढलेवै है, अनुकंपा कीजे जिनपारको मिटायो दुःख उत्तराध्ययन अध्ययन पनरमे जेवेहै, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो ज्यांको गेवो पार जिन वचनामें रेवे है, १२, कालादिक वारकरो मरण बतायो वीर सोमल मरण जिननेमजी बतायो है, निलछेडमांहे निल वीर जीवनायो अर मरण गोसालेकेरो वीर-

जीजनायो है. दवारकारो दाह नेम जिणभाख्योमें सुख ना-
गश्रीगिरहोला लिख्या ज्ञानामांही आयोह. महाशतक श्रावक
रेवतीको मर्ण कह्यो गौतमजी मर्की जिन प्रायच्छित्त दि-
रायो है. सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो आगम
विहारी देख्यो जिम फुरमायो है १३. पुन्यपाप आज्ञामें नहीं
आज्ञा बार नहीं कद बारे कीयो नेरे कुचारमें युं गावै है,
मनमें तो श्रधा एम लोका आग कहै कम आज्ञा माहे पुन्य
आज्ञा बाहिर पाप थावै है. उवाई सुत्रमाहि ज्ञानी दीनो
फुरमाय आज्ञा बाहिर पुन्यथ र देवनामें जावे है. गोसा-
लाजमाली जाण तापसादि तज प्राण देव हुवै आराधक
पद नहीं पावे है. सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम
दीनो आज्ञाका आराधक सुख सुगतीको पावे है, १४,
साधु आर ज्यारे महाव्रत नववाड माहे ओछे अधकेरो
पाठ कठेही न आयो है. आर ज्याने पहलो व्रत भांग
चोथो राखणेको वीतराग देव ऐसो धर्म न बनायो है,
आर ज्याने कवाड देवण खोलणेको नाम साधुविना
न्यारो सठ मुंडसु उठायो है. कवाड देवण खोलणेको
नांम आयो जठे साधु आर ज्यारो पाठ भेलोइ बोलायो
है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नाम दीनो बृहत्क-
ल्पमें आर ज्याने पडदो बंधायो है, १५, थाप दाप लगावै
जिणांमें नहीं साधपणो कपटसुं बोले सठ ज्यांनें इम
केवणो, आडंबरकाज इणभात पचक्खाण देवै दरशन-
विनाधे आश्रव नहीं सेवणो, केई गांम जावै इम सोगन
करावै दुपचक्खाण उपदेश साधूनें नहीं देवणो, दरशण
आवै केई आरंभ करावै आप भाव नाही भावै यूं साधूनें
नहीं लेवणो, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो
पारक्षातो करो वहतेलारे नहीं वेवणो, १६, रायप्रसेणीमें

परदेशी राजा मुनीपासे समझ्यांनें व्रत लिया पीछे दान दियो है. आरंभसहित दानादिक प्रश्न पूछे सुयगडांग मांहे मुनिराज मून लीयोहै, दशमें अंगमें दान देवणो निषेधे जेनें वीनरागदेव झूठा बोलो चोर कयो है, दान-दया सुत्रांमांहि ठांम २ कही जिन दांन दया निषेधे जिणा-को फूटो हीयो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो दांन दया रसकेइ पुन्यवांन पीयो है; १७, केसी समणनें चित्र प्रधान कह्यो परदेशी धर्म सुण्यां घणीदया पालसी, समणभिक्षारी सुख इंडकर घोडो लेसी दोपद चोपद घणां जीयानें उधारसी, आगम विहारी चित्र परधान सेनी कह्यो जाके हाथे धर्म आवे चार बोल धा-रसो, उपावसुं राजानें प्रधान लायो मुनिपासे वाणी सुणी राजा जांण्यो येही गुरु तारसी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो राजनें असार जांण्यो देखी ज्ञान आरसी, १८, अनंत चौवीसी सब दांन दे संजम लीयो देवे देसी अनंती चौवीसी जिम कयो है, दांन दियो वीर ज्यांनें परीसह ऊपना कहे सठ ज्यांनें कहणो दांन मल्लि जिन दियो है, पहर छदमस्थ रही केवल ज्ञान लही आठूंही करम दही शिवसुख लीयो है, षवद प्रकार दांन पही लाभ कयो जिन नवभांन पुन्य न्यारो समुचयमें रयो है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो निह्नव गा-दर जेम भइयेलारे भइयो है,१९,पालकनी पोली पोल यांरी सुद नहीं जिम निह्नवनें वेस्या भांड तीनूं लज्यार हितरे भांड बोले विकल वेस्याके नहीं शील शर्म निह्नव कहे धूकादेव गुरुमांहि केहत्तरे, चोरादिक सुतनें सीखावे चोरी तरवानो जिम निह्नवाके दयारहित याण देतरे, मूंजीपणो कपटपन दयारहित हुवे कुसंग निह्नवाको

[illegible] मनड्यो मनायो कीनो
[illegible] नाम [illegible] नहीं सूझै से-
[illegible] सामराई आ-
[illegible] निकलणां कोई काढेयांने
[illegible] निकाल पछे उनोंको
[illegible] इत्यादि थारमें
[illegible] माहे कलह मि-
[illegible] कह्या भगवतीमें
[illegible] नाम दीनो
[illegible] कपट करीनें
[illegible] बनाये
[illegible] हाडांदिक
[illegible] इसे संजम
[illegible] है, कोई
[illegible] बनावे।
[illegible] दीना पनासरी
नाम दीना [illegible] कारण है, २५,
[illegible] कह्या उग-
[illegible] आहार कार-
[illegible] दूजे
[illegible] आति-
[illegible] सूत्र [illegible], पर्य-
[illegible] माहे कह्या जिनमुख आहारादिक उद्गम
आदि [illegible] आणिया मनड्यो मनायो कीना पनासरी
नाम दीनो [illegible] जिनमुख माणिये, २३,
दूजे [illegible] अज्ञानीको अशुद्ध
ज्ञानीको शुद्ध भाणियो, [illegible] माहे दी-

कायाते पुन्यबंध कयो निर्जराको नहीं दाग्वियो, सुयगडांगमें कयो मिथ्या वार माम २ संसारमें रुले कपटाईमलय राग्वियो, निहूव कपटकर पोथां आगे इम कहे मिथ्यात्वी आज्ञाके बारे करणीमें नाग्वियो, सवइयो सवायो कीनो घनाक्षरी नाम दीनो मिथ्यात्वी मिथ्यात एक अनुयो गद्वारमाग्वियो २४ सुत्रसिद्धांतसार चाहदिरदेमें धार निन्हवांको मत जाणो झूठरूपठाई है, छोडनिन्हवांको संग ज्ञानरूप लागो रंग दयादान रुचि जांकी घटीही पुन्याई है, गुरुगीनारथ भेटी मिथ्यामतदियो मेटी क्षमाका सागर गुरुभेट्या सुखदाई है, छनीकद्धिछिटकाय संजमसुं मनलाय गुणाग्रगनमुनि घडा गुरुभाई है, सवइयो सवायोकीनो घनाक्षरी नाम दीनो कृपाराम दयाधान कीरत सवाई है २५. उगणीसे साल पत्तीस सवइया कीना छवीसा सुणसमीकीजोरीस हिरदेमें धारजो, चार घोले नरके जाय कयो ठाणा अंगमांय ओरही सिद्धांत सुणहिरदे विचारजो, जीवके बचायामांही ज्ञानी पाप कयो नांहीं अज्ञानीके वचनांनें दूराई नियारजो, अनंते चौबीसे जिन धर्म कयो भिन भिन इम नहीं कयो मनजीवांने उबार जो, सवइयो सवायो कीनो घनाक्षरी नांम दीनो कृपाराम कहे जीव दया नित्त पाल जो २६.

अथ कुंडलिया लिख्यते ।

गृहस्थीके घर मायनें, पैठणवर ज्यो वीर, कायलोग छुंकदा, थवे पासकी सीर १ थवे पासकी सीर, मूढ [illegible] सुंभाल्यो, दसमी काल अध्ययन, छेहेनें जिनवर [illegible] सुदसंजम आराधनां, पहुंचे भवजलतीर, गृहस्थीके [illegible]

माथमें. वैठणावर ज्यो वीर ? जरा रोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर. निण कारण वैठणतणी. आज्ञादी महावीर ? आज्ञादी महावीर, माननजसूत्र देखो; विनकारण नहीं कह्यो. वैठणो सूत्रपेखो. महावावीसे जिनतणा, कल्पानीनगुण धीर. जरारोग तपस्या करी, दुरबल थयो शरीर. निण कारण वैठण तणी. आज्ञादी माहावीर २ निन्हवकार्दी भावना, वोलायांने आय. नोथा झोली पालरा, लारे चाल्या जाय ३ लारे चाल्या जाय, पठ दो नारी ऊठी पछयांक है निरदोष. कपटम बोले झठी. रमनारा गृद्धीधका. जिहां लावे जिहां ल्याय. निह्नवकार्दी भावना, बोलायांने आय ३ दोषवतावेपारका. पोले घोर अंधार, रागानसपेनो ढींगल. चिश्राम यहोन प्रकार ? चिश्राम यहोन प्रकार. थाप वोघाभर मावे. पछयां नहीं देजुआय, नहीं सिद्धांत बतावे, बोघागुर चेला मिल्या, नहीं पूछे निरधार, दोष बतावे पारका. पोले घोर अंधार ४ गृहस्थीके घर जायनें. निह्नवकथा सुणाय. वृहत्कल्पमें वरजियो, नीजे उद्देशामांय ? नीजे उद्देसेमांह, एक गाथाको भाख्यो. उहां नहीं विस्तार, वोही कारण सुंदाख्यो, कथा भट ज्युं मांडीयो. नहीं सूत्रको न्याय. वडे घरांमे जायनें, निह्नव कथा सुणाय ५ निह्नव महामत्यां कन्हे, वैठी राखे पास, उत्तराध्ययनमे जिन कह्यो, होवे शील विनाश १ होवे शील विनाश, लोकमें अपजस थावे. विनभायां वह पास, राखतांलाजन आवे, बोधा गुरुचेला मिल्या, नहीं पूछनें श्रास, निह्नव केवे महासत्यां, वैठी राखे पास ६ जिनकल्पीनें परजिपा, चार बोल जिन आप, निह्नव तीन छिपायनें, देवे थाट उथाप, १ देवे थाट उथाप कपट बोघाभरमावे, समझ्या करे पिछान, अजाण्या

गोता खावै, निहव करता कपटसूं, एक बोल उत्थाप, [illegible]
कल्पीनें वरजिया, चार बोल जिन आप, ७ जंगलमैं [illegible]
आतापना, नहीं समणी आचार, उपासरेमें रैवणो, कप[illegible]
बांधी बार १ कपडो बांधी बार, वृहत्कल्पमें आयो, [illegible]
वमें उद्देसेमांहि, श्रीमुख आपवतायो, कवाड जडवोन[illegible]
कह्यो, लोहिरदेमें धार, आर ज्यांने रहवणो, कपडो बांध[illegible]
बार ८ महासत्यांनांम धरायनें, संजाय पटली देव, दो[illegible]
झोल्यां ले हाथमें, घव २ करती बेव १ घव २ करती बेव[illegible]
सीखले भेला जावै, साधुखांगवणाय, जिणांको लायो
खावै, व्यवहार सूत्रमें वरजियो, विनकारण नहीं लेव
महासत्यां नांम धरायनें, संजाय पटली देव ९, निहवाकूं
पहुंचायवा, गृहस्थी जावै लार, आगे जाय खारी करै
भोजन बहोत प्रकार १ भोजन बहोन प्रकार, खारकर
भावना भावै, बोलावानें जाय, तुरन पानर ले आवै, रस-
नारा गृद्धिथका, जिहां लावै जिहां खाय, निहवाकूं पोहचा
वया, गृहस्थी लारे जाय १०.

भट्टारक श्रामरकहै, जती खमासण बोल, निहव कै वै
भावना, ये तीनूं समतोल १ ये तीनूं समतोल, बुलायां
तीनूं जावै, निहव साथ फेवाय, सांग लेई भेव लजावै
बोबागुरुचेला मिल्या, नहीं आचारको तोल, भट्टारक
श्रामरक है, जतीखमासण बोल ११ गोसालांनें दिखियां
अन्यमत वध्या अनेक, जमालीनें वयूं दियो, ज्ञानी प्रत्यक्ष
देख १ ज्ञानी प्रत्यक्ष देख, तिलांको छोडवतायो, बो-
धानें इम कहै, इणमें स्यो गुणधायो, जिन सोमल श्रामण
तणो, मरणो कह्यो विशेष, जो जो कारण जिन कह्या
आगम ज्ञानी देख १२ आहार देवै भावसुं, थांनें पासे
आण, रजी आदिक देखनें, देवै फूंक अजाण १ देवै फूंक [illegible]

गोता गावें, निह्नव करता कदाग्रहं, एक बोल उत्थाप, जिन वर्चानें वरजिया, चार बोल जिन आप, ७ संगमवें है आसातना, नहीं मरणी आचार, उपासगदमें देखणो, कपडो चोंपी चार १ कपडो पांचो चार, वृहत्कल्पमें आयो, पां-चमें उद्देसमांहि. श्रीगुरु आपघमागो, कपाट उघाडनो कहो, पोंहिरदेमें धार, आर ज्यानें रहणो, कपडो पांची धार ८ महासत्यांनाम धरायनें, संजाय पदवी देय, दो सोल्यां है हाथमें, धव २ करनी येव १ धव २ करनी येव चीनले भेला जावे, साधुस्यांगयणाय, जिणांको त्यागो त्यायें, व्यवहार सूत्रमें वरजियो, विनकारण नहीं लेय महासत्यां नांम धरायनें, संजाय पदवी देय ९, निहुवारूं पहूंचायवा, गृहस्थी जावे लार, आगे जाय त्यारी करें भोजन बहोत प्रकार १ भोजन बहोत प्रकार, त्यारपत भावना भावें. पोसापानें जाय, तुरत पाचर ले आवें, रस-नारा गृद्धियका, जिहां त्यावें जिहां त्याय, निहुवारूं पोहचा वया, गृहस्थी लार जाय १०.

भट्टारक श्रामरपहें, उभी क्षमासमण बोल, निह्नव फेर धें भावना, ये तीनूं समतोल १ ये तीनूं समतोल, पुलायां तीनूं जावें, निह्नव साध केवाय, सांग लेई भेष लजावें बोघागुरुयेंला मिल्या, नहीं आचारको तोल, भट्टारक श्रामरक हैं, उभी क्षमासमण बोल ११ गोसालानें दिखियां अन्यमत घण्या अनेक, जमालीनें कयूं दियो, ज्ञानी प्रत्यक्ष देख १ ज्ञानी प्रत्यक्ष देख, तिन्हांको छोडयतायो, मो-घानें इम कहै, इणांमें स्यो गुणपायो, जिन सोमल ब्राह्मण तणो, मरणो कह्यो विशेष, जो जो कारण जिन कह्या आगम ज्ञानी देख १२ आहार देवें भावसुं, थांनें पाप आय, रजी आदिक देखनें, देवें फूंक अजाण १ देवें फूंक अ-

थनो घरनणो, खोली देखो चीत, लेख करावै हाजरी, थानो कूडी रीन १ आनो कूडी रीन, केम परतीत न आवै जो होवै परतीन, निस्त क्यूं लेख करावै, आगे जिनकीधी नहीं, नहीं थताई रीन, करे जायनो घरतणो, खोली देखो चीन १९ आधाकर्मी आहारको, परतिख दीसे दोख, हीयाफूट भेला हुवै, पूजे थोथा लोक १ पूजै थोथा लोक, छिपे एतीनहीं आणे, निरदोषण जल आहार, किणीतरे लेतो जाणे, मीठो पाणी राखनो, आहारादिकदे लोक, आधाकर्मी आहारको, परतक्ष दीपै दोप २० थोथानें भरमायवा, निह्नव मांडी जार, कह कोडी कह कांकरा, पाटी रींगटकार १ पाटी रींगटकार, लेख ऊंधाहीं बचावै, जो देखणनें जाय, रागरंग करीं रींझावै, अण समझ्यो भरमी पडै, समझू करे विचार, थोथानें भरमायवा, निह्नव मांडी जार २१ विन कारण नहीं सुषपणो, निग्रंथी साथ विहार, तुच्छपलेवण नहीं राखणो, नहीं उद्देसादिक आहार १ नहीं उद्देसादिक आहार, भलोकर मूंडोगेरे दोय घडी दिन रहयां, उचारादिकनें पडिलेरे, साथ आर ज्यां साथ रहे, नहीं निशीत अधिकार, विन कारण नहीं सुषपणो, निग्रंथी साथ विहार २२.

नित लावै जो एकण घरसें, यारामें एक आहारजी, दशमीकालिकनी जेमें कह्यो, साधु नहीं अणाचारजी १ गाथा १०, श्री वीरजिनंद अनुकंपा कीधी, फोरी लब्धिगो सालो बचायो, छ लेश्या छद्मस्थके होती, मोहकर्म वस रागज आयो १, जीव उठाय छांयां मेले तो, जाय महाव्रत पांचूही भागी, या गाथा १९ मी बोल ४९ मां, यहा मन जिमायां तमतमा पोहचावै साख उत्ताध्ययन १४ में संजतीरी वेयावच लागियां अणुकंपा साध करे ३, पहला

है टूपा फालीधारजी. २९, निशीथ उद्देसे शारमांमें चीर भांगा चार फला साधु ओर आर ज्यांनें भेला नहीं रैवणो, व्यवहार उद्देसे पांचमांमें साधु एतांमुनिः आर ज्यांवैः पासवचन प्रायश्चित्त नहीं लेयणो, निशीथ उद्देसे चोथे साधु संज्ञा कियांविना आरज्यांरे उपासरे प्रवेशन कैवणो, साधु आर ज्यांनें एक उपासरे आहारादिकमनें बृहत्कल्पमें उद्देसे तीजे फैवणो, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो कारणनुं आहारादिक लेयणो मदेवणो, ३०, निहच कपट कर चोथानें पताये पाठ साधु आर ज्यांनें भेलो भोगणोनें रैवणो, व्यवहार उद्देसे सातमांमें एमो पाठ नांही दीसै फटे किम चोलो पाठ देखावेयूं कैवणो, उत्तराध्ययन सोलमें अध्ययन तीजी याटमां है स्त्री पैठे घटी दोय जिहां नहीं टैवणो, उत्तराध्ययन निशीथ व्यवहार बृहत्कल्प आदि स्त्रीको परचो परज्यो पाठ देख लेवणो, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो स्त्रीको फर फरसे ज्यांनें टंडकाई कैवणो ३१ अचित्त द्रव्यादिक सेती कोई पुन्यवांन आप आपको मो पाप टारे दूजाको टरायो है, अशुभ योग आश्रयमांहि लियो कह्यो शुभयोग संवरमें इमें किस्यो पापो है, सनत कुमार तीजे देव लोक ऋद्धि पाई चारोंही तीरथनें सुख शाता उपजायो है, नेमजिन बागमें विराज्या तिण अवसर किसन साहायदे संजमदिरायो है, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो ज्ञाता अंतगडमांहे एमो पाठ आयो है ३२, अनुकंपा निरवद्य सावद्य कहीनें सठ पोथलांके घट घोचो झूठोही फसायो है, अनुकंपा निरवद्य सावद्य दुधांधी सठ धरमदलालीमांहे तिण फेर धायो है, नंदिषेण उपदेश देइनें दिक्षादिराई

चित्र परदेशी केशी स्वांमि समझायो है. कोई सुख जयणा करी मारग बनायो शुद्ध कोई अजयणासुं मारग दिखायो है. सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो मारग सावद्य निरवद्य किम थायो है ३३. भगवती स-तक सोलमें उद्देसे छठामांहे रत्नांकी माला जोडा देख्यो जगनाथजी.चोथा सुपनारेमांहे छोटी वडी कही नहीं झूठी हालां जोट सठ चोथाने वकानजी. समकित र-तन आवश्यकमें जिन कह्यो सम्यक रत्न ज्ञाता सूत्रमांहे वानजी. सम्यक रत्न ने छोटे धर्म सम कह्या रतन-रतनाको जो वहोन पचपानजी. सवइयो सवायो कीनो धनासरी नाम दीनो समकित पायां निश्चे सुगतीमें जा-नजी ३४ अन्नपस्त्रादिक दियां अन्न सेवाई कहे अन्न तो दीधी लीधी आवे नहीं पारखी. निह्नवांके श्रद्धाएम अन्न अरूपी जीव लावे देवे पुद्गलरूपी वाल ये विचा-रकी. भगवती शतक पहले उद्देसे नवमेंमें कह्यो अन्न-तकी क्रिया श्रेणी राजाके मारखी. चोगादिक चित्त भ्रष्टो आकुल व्याकुल थयो थोडी क्रिया लाधां या है वाणी अणगारकी, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो पारखानो करो सठ खबर न पारकी, ३५, मूल दृष्टांत कुण आत्मा जीव अरूपी निरवद्य भाव द्रव्य गुण पर्यायी है, इत्यादि अज्ञान ज्ञान तलावनेमें कियो हिसाव निह्नवाकी आसुणो कपटाई है, मूल नव नांम कहेय दूजो दृष्टांत देय आश्रयजीव एक जुगल मिलाई है, तलावनें नालो एक उत्तर यूं देणो देव पुद्गल तलाव नालो एक कहवाई है, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो यूं नांम हवेलीको उत्तर देखाई है ३६ तीन करण तीन योग अठारे पापरा त्याग किया वर्णना गिणती भ-

भगवतीमें जाणीयो, तीन करण तीन योग अठार पापना त्याग किया अंबडजीका चेला उवाई पिछाणीयो, तीन करण तीन योग अठार पापना त्यागकिया आनंदादि श्रावक उपासक दसा आणीयो, तीन करण तीन योग अठारा पापना त्याग किया संन्यादिक भगवती मांहि जिनवाणीयो, मधइयो सयाणो कीनो धनासरी नांम दीनो श्रमणी किरो दृष्टांतेज पचमाणीयो, १७, श्रावकने भाणो पीलो कपडो आदि सर्वांनें अव्रतमें गिणे ज्यांनें इस भांत वंदणो, सम्यग्ज्ञाणादियांगाय अप्रोजाणमैं मेंघाय तीजो मांहे जिनसाधूनें पगांसेंघणो, कोइमोआगेंछाने कोइपाछीछाने इत्यादिपायकपोथानेंकल्पनहींरिघणो, भगवतीसतकआरमें उद्देसेपांचमामें पापनेंघोळरनी कह्यो पाठदेखघणो, मधइयो सयाणो कीनो धनासरी नांम दीनो पारस्यानोकरो धरमेत्यारे नहीं घंघणो १८ भगवती सतकवीसमें उद्देसे आठमांमें श्रावकनें तीरथमें लीनोयाजिनवाणी है, पालमजी श्रावकनें महात्मा कह्या जिन नीश्रकह्या उत्राध्ययन इकीसमें जांणीहै, धम्मिया धम्माणुया धर्मइष्ट आद देई सुसीला सुव्वयागुण उवाई पिछाणीहै, सुयगडांगमांहे धर्माधर्म पक्ष दोय लीहां धर्मपक्षमांहे साधुश्रावक दो आणीहै, मधइयो सयाणो कीनो धनासरी नांम दीनो साधुनें श्रावकगुणरत्नांसुंघ्याणीहै, १९, दशवैकालिक छठे अध्ययन आठमी गाथा अठारे थानक जुदा जुदा किया जाणजी, सोलमाथानकमांहे गृहस्थी घर बैठे साधु अनाचार मिथ्यात अव्रत प्राणहाणजी, आधाकर्मी दोष थाय जाचकादी अंतराय क्रोधपडे अपटी कुशीलपनहाणजी, इत्यादिक दोष घणा बैठा कह्या तीनजगा मधमी जरालें रोगादी इसुर ठाणजी, मधइयो

सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो दशमीकालिक देखो तजपगताणजी ४० बृहत्कल्प कह्यो तीजे उद्देसे अंतर घरमांहि सतरे बोलकरणा वीतराग पालीया, अंतर घरको खोटो अर्थ करीनें निहुव सठ रसोडादिक घरकह बोधानें बहकालिया, अंतरघरमें तपसीनें जरारोगी यानें सतरे बोल करणा कह्या ईमें आगेचालीया, दशमीकालिक सुयगडांगवृहत्कल्प ओर सुत्रांमें बरज्यो पिणदेखे नहींवालीया, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो अज्ञानमें खूताजिणां अज्ञानी सरणालिया, ४१ छठे गुणठाणे मनपर जब कषाय कुशील छद्मस्थ रागसहित करी चूका केवैहै, चारित्रनियंठायोग हेतु आदिकेनापावे भयकेनाकरे संसारमें केना रैवैहै, लारे पांचे तेतो भगवंतमें बतावो सब इम पूछयां मूढ सफा जुवाब नहीं देवैहै, भगवंत जीवदया ऊपरें अध्ययन देख परिक्षातो करे नांही बहतांलारेवैवैहै, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो कल्पातीत जिनकी बराबरी लेवैहै ४२ जानु परिमांणे नदी उतरे धर्म कहै पाणी संघटासुं आहार देखी टल जावे है, कमाड निखेधी अने किवाडिया जडावैसठ जिनकै उपर एसी कुजुगत मिलावे है, लडकी बापकी केई गर्भवंतीको नामलेय षट्मासवर्ष्यां उथ्यां वैठां दोषथावैहै, इमकहे ज्यांनें केणो याको परमाण किसो किवाड किमाडी केना हाथको कहवावे है, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो निन्हवकपटकरी बोधानें बहका वैहै ४३ इसाभद्र श्रावकानें श्रावकां वंदनाकीनी भगवंत अश्यर जिन नहीं पालिया, पोष्कलीजी संखजीरी हवेलीमें आया जिहां उपलाजी वंदना कीनी आसणादि दियालिया, संखजीनें पुष्कलीजी पोसामांह वंदनाकीनी कह्यो चालो

आहार करो संखजी नहीं हालिया, भगवतीमें यहुभाव ज्ञानी दिया फुर भाव वंदना करी लियां पछे अपराध खमालिया, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नाम दीनो अंयडने सिष्यां वंदनाकीनी उवाईमें चालिया ४४ उत्तराध्ययन अध्ययन छावीसमें छकारणसुं आहार करणो कह्यो नाम न्यारा २ धारजी, वेदना वेयावच पैल इर ज्यांने संजमठायें जीतवनें अर्थ छठी धर्मनो विस्तारजी छकारण छोडणा यतायो वीतराग देव ज्यांरा न्यारा २ नांम करल उचारजी, रोगनें परीषह जीवदया ब्रह्मचर्य अर्थ तपहेत शरीरत्याग कर दे संथारजी, सवइयो सवायो कीनो धनासरी नांम दीनो खाणेमें धर्म होतो क्यों तजे अणगारजी ४५ इति ऋषि कृपारामजीकृत सवइया संपूर्णम् ॥

अथ भावनाविलास लिख्यते ।

प्रणमी चरण युग पासजिनराज जूके विघनके चूरण पूरण है आसके, दृढ दिलमांझि ध्यानधर श्रुत देवताको सेवेनें संपूरत है मनोरथ दासके, ज्ञान दगदाता गुरु बडे उपगारी मेरे दिन कर जैसे दीपे ज्ञान परकासके, इनके प्रशाद कविराज सदासुख साज सवीए यनावत है भावना विलासके १ प्रथम द्वादश भावना नामानि, प्रथम अनित्य भाव दूजो असरण पुन तीजो है संसार चोथो एकत्व अर्थत है, अन्य भाव पांचमो अशुचि भाव छठो जांनि सातमो आश्रवसुनि महाहुर दंत है, आठमो संयर भाव निर्जरा है नवमो सुदशमो है धर्मभाव मानत महंत है, लोकको स्वरूप राज इग्यारमो भाव पुन

मथायो कीनो धनासरी नांम दीनो दशमीकालिक देगो गजसुकमालजी ४० वृहत्कल्प कह्यो तीजे उद्देसे अंतर घरमांहि समरे थोलकरणा वीतराग पालीया, अंतर घरको गोटो अर्थ करीनें निह्नव मठ स्मोडादिक घरकह पोयांनें पटकालिया, अंतरघरमें तपसीनें जरारोगी थांने सतरे थोल करणा कह्या ईमें आगेचालीया, दशमीकालिक सुयगडांगवृहत्कल्प ओर सुत्रांमें घरज्यो पिणदेखे नहींचालीया, सयइयो सयागो कीनो धनासरी नांम दीनो अज्ञानमें सूत्रानिगां अज्ञानी मरणालिया, ४१ छठे गुणठाणे मनपर जय कषाय कुशील छद्मस्थ रागसहित करी चूका कैयेहै, चारित्रनिर्पंदायोग हेतु आदिककेनापावे भयकेलाकरे संसारमें केता रैयेहै, त्यारे पांचे तेतो भगवंतमें थनायो सय इस पूछयां मूढ सफा जुवाय नहीं देवेहै, भगवंत जीवदया ऊपरें अध्ययन देव परिक्षानो करे नांही पडमांल्यारेवैवैहै, सयडयो सयागो कीनो धनासरी नांम दीनो कल्पार्थीन जिनकी बराबरी लैवेहै ४२ जानु परिमांणे नदी उतरे धर्म कहै पाणी संघट्टासुं आहार देनी टल जावे है, कमाड निम्बेनी अने खिचाडिया जडायेमठ जिनके उपर एसी कुजुगत मिलावे है, लडकी वापरी केई गरुमेवंतीको नामलेय पद्मागवणां उण्यां येठां दोषपावैहै, इमकहे ज्यांनें केणो पाको परमाण किमो किवाड किमाडी केना हाथको कह्यावे है, सयडयो सयागो कीनो धनासरी नांम दीनो निन्हवकपटकरी पोयानें पहका थैहै ४३ इमासद श्रावकानें श्रावकां वंदनाकीनी भगवंत अरहन्त जिन नहीं पालिया, पोल्करीनी संग्रजीर्ण दृयेर्मीमें आया जिहां उपलाजी वंदना कीनी आमणादि दियालिया, संग्रजीनें पुष्कलीजी पोसामांहे वंदनाकीनी कह्यां चालों

आहार करो संखजी नहीं टालिया, भगवतीमें बहुभाव ज्ञानी दिया फुर भाव वंदना करी लियां पछे अपराध खमालिया, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो अंबडने सिष्यां वंदनाकीनी उवाईमें घालिया ४४ उत्तराध्ययन अध्ययन छावीसमें छकारणसुं आहार करणो कह्यो नाम न्यारा २ धारजी, वेदना वेयावच चैत्य इर ज्यांने संजमठापे जीतवनें अर्थ छठी धर्मनो विस्तारजी छकारण छोडणा बतायो वीतराग देव ज्यांरा न्यारा २ नांम करत उचारजी, रोगनें परीषह जीवदया ब्रह्मचर्य अर्थ तपहेत शरीरत्याग कर दे संथारजी, सवइयो सवायो कीनो घनासरी नांम दीनो ग्याणेमें धर्म होतो क्यों तजे अणगारजी ४५ इति ऋषि कृपारामजीकृत सवइया संपूर्णम् ॥

अथ भावनाविलास लिख्यते ।

प्रणमी चरण युग पासजिनराज जूके विघनके चूरण पूरण हैं आसके, दृढ दिलमांहि ध्यांनधर श्रुत देवताको सेवेतें संपूरत हैं मनोरथ दासके, ज्ञान दृगदाता गुरु बडे उपगारी मेरे दिन कर जैसे दीपे ज्ञान परकासके, इनके प्रशाद कविराज सदासुख साज सर्वोए बनावत हैं भावना विलासके १ प्रथम द्वादश भावना नामानि, प्रथम अनित्य भाव दूजो असरण पुन तीजो है संसार चोथो एकत्व अत्यंत हैं, अन्य भाव पांचमो अशुचि भाव छठो जांनि सातमो आश्रवसुनि महादुर दंत है, आठमो संवर भाव निर्जरा है नवमो दुदशमो है धर्मभाव मानत महंत हैं, लोकको स्वरूप राज इग्यारमो भाव पुन

योनि दुर्लभ आन याग्या मनन है २, अथ प्रथम अनित्य भावना कथन ॥ [illegible] निवक पुद्गल मग्नी, उत्पत्ति विपत्ति [illegible] [illegible] नवन निव, अनित्य पद्दै जैन मत मर्म [illegible] मा कहिवार्य कलि यांर [illegible] कृमलाई है, [illegible] अनुप अनि [illegible] [illegible] आमकी कर्णामी [illegible] [illegible] शनाणाम [illegible] अड़ रह निश्चे समाइ है [illegible] [illegible] भस अगावान थ्या [illegible] आप यम कीन [illegible] आगम समुद्र [illegible] धाना नहं [illegible] नाहीं रहै कोनवान [illegible] ताप गद देशगाम [illegible] मांचे त्र विज्ञापन [illegible] कुटुंबको परिवार [illegible] आयन कहूत [illegible] आप [illegible], देखन हमारे आग [illegible] ऐसे मल्कके देखत, २ अथ दूसरा असरण भावना कथन, । चौपाई । जीवद्रव्य पुद्गल रचा, आउ कर्मथिति जबलौं सचा, थिति पूरण भये कहिये मरणा याहित कोईनांही है सरणा १ सवइया ३१, मंत्र तंत्र पथ [illegible] यरीहे रहत यहीं घरी कहो होत न वधा [illegible] प्राणको, दौडधाय औषध उपाय बहुत भयेनांहि होत [illegible] ——य जाम पेन्यो यममानको, सुनहीने देखतही [illegible]

खगकुल पडत अचिल्यो आय दाव ज्यों सींचानको, छार सब आर जार राजमाया मोहजार अंतकाल सरण भजन भगवानको, ८ पवनके पूतसे प्रमूलजो सपूतपूत कहातात तारेंगेकी तिन्हों तात तारे हैं, चक्रधर सगरके तनय हजारसाठ निमित्तके आये देव पलमें प्रजारेहैं, दरयकी कोडाकोडी अरव खरब जोडी मंदराजजूकूं कहा मौततें निवारेहैं, अजर अमरराज महाराज सुखकाज जप्पजगदीश जिन्हें पतित उधारेहैं ९, हंसगति गामनीजू देहदुति दामनीजू कामकीसी कामनीजू निरुपम नागरी नमिराजजूके प्यारी ऐसी धुहजार नारी रूपकी समारी एक एकहूं तें आगरी, निवाऱ्यो न दाघ जोर चंदनकी कीनी खोर कंकनको सुण्यो सोर उपज्यो वैरागरी, मिथुलाको राजछोर मोहकेजू बंधतोर नमें इंदकर जोर ऐसो धर्मलागरी, १०, अथ तृतीय संसारभावना कथन। दोहा। लखचोरासी चोहटा, व्यापारी तहां जीव, लाभ अलाभ है शुभ अशुभ, पुरशंसार सदीव ११ सवइया ३१ साजलथल पादप पावक पवमांन पुन नर गिरि नारक अमर अव तारीहैं, विकलकी कुलजाति जीवकी अनेक भांति असी चार लाख जोनी विविध विचारी हैं, यामें गति आगति अनंत वेर करै जीव नांमयूं संसारको अर्थ अनुसारीहैं, भ्रमत करम भाय रहतचरीके न्याय कथहुकरी तो जीव कथहूक भारीहैं १२ चार गति चक्रवार धमत नपावै पार जीवकर्म्मचालमें अनंतकाल गयोहै, विषयकपाय मदमोह सुरा मतवारो जडतें नहोत न्यारो जडगुण लह्योहै, कितहून ठहरात अथहै उरधजात पातज्यूं वधूलाको अथिर परिणयो है, याहीतें संसार भाव धरहुचेतनराव अपनो सुभावगहि जोति रूप जयो है, १३ कथही उतंग

दही घृतगव्य १९ सवइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म अधर्म्म नभ षट्द्रव्यज् अखंडरूप जानीयै, पुद्गलमूर्तिक और है अमूर्त्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच मानीयै, अपने स्वभाव धरि रहेहै सबेही द्रव्य यद्यपि मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीयै, योंही अन्य भाव जान राजजीव न्यारो मांन निहचे निगमयां न संसय न आनीयै २० न्यारो धन धाम गांमठांम कांम सब मात तात भ्रात न्यारा अंतकाल पाइकै, राज अविनासी लख चोरासीको वासी फहूं होन न उदासी जगवासी सदभाइकै, मिथ्या मन दख्यो वख्यो मिथ्या मेरी २ सब दख्यो है विवेकरवि तमो घनठाइकै, वाजीकूं संकेलि जैसें वाजीगर ऊठजात पल एक मलककूं ख्यालसो दिखाइकै २१ संध्याकालि तरुडार बैठे आय खग कुल राति वसि प्रात ऊठि न्यारे २ जात है, लेतहे बसेरा रातपंथी ज्यूं सराहबीच जोरन है भीनजोऊं होन न प्रभात है, गइयानके संग ग्वाल डोलत हैं सबदिन आवत प्रदोप गेह इकेलो दिखात हैं, असें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान विलात है २२ अथ अशुचि भावना षष्टम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह ऊपजै, अशुचिहि पंच्यो पिंड, जेसी माटी होइहै, तैसोही हे भंड २३ सवइया ३१ सा, मांस हाडचामनस मेदगुदरसवस मज्जा केस शुक्र रेतयहै पिंड रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन चामको सामेला धेला मैलहीसूं मच्यो है, महारूठो यूठो दूठ छिनमें अपूठ होत लंपट निपट लोभी लालचमें लच्यो है, ऐसो राजदेह यांसूं कीजिये कहा सनेह यांसूं नेहकर नर कहो कोन बच्यो है, २४ अंबर अनूप

अंग होत है मनंग चंग कवहु पतंग भृंग कीटक अकार जू, कवहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जीव कवहुक वेदविप्र कवहु चमारजू, जेसें नट एक भेप थटत अनेक थाट तेसें एक जीवके अनेक अवतार जू, घन्नघन्नाशालि भद्र थूलभद्र जंबू वडा त्यागी जे संसारकेजू अभय कुमार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥ जडतो करताहे नहीं, करता चेतनराव, जो करता सोइ भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सवइया ३१ सा, कौन तेरे माततात कौन तेरे अंगजात कौन भ्रात जात तेरे सब है सयारथी, अरथ खटाऊ परलोकके वटाऊहोतधनकूं वटाय लेत मिलके धनारथी, ताकी गति कोन बुझे स्वारथके मोह बूझें भवमें अरूझे कोऊ नांही परमारथी, चेतन विचार चित्त इकेलोनो तूंहेमित्त उवट चलत आप आप होऊ सारथी १६ एक असहाई आप करत है पुन्य पाप करमकूं मेले आप आपही प्रमाथीजू, स्वारथके काज सब मिलत समाजराज वेदनीके उपजन न को संग साथी जू, अंतकाल आवै जब आखर इकेले सब कहा भयो काहूके जू बहु रथहाथी जू, एक भाव मनधर माया लोभ परिहर भयेजू वैरागी त्यागी अनिथि अनाथीजू १७ तेरोतो न कोऊजीव तूंहिपैनकाको यांहि आयो है इकेलो तूं इकेलो फिर जाइवो, काहेकूं विराणेकाज निघट कपटराज रहत है आठोंयाम धंधेहीमें धाइवो, दुकृत सुकृत दोऊं साथिहोहे तेरो सोऊ और फेलकोऊ पुन्यपाप फल पाइवो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही पुण्यपाप जीय असहाई एक यहै ध्यांन ध्याइवो १८, अथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पै पुद्गलपंध्यो, संसारी जिवद्रव्य, ज्ञानी यूं न्यारो लखे, दूध

दही घृनगव्य १९ सवइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म अधर्म नभ एईपट्द्रव्यजू अखंडरूप जानीये, पुद्गलमूर्त्तिक और है अमूर्त्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच मानीये, अपने सभाव धरि रहेहै सबेही द्रव्य यद्यपि मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीये, योंही अन्य भाव जान राजजीव न्यारो मांन निहचे निगमयां न संसय न आनीये २० न्यारो धन धाम गांमठांम कांम सब मात तात भ्रात न्यारा अंतकाल पाइके, राज अविनासी लख चोरासीको वासी कहूं होन न उदासी जगवासी सदभाइके, मिथ्या मन लक्यो वक्यो मिथ्या मेरी २ सब टक्यो है विवेकरवि तमो घनछाइके, बाजीकूं संकेलि जैसें बाजीगर ऊठजात पल एक मलककूं ख्यालसो दिखाइके २१ संध्याकालि तरुडार वैठे आप स्वग कुल रानि घसि प्रात ऊठि न्यारे २ जात हैं, लेनहे बसेरा रातपंथी ज्यूं सराहधीच जोरन हैं भीनजोरूं होन न प्रमान है, गइयानके संग ग्वाल डोलत हैं सबदिन आवत प्रदोष गेह इकेलो दिखात है, असें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान विलात है २२ अथ अशुचि भावना षष्टम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह ऊपजै, अशुचिहि पंथ्यो पिंड, जेसी माटी होइहे, तैसोही है भंड २३ सवइया ३१ सा, मांस हाड्चामनस मेदगुदरसवस मज्जा केस शुक्र रेतयहे पिंड रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन चामको सामेला घेला मैलहीमूं मच्यो है, महारूठो झूठो दृढ छिनमें अपूठ होत लंपट निपट लोभी लालचमें लच्यो है, ऐसो राजदेह यांसू कीजिये कहा सनेह यांसूं नेहकर नर कहो कोन बच्यो है, २४ अंबर अनूप

अंग होत है मतंग चंग कबहु पतंग भृंग कीटक अकार जू, कबहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जीव कबहुक वेदविप्र कबहु चमारजू, जेसें नट एक भेष धरत अनेक थाट तेसें एक जीवके अनेक अवतार जू, धन्नधन्नाशालिभद्र थूलभद्र जंबू बडा त्यागी जे संसारकेजू अभय कुमार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥ जडतो करताहै नहीं, करता चेतनराव, जो करता सोइ भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सवइया ३१ सा, कौन तेरे माततात कौन तेरे अंगजात कौन भ्रात जात तेरे सब है सबारथी, अरथ बटाऊ परलोकके बटाऊहोतधनकूं बटाय लेन मिलके धनारथी, ताकी गति कोन बूझे स्वारथके मोह चूझे भवमें अरूझे कोऊ नांही परमारथी, चेतन विचार चित्त इकेलोलो तूंहैमित्त उवट चलत आप आप होऊ सारथी १६ एक असहाई आप करत है पुन्य पाप करमकूं मेले आप आपही प्रमाथीजू, स्वारथके काज सब मिलत समाजराज वेदनीके उपजत न को संग साथी जू, अंतकाल आवै जब आखर इकेले सब कहा भयो काहूके जू बहु रथहाथी जू, एक भाव मनधर माया लोभ परिहर भयेजू वैरागी त्यागी अनिथि अनाथीजू १७ तेरोतो न कोऊजीव तूंहिपिनकाको यांहि आयो है इकेलो तूं इकेलो फिर जाइयो, काहेकूं विराणेकाज निपट कपटराज रहत है आठोंयाम धंधेहीमें धाइयो, दुकृत सुकृत दोऊं साथिहोहे तेरो सोऊ और केनकोऊ पुन्यपाप फल पाइयो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही पुण्यपाप जीव असहाई एक यहै ध्यांन ध्याइयो १८, अथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पे पुद्गलपंथ्यो, संसारी जियद्रव्य, ज्ञानी यूं न्यारो लखै, दूध

दही घृनगव्य १९ सवइया ३१ सा, पुद्गलजीव काल धर्म अधर्म नभ एईपइद्रव्यजू अखंडरूप जानीये, पुद्गलमूर्त्तिक और है अमूर्त्तिक जीव द्रव्य चेतन अजीव पांच मानीये, अपने सभाव धरि रहेहै सयेही द्रव्य यद्यपि मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीये, योंही अन्य भाव जान राजजीव न्यारो मांन निहचे निगमयां न संसय न आनीये २० न्यारो धन धाम गांमठांम कांम सव मात तात भ्रात न्यारा अंनकाल पाइके, राज अविनासी लख चोरासीको वासी कहूं होन न उदासी जगवासी सदभाइके, मिथ्या मन छक्यो वक्यो मिथ्या मेरी २ सव ढक्यो है विवेकरवि तमो घनठाइके, याजीकूं संकेलि जैसें वाजीगर ऊठजात पल एक ग्वलककूं ख्यालसो दिखाइके २१ संध्याकालि तरुद्वार वैठे आय ग्वग कुल रानि वसि प्रात ऊठि न्यारे २ जान हैं, लेतहै वसेरा रातपंथी ज्यूं सराहधीच जोरत है मीनजोर्हु होत न प्रभात है, गइयानके संग ग्वाल डोलत हैं सयदिन आवत प्रदोष गेह इकेलो दिखात है, असें अन्यभाव मन आनियेतो राजकवि ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान विलात है २२ अथ अशुचि भावना षष्टम कथन, ॥ दोहरा ॥ अशुचि मिले यह ऊपजे, अशुचिहि यंध्यो पिंड, जेसी माटी होइहै, तैसोही हे भंड २३ सवइया ३१ सा, मांस हाडचामनस मेदगुदरसवस मज्जा केस शुक्र रेतयहै पिंड रच्यो है, शुचिको न अंस परसंस याकी करे कोन धामको सामेला धेला मैलहीसूं मच्यो है, महाझूठो झूठो दूठ छिनमें अपूठ होत लंपट निपट लोभी लालचमें लच्यो है, ऐसो राजदेह यांसूं कीजिये कहा सनेह यांसूं नेहकर नर कहो कोन बच्यो है, २४ अंवर अनूप

अंग होत है मतंग चंग कबहु पतंग भृंग कीटक अकार जू, कबहुक धनी निरधनी सुखी दुखी जीव कबहुक वेदविप्र कबहु चमारजू, जेसें नट एक भेप धरत अनेक थाट तेसें एक जीवके अनेक अवतार जू, धन्नधन्नाशालि भद्र थूलभद्र जंबू वडा त्यागी जे संसारकेजू अभय कुमार जू १४ अथ चतुर्थ एकत्व भाव कथन ॥ दोहरा ॥ जडतो करताहे नहीं, करता चेतनराय, जो करता सोइ भोगता, यह एकत्व स्वभाव १५ सवइया ३१ सा, कौन तेरे माततात कौन तेरे अंगजात कौन भ्रात जात तेरे सब है सबारथी, अरथ खटाऊ परलोकके वटाऊहोतधनकूं घटाय लेत मिलके धनारथी, ताकी गति कोन बूझे स्वारथके मोह बूझें भवमें अरूझे कोऊ नांही परमारथी, चेतन विचार चित्त इकेलोनो तूंहेमित्त उवट चलत आप आप होऊ सारथी १६ एक असहाई आप करत है पुन्य पाप करमकूं मेले आप आपही प्रमाथीजू, स्वारथके काज सब मिलत समाजराज वेदनीके उपजत न को संग साथी जू, अंतकाल आवे जब आखर इकेले सब कहा भयो काहूके जू बहु रथहाथी जू, एक भाव मनधर माया लोभ परिहर भयेजू वैरागी त्यागी अनिथि अनाथीजू १७ तेरोतो न कोऊजीव तूंहिंपैनकाको यांहि आयो है इकेलो तूं इकेलो फिर जाइवो, काहेकूं विराणेकाज निघट कपटराज रहत है आठोंयाम धंधेहीमें धाइवो, दुकृत सुकृत दोऊं साथिहोहे तेरो सोऊ और केनकोऊ पुन्यपाप फल पाइवो, करेहैं हरेहैं आप इकेलोही पुण्यपाप जीव असहाई एक यहे ध्यांन ध्याइवो १८, अथ पंचम अन्यत्व भावना कथन, ॥ दोहरा ॥ न्यारो पे पुद्गलबंध्यो, संसारी जिवद्रव्य, ज्ञानी यूं न्यारो लखे, दूध

दही घृतगव्य १९ सवइया ३१ [illegible]
अधर्म्म नभ एईपट्द्रव्यजू [illegible]
र्त्तिक और है अमूर्त्तिक जीव [illegible]
मानीये, अपने स्वभाव धरि [illegible]
मिले हैं तोऊ न्यारो पहिचानीये, [illegible]
राजजीव न्यारो मांन निहचे [illegible]
२० न्यारो धन धाम गांमठांम [illegible]
न्यारा अंतकाल पाइके, राज [illegible]
को वासी कहूं होत न उदासी [illegible]
मिथ्या मन छक्यो चक्यो [illegible]
विवेकरवि तमो घनछाइके, [illegible]
ऊठजात पल एक खलकूं [illegible]
संध्याकालि तरुडार वैठे आय [illegible]
ऊठि न्यारे २ जात हैं, लेनहे [illegible]
षीच जोरत हैं प्रीतजोलूं होत [illegible]
संग ग्वाल डोलत है सबदिन [illegible]
दिखात हैं, असें अन्यभाव [illegible]
ज्ञानके उद्योत होत अज्ञान [illegible] (
भावना षष्टम कथन, ॥ दोहा [illegible] ाr
ऊपजै, अशुचिहि बंध्यो [illegible] ुतो
तैसोही है भंड २३ सवइया [illegible] ाृुचि
मनस मेदगुदरसवस मज्ज [illegible] अथ न-
रच्यो है, शुचिको न अंश [illegible] ाहियेनि-
चामको सामेला घेला [illegible] न जीर्ण-
झूठो दूठ छिनमें अपूठ हो [illegible] कटितट
चर्मे लच्यो है, ऐसो राज [illegible] है, ए-
यांसूं नेहकर नर कहो [illegible] पांच

कषाय चार दोषके निवास है, राज देश भोजन त्रियाकी
घात विकथाए अविरति क्रियायोग मिथ्याकर्म्म पास है,
आश्रवकी भावनाए भाव शुभविकराज इनके निवारनही
ज्ञानको प्रकाश है ३० अथ अष्टम संवर भावना कथन,
॥ दोहरा ॥ ज्यूं कुल आगम राहुमिर, रूके पालके पंथ,त्यूंही
आश्रवरो किये, संवर भाव सुसंघ ३१ सा, चरण धरण
धरे जीवको यतन करे बोलत वचन ऐसे रागरोषना घटे,
भोजन विशुद्धि शुद्ध होय यो नरसनाके ग्रहन धरन वस्तु
मन दयामें मंडे, कफ मल मूत्र विट् श्लेषमको डारियो शु
ऐसी भांति डारे जेसें जंतु तामें नागटे, मनवच काय ती-
नूं गुपत करन निज इनहि निश्रेणी साधु मोक्षधाम जे
चढे ३२ प्राणि वध मृषावच अदत्त मैथुनरूनि परिग्रह
लोभमूल पातिकको पोषहे, इनको निरोध सोउ संवर
धर्म्मानियतु इह शुभहेतु जांनि संवर संतोष है, संवरसुं
प्रीति जाके सोऊ ऊपदेश योग औरनकूं उपदेश वृथा
कंठशोषहे, मोक्षपुरगोनविष संपलसो संवरके सेवनही
प्राणीगण जीवनही मोषहे, ३३, संवरकूं नित करकिने
जीव गयेसिरं मारेगें किनही आगे अब धुनरतुहे, संवर
समान और ज्ञानविज्ञान कछु धरनीहे सोऊ जाऊ संवर
तरतुहे, संवरको वकतर सुदृढ कस्यो है तन तासुंतो
करम अरि कहुं नलरतुहे, दयदंत मेनारिज धर्म्मरुचि
मुनिराज गजसुकमालजेसे पामक दलतुहे ३४ अथ न-
वमी निर्जराभावना स्वरूप कथन, दोहरा, तासुंकहियेनि-
र्जरा कर्म्मजुआनमर्वान तप जप वपकर आपवस जीर्ण-
करे मार्धान ३५ सवइया ३१ सा, कलके लंगोट कटिमट
सुंलपेट धाम धांम शीत कालतुहे औरहे पहारिहे, ए-
कासन आठोयाम बैठनाहे ढीढिमांचि जारनाहे पीठ पांच

पावक प्रजारिके, करमनरुण आविदनहं मौनग्रहि नगन
रहन और रमन मसानिके, ज्ञानके मयोगविन निर्जरा
अकामसह आतमहितरूपनाहीं तोन निममनाके ३३ जिने
जगवासी जीव वाहजगम बानि अज्ञानीके तीन यही
निर्जरा अकामसम रागमाग गांगेंगारि विपन वियोग-
दुख अलपवास नानाभाति नरक तामम उत्पातिक कष्ट-
कर सहसमरसमारिव निर्जरा अज्ञानी कर ज्ञानी इकुया-
ममें आपरम यागागम सकरकर म ट ह जिनकनें मि-
लहै शिवगति तामम १५ प्राणामन विनय सिझाय
ध्यान का उसगम व यावत नाना भांति मान सायुजनकूं,
अंतरंग तप गहू मेदक, बाह्यनागन करन विमल सह सदा
निज मनकु उपवास ऊनोदरी नित्य मभय पुन काय
क्रेस रसत्याग और नाना तप बाह्यतप उभय
मिलि द्वादश निर्जरा पावक शम पावककें वनक. ३८,
अथ धर्म्मभावना दशामा कथन दोहरा शुद्धधर्म पदको
अरथ पठित बझे मर्म सबजत्से यह जायक थारन मोही
धर्म्म ३९ सवइया ३१ मा दानशील तप भाव चारोंही
विराजे पाउ विमल विज्ञानदग दयामुख दाखींहै, सो-
भाको समूहजाको विमद विवेक पक्ष निश्चय व्यवहार
सार उभै शृंगसाखी है, संपदाको हेतु दुहु लोकनमे
सुख देत अमृत श्रवनधार संत वच्छ चाखींहै, ऐसी
कामधेनु चरत विपततृण राज तेरे चोर निंतें नीकी
भांति राखीहै ४० धरम अरथ काम तीनूंवर्ग हितकाम
उत्तम उदार सुविचार मनठानी यै, चारूं गतिमां झिसार
मानयको अवतार साधन त्रिवर्गको चतुर चित्त आनीयै,
तीनोंमें प्रधान वुद्ध कहत धरम शुद्ध अर्थकामको जुधर्म्म
कारण पिछानीयै, राजनर भव पाय धर्म्म जो करत नांहि

पशु ज्यूं विफलताको जियन घजानीये ४१ भांनी जिन-वांनी जिन्हीनींके जाण पह्चानी ज्ञानी धर्म्मध्यांनी जिन्हें तृसनाकूं तोरीहैं, जिनोंकी अमूदता नगूढा है न-योढाजेसें समिनि आरूढ प्रौढा जैसी प्रौढा गोरीहैं, ले-तन अदत्ता अभेदांन सुंजूत्ता मत्ता कथहूं नहोत तत्ता मायाकूं मरोरीहै, धर्म्म भावधारी असे घन २ नरनारी इला पुत्र भरनसें धर्म्मरथ धोरीहैं, ४२ अथ इग्ला-रमी लोकसरूपभावना कथन, दोहरा, नांयहकाहूनें घलो, काहू धलोन आहि, स्वयंसिद्ध यह लोकहै, देखे ज्ञानीनाहि ४३ सातराज ऊरध पाताल सातराज पुन चौद राजलोक गनो आगल हैं। जीयकी, चौद राजलो-ककी सुथिति भांति ऐसी आहि उभय हाथ टेके कटि प्रति जेसे तियकी, यांमें ऐसी ठौर कहूं नांही, जहां आ-तमकों नहींभई परामृति जरा मृत्यु भीयकी, जाति जोनि कुलथान फरसे अनंत वेर दीव्यदृष्टि देखे ज्यूं वि-लोकदृष्टि दीयकी, ४४, देवर भनीजो भ्रात काका सुत न्यारी पुन एक बालसंग षट्संबंध सहाने हैं, भ्रात तात सुत भरतार दादो सुसरसु षट्ही पुरुष साथ तानके सुतानें हैं, बंधव बधू सौनि सासू बधू दादी जननी जु इतेनो संबंध निजमातहीके भांत हैं, वैस्या सुतासुत जायो कर्म्म वस, सो उत्पायो मातसुना सुन जायो कर्म्म वसिसो उत्पायो मातसुन सुताराज अठारह नातेहैं ४५ अर्थः कुबेरसेन बालकसें ६ नाता देवर लगे भर्तारका भाईके नाते १ भतीजा लगे भाईका बेटा होणेसें २ भाई लगे सगीमाका जन्मा हुआ इम नाते ३ काका लगे बा-पका भाइ होणेसें ४ बेटा लगे शोकका बेटा होणेसें ५ पोता लगे मा सोकके जणे बेटेका बेटा होणेसें ६, अथ

६ कुंवरदत्तसें नाना भाई लगे एकमासमें दोनुंही जन्मे इसवास्ते १ बाप लगे माकापनी होणेसें २ शौकका पुत्र होणेसें बेटा लगे ३ आपदससें परणे गई इस नाते भतार लगे ४ कांतका बाप होणेसें दादा लगे ५ देवरका बाप होणेसें ससरा लगे ६ अब ६ नाते कुंवरसें नामें, सो सबब दिखाते हें भाईकी बहू होणेसें भोजाई लगे १ दोनों एक भरतारकी स्त्री होणेसें सौक लगे २ पतीकी माताहोणेसें सास लगे ३ सोकके बेटेकी बहू होणेसें वहू लगे ४ कांतकी माताहोणेसें दादी लगे ५ इसके पेटसें पैदा हुई इस सबबसें माता लगे ६ इसतरह १८ नातेकी कथा जंबचरित्रमें हें इस लोकका ये स्वरूप हे स्वारथही भाई बिन स्वारथ हें शत्रुनाई माता पितुस्वारथ असानाकी जोडानाई आपसम राजकाज लिये राजराजेसें सरतर बाहुबल काज तीन धानाये भरता जलायो लाग सदिस ब्रह्मदत्त निरतन असाना भिखानम विखाना है, लोकको स्वरूप ऐसो जानो जिन सोक्ष भाई दुनियांकूं छार यार कहावास रनाई ८६ दादशमा दुर्लभ भावना कथन, दोहरा मणिमाणिक सुतसारिता भोगसयोगभनेक ये दुर्लभ नहीं जावक दुर्लभ समकित एक ४७ सवइया ३१ सा थलभयो जलभयो अनिल अगनिभयो सक पशु पंखीभयो कलभ कुरगर रव भयो दानव भयो नारकी निगोदभयो जलथल नागीभयो भीषण भुयंगरे, नरभव धरम श्रवण जिन बचनरुचि व्रत धरबेकूं धीर मकनि अभंगरे, अंकुसार मुविचार दुर्लभ राजमार शिवसुख साधनके उत्तमहे अंगरे ४८ अरे नर नर भव पाययोन, येर २ पायो है नो प्रीतिकर बोधि दुर्लभसु, देव गुरु धर्म्मकूं परखनीके लीजीयत देखियत दरशण राचि

रहै दंभसु, निरंजन देव देव गुरु निरगंथ सेव दयामूल धर्म्म सदा देव निरारंभसुं, ज्ञानकी जंजीर जर जकर पकर करि यंघमन गजराज समकित थंभसुं ४९ देव गुरु धर्म्मको संयोग अंग चंग अनि पायोतो प्रमाद एक पलहीनकी जिये, चवद पूरवधारी ताहूकी जो होतख्वारी बहुल संसारीकों निगोद मांझि दीजिये कोडी काज हारिये नकनककी कोडि कहुं वेचिकें मतंग तुंग कहा खर लीजिये, मिथ्या मन विषपान कीजिये नराज कवि योधि सुधारस श्रुति संपुटकें पीजिये ५० द्वीपयुगज मुनि शशि वरष जादिन जनमें पास तादिनकीनो राजकवि यह भावना विलास ५१ यह नीकें कह जानियें पढियें भाषा शुद्ध सुखसंतोष अनि संपजै वुद्धि नहोय विरुद्ध ५२ इति श्री भावना विलास पंडित राजसिंह मुनिकृतं संपूर्ण ॥

तीतर व्याल विलार चिरी मकरा मकरी इन मांझि फसेहैं, धूस छिछुंदर यूं छविमां कण मूष दिवारण मांहि धसेहैं, तेंजु कियो अपणे रसकुं अपणे २ रसते हुरसेहैं, जाघर कुंजु कहे अपणा घर ता घरमें घरके ऊवसे हैं, १,

---

अथ पांच एक पक्षवादीयोंका मत, छठा सर्वज्ञस्याद्वादीका सिद्धांत स्वरूप वर्णन चरचा लिख्यते ।

अरिहंत सिद्धसूरि नमूं उपाध्याय मुनिराज पंचपरमेष्टी नित नमूं सारे आतमकाज १ जिनवरवांणी सरस्वती मतिविस्तारणमाय तिहुलोकहितकारणी प्रभु वांणी सुखदाय २, गुरुगुणसागर आगरू नागर नवल अनूप कृपा करी मुझ तारियें, पायो जैनस्वरूप ३ प्रणमुं गुरुपदकमलकूं स्याद्वादको भेद पंचवादी चरचा कहूं

[illegible] 32 मा. केवलीको
[illegible] अंतर मुहूर्त
[illegible] समां-
[illegible] गुणठाण अथवा
[illegible] मनमें चि-
[illegible]
[illegible] मिथ्या मन-
[illegible] मानसो, लैं-
[illegible] ज्यों त्यों
[illegible]
[illegible] कहत
[illegible] माँहे
[illegible] कारक
[illegible] नहीं
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] हैं [illegible]
[illegible] है
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] कहत हैं [illegible]
[illegible] ६. अथ समवाय पदार्थ वर्णन, कहत हैं समवाय-
[illegible] कालविनाही समवाय [illegible]
[illegible] मूल नहीं [illegible] नहीं

करनाल। हींगु नहीं रगमें, जान जान दरखत पांनफूल भांन २ थलचर थलपरें पंखी ऊडे खगमें, एकजिन मननय जाणेविन जगजीव कहन हैं निलोक लोक भूले पग २ में, ५, कांटे पोर पंबूलके कोण करें तीक्ष्णना। हंसकी सरलना कपटाई यगमें, विनांही स्वभाव मोर पंखकोण चित्तरता कोकिलाको सादवर स्वरभंगकगमें, विपधर मिरमणी विप हरें ततकाल पवनको चलभाव थिरभावनगमें, एक जिनमननय जाणेविन जगजीव कहत निलोक लोक भूले पग २ में, ६, पृथवी कठिन पुन हीनलना जलमांहि तुंपनि रै ऊंड डूबें झाल उठें आगमें, मृंठ उपशमें याप हरडविरेच करें रवितपे शशी सील सुखन नरकमें, पट् द्रव्य छऊं काय भावादिक भाव सब विनांही स्वभाव कोउ होन नवरगमें, एक जिनमननय जांणे विन जगजीव कहत निलोक लोक भूले पग २ में, ७, अथ भवितव्यता वादीके वचन, भवितव्यवादीकहे सुणरे स्वभाव मूढ भवितव्य विन कोऊ काज न सरत हैं, अंध मोर वसंनमें लागत हैं केई लाख केई खिरे केई डांके अंयके परन हैं, उदत निरन पुन भ्रमन जंगलविच करत जनन कोइ भार्वी नाटरत हैं, एकजिनमननय जांनेविन जगजीव कहत निलोक लोकपचके मरन हैं, ८, होन यके यसविन चिंतव्यो मिलन आप विनाही जनन होनहार नट रत हैं, ब्रह्मदत्तचक्री नैण फोडा हैं गुवाल तय सोले सहस देवसें काजन सरत हैं, झटका लागत केई रण मांहे यचे नर नियतके वससास धीरन धरत हैं, एक जिनमननय जांणे विन जगजीव कहत निलोक लोक पचके मरतहैं, ९, कोकह सकत हैं कोयल केसें रहे प्राण, पारधी

तान्यो है तीर सींचाण फिरत हैं, पारधीकों नागडस्यो सींचाणके लागो याण उडगई कोयल सो नियत करत है, जनम मरण जरा व्याधी रोग सोग जोग सुख दुख भूम्यादिक नियत धरत है, एक जिनमननय जांणे विन जगजीव कहत तिलोकलोक पचके मरतहै १०, अथ कर्मवादीके वचन, नियत स्वभाव काल तीनूंही जुगनी ताल कर्मका अजय ख्याल कर्म्म बलवान है, कर्मथी नरक निरयंच नर सुरगति कर्म्मके वस त्रिहुं लोकही हैरान है, कर्म्महीनें बुद्धियंत कर्म्महीनें रुद्धिमंत कर्म्महीनें बुद्धिहीन मुरख अजान है, कर्म्महीनें निरधन फिरत है धन २ जन २ पास जीय मांगे मुनिधान है, ११ को उक पृथवी जल अगन अनिल काय कोउक वनसपती फल फूल पान है, कोउ पोराज लोकमें किरमा अलस्या कीडी धनेस्या जूं लीख टीडी होत विकलान है, कोऊखर करी हरी रिच्छ कच्छ मच्छ मग म्याल व्याल नोल कोल कर्म्म सेती स्थानहै, एक जिनमननय जाणे विन जगजीव कहतनि लोकलोक भ्रमन अज्ञान है १२ कोउ महा सुंदर अनुरूप तेजवंत कोउ कुलीकुपडो सो कुमीयोकुम्यान है, कोउछत्रपती राजा सेठ साहूकार लोक कोउ दलदरी नीचलोक चोर म्यांनहै, कोउक सीलल गुनवांन लोक आगमांने कोउअक कोधी लोक मांनमन थान है, एक जिनमननय जांणेविन जगजीव कहत तिलोक लोक भ्रमन अज्ञान है, १३, कोउक पहरतहीर चीर जरी माल जोडी कोऊक फाटे टूटे परहीन पान है, कोउक आरोगे मेवा क्षीर म्यांड मिमटांन सीरो पूडी सीरणी अनेक पकवान है, कोउकूं मिलेन कुटी कोदराकी राब मारी सूका टूका टुकडा न मिले भाजी पान है, एक

जिनमननय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक भ्रमन अज्ञान है, १४, कर्म्महीनें आदेसर जीकूं दुवादस मास अंतराय रही नहीं मिल्यो अन्नपान है, वर्धमान स्वामीजीके पगपर रांधी खीर करके गुवालेरीस लीला रोप्याकान है, तीर्थंकर चक्रवर्त्ति हरीहर हलधर मंडलीक सलवर खांन सुलतान है, एक जिनमननय जांणेविन सब जीव कहत तिलोक लोक भ्रमन अज्ञान है, १५, अथ उद्यमवादी वचन, कहत उद्यमवादी कर्म्मसें न होत कछु होत है उद्यम कांम उद्यमही सार है, उद्यमथी शुभाशुभ कर्म्म सुख दुख होत उद्यमथी नया चेला सीखत तइयार है, लिखत गिणतगीत नाद चित्र उद्यमथी हाट खाट पाट पट सरब तइयार है एक जिनमननय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १६, लेउ धातू तिह्लीं तेल दधी लूणी पटमेल उद्यमथी भिन्न होत धातुनको खार है, उद्यमथी हलखडे नाज बोवे धरतीमें उद्यमथी काट खला मांही दैतडार है, उद्यमथी तुस दूर करके पीसत पुन उद्यम रसोईकर खाय नरनार है, एक जिनमतनय जांणेविन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १७, उद्यमथी तपजप नित्तनेम धांमध्यांन गृह। वास छांडकर होत अणगार है, घन घाती दूर होत तात है उद्यम कर्म्म अंगज कहीं जैं तास कर्म्म किरतार है, उद्यमसें रंकराव धनधान्य योग भोग गढकोट सबकांम उद्यम प्रचार है, एक जिनमतनय जांणेविन जीव सब कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १८, अथ सर्वज्ञ स्याद्वादीके वचन, खेंचाताण करत है पांचों वादी भिन्न २ जाणतन नयज्ञान कौनतंत सार है, खेंचे कोउ एक पक्ष

वान्यां है रोग सींचाण फिरत है, पारधीकों नागडस्यो
सींचाणके लागो बाण पडगई कोयल मो नियत करत
है जनम मरण जरा व्याधी रोग सोग जोग सुख दुख
अन्यादिक नियत करत है एक जिनमतनय जांणे विन
जगजीव करत निराकलोंक पर्यंक मरत है १०, अथ
कर्मवादीक कहत [illegible] स्वभाव काल नीनुंही जुगती
[illegible] कर्म प्रधान है, कर्मथी नर-
क [illegible] कर्मके वस त्रिभु लोकही हैरान
है [illegible] कर्मबंधहीनें सु-
[illegible] निरभन फिरत है
[illegible] है, ११ को उक
[illegible] वनसपती फल
[illegible] अलस्या कोही
[illegible] है काऊक्कर करी
[illegible] मोल फोल
[illegible] विन जगजीव
[illegible] महा सुंदर
अनूपरूप [illegible] कुर्मीयोकुस्यान
है [illegible] कोउ दल-
दग [illegible] पुनयोग लोक
आगमाने [illegible] मानतन पान है, एक
जिनमतनय जाणविन जगजीव कहत निलोक लोक
भ्रमत अज्ञान है. १३. कोउक पहरनहीर चीर जरी
माल जोंही कोऊक काटे दूर परदीन पान है. कोउक
भारोग मेवा क्षीर खांड मिसटान सांग पूरी सीरणी
अनेक पकवान है, कोउक मिले कुटी कोदरकी राब
खाटी सुखा लुखा टुकडा न मिले भाजा पान है. एक

जिनमतनय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक भ्रमत अज्ञान हैं, १४, कर्म्महीनें आदेसर जीकूं द्वादस मास अंतराय रही नहीं मिल्यो अन्नपान है, वर्धमान स्वामीजीके पगपर रांधी खीर करके गुवालेरीस खीला रोप्याकान है, तीर्थंकर चक्रवर्त्ति हरीहर हलधर मंडलीक नलचर खांन सुलतान है, एक जिनमतनय जांणेविन सब जीव कहत तिलोक लोक भ्रमत अज्ञान है, १५, अथ उद्यमवादी वचन, कहत उद्यमवादी कर्म्मसें न होत कछु होत है उद्यम कांम उद्यमही सार है, उद्यमथी शुभाशुभ कर्म्म सुख दुख होत उद्यमथी नया चेला सीखत तइयार है, लिखन गिणनगीत नाद चित्र उद्यमथी हाट खाट पाट पट सरब तइयार है एक जिनमतनय जांणे विन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १६, लेउ धातु तिल्ली तेल दधी लूणी घटमेल उद्यमथी भिन्न होत धातुनको खार है, उद्यमथी हलखड़ै नाज बोवे धरनीमें उद्यमथी काट खला मांही दैतडार है, उद्यमथी तुस दूर करके पीसत पुन उद्यम रसोईकर खाय नरनार है, एक जिनमतनय जांणेविन सब जीव कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १७, उद्यमथी तपजप नित्यनेम पांनध्यांन गृह। वास छांडकर होत अणगार है, घन घाती दूर होत ताम है उद्यम कर्म्म अंगज कहीं जै तास कर्म्म किरतार है, उद्यमसें रंकराय धनधान्य योग भोग गढकोट सबकांम उद्यम प्रचार है, एक जिनमतनय जांणेविन जीव सब कहत तिलोक लोक डूबे मझधार है, १८, अथ सर्वज्ञ स्याद्वादीके वचन, खेंचाताण करत है पांचों वादी भिन्न २ जाणतन नयज्ञान कौनतंत सार है, खेंचे कोउ एक पक्ष

जाणिये न इक्षनाको सूक्ष्मनय जांणेविना जाणे जो गमा रहे, किसी भांत उसो नय कहीं जे गुरुजीयाको लाहिको दृष्टांत कहो होत निसना रहे, एक जिनमननय जांणे विन सब जीव कहत निलोक लोक इये मझधार है, १९, जेसें काउ अनन्दाने हाथी देखवाद गिण्यो पांच जिण ग्रह्यो निणयस जेसो दाख्यो है सड ग्राही तिण कह्यो दगडूली थांद जेसो पड ग्राही कहे नाग कान सूप मान्यो है, दन ग्राही ममलसा पेट देख चोनारेसो कहत है निलोक लोक एक पक्ष गाल्यो है आप मन साच कहे मझनेके भाव अरु एम जानी एक पक्ष वाद दूर नाख्यो है, २०, मुणक दृष्टान शिक्ष करन प्रश्न एसो आगे पीछे छोटो बडो होन इनम जानिये, गुरु कहे सांकडी सरीम चले पाच नर आगे पीछे छोटो बडो पासे नहीं जाणिये रवि शशी जीवा जीव मास्तू पहु बाप बेटा पहलो पीछे पक्ष इन्यो क्रम पहला मानिये, आगे पीछे छोटा बडा निलोक कहीं जे केम एकेकी थटाट कर पक्ष नहीं नाणिये २१ जेसे पांच अंगलीसें लेंने है कवलमुख टेक आणी एकवाद देणी नाभिडाइके, सेना मिले सबही रणांगण मांडेजिम सुभट समूह मिल लीनन पडाइके, धनुष पणछ तीर न्यारा रहे जबलग तबलग मारे नहीं खेचेना चडाइके, एसे पांच मिल्यांविन काम नहीं होन कछु कहत निलोक एक दीजे नवडाइके २२ तंतु समभाव पटकाल अनुक्रम होन नीपजै नियतवस विघन अनेक है, उद्यम हीते तंतुवाय भुक्तादिक भोगे कर्म्म पांचुं पदारथ मिल्यां होनकाज एक है, नियतीके वस हलुकर्म्मी हुइने जीव निकल्यो निगोद सेती पुन्यको विवेक है, मानुष जन्म पाय सद्गुरु पास

जाय फहत तिलोक धैण सुणत विवेक है, २३, भवथित तणो परिपाक भयो चेतनके पंडित वीरज उल्लसियों निणवार है, भव्यके स्वभाव शिवगत गामी मुनिवर तपस्या करत अति घांनकर्म्म च्यार है, धुर वीर धीर मीर तुरत भोजलतीर केवल प्रसनकर टाले अंधकार है, कहत है तिलोक ऋषि पांचु पदारथ जोग शिवपुर जावें जीव होत जेजेकार है, २४, सम्वत एकोनवीस ऊपर गुणतीस वैशाख कृष्ण दशमी तिथ दिन गुरुवार के, नियत स्वभावकाल कर्म्मको उद्यमवाद पांचोंहीको मनपक्ष कह्यासु विचार के, आज्ञाविरुद्ध होय मिथ्यामें दुष्कत तस्य सुरतायामें चूक जाणो लीजोंधे सुधारके, कहत है तिलोक ऋषि स्याद्वादपचीसी कथी निर्मल होय मती गुणविसतारके, २५, इति पंचवादी एकांत पक्ष निराकरण स्याद्वादस्वरूपवर्णन जैनधर्म न्यायानुसार संपूर्ण ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः अथ मध्यमंगलाचरण ॥

अरिहंत बारागुण सिद्ध आठ मूलगुण सूरिके छत्तीस गुण शोभाकर राजे है, उवझाय शोभनें पचीसगुण दुनिवीच साधु मुनिराज गुण सत्तावीस छाजे है, सबके मिलाय येतें एकसो जु आठ भये थापना इनोंकी कर माला सुख साजे है, ज्ञानादिक तीनका सुमेरू बणाय भवि राम ऋद्धि मारक है सरव पाप भाजे है १,

अथ २४ तीर्थंकरोंका गुणवर्णन सवइया ३१ सा नाभि मरु देवानंद छोडदिया सर्वी फंद योगधारी जिनचंद ममता मिटाई है, करीनें करमहाण पांम्याहै अनंत

ज्ञान भविक विमल भाण कुमनि उडाईहै, तरण तारण स्वांम पोहता शिवपुर ठांम तीन लोक ठांम २ कीरत सवाईहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान आदि अरिहंत ध्यांन महा सुखदाई है, १, छोडीनें सरय आथ जोग लियो जगनाथ सीयल चलायो साथ अमी रसयाणीहै, सुण २ रावराण साचो मनलीयो जाण आया निस जिनआण किरिया प्रमाणी है, पालनाख्या कर्म्म वंस मूल नहीं राख्यो अंस उत्तर परमहंस पांम्या निरपाणी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अजित जिनंद ध्यांन महा सुखदानी है, २, वीमण धीमणजेम आगनामें गिणेएम तनखिण कियो नेम तजे राजकाज है, घातिया करम घाय केवल गिनान पाय उपगारी जिनराज बांधी धर्म्म पाजहै, जीव घणा कीधा रद क्षपकनिश्रेणी चढ पांमिया सुगत गढ अविचल राजहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान संभव जिनंद ध्यांन अमृट जिहाज है, ३, देखीनें अधिकरूप पर संमाचरी भूप करी विनय स्वंप वार वार वंदणा, जगनें अथिर जाण सुपनो मांड्यारो भाण भयहर भगवांन तोड्या मोह फंदणा, अखंड चारित्र पाल मोक्ष गया कर्म्म टाल साश्वता सदाई काल लिया सुखकंदणा, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अंगमें हुलास आण वंदो अभिनंदणा ४ सुमनि सुमनिधार कुमनने दीवी टार सुमनि भजन सार जिम गुण पानहै, सुमनिमें रहा झूल सुमनिरा फल्या फूल सुमनि भूषण मूल दीठां दुखजान है, सुमनि दातार सूर अंधकार कियो दूर सुमनिरा रणतूर बाजे दिनरात है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान सुमनिरा किया धान सुमनहीं आनहै, ५, हींगलू वरण

न लाल मणी दिनरात जोगनि
जरिदहैं, तप जप मयपरर
केवलवर हुया पर सिद्दहैं, सुर
जनपर काम क्रुस करम नाम करि
णे मुनिचंद्र भाण सुणहो
ध्यांन किया नवनिद्द हैं, ६,
चोथे जिनराय बैठा कर्म घरनांद
भोग तज कीच मार लियो मोर
बीच गाजै ज्यूं सादूल है, रायंद
रावै कव शिवपुर पांम्या सुन
मुनिचंद्र भाण सुणहो विहरा
महासुख मूल है ७, चंद्रमा
नेह उत्तम चारित्र लेह मन
आप भारी तेजपर ताप
फेरीहै, सुरनर करै सेव
देव बाजे जसभेरी है,
कयान चंदाप्रभु जिन
सीयरायनंद देहा
अणगार हैं करीनें कर्म
मिया केवल पद
मेट दियो मिथ्यामति
पार है, भणे मुनिचं
जिनंद ध्यान कि
गयो मानानणे
मायाप है,
भोग परिहर
लगनें शीतल

दीपो
कयान
ट खंड
आवृट
ायोग
। आदि-
करमकाट
शिक्षकारै,
१६, चयदे
ार बत्तीस
ुर षटखंड
ावधि रिद्ध
सुख प्यार
कुंथुजिनंद-
ाज इतारूडा
ै, छिनवैक-
ीनांम रहे
ानवर अ-
ण सुण
तोड है,
ारि हरे
ुण तणो
त है, घटके
ह लाल
ीकयान

यो पारकी घो अदभून लाभ लीयो अनोपम ज्ञान दीयो दीनके दयाल है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान धर्मनाथ ध्यान धरो निरे भवजाल है, १५, खट खंड सिरदार चोसठ हजार नार हयगय परवार अखूट भंडार है, अनुत्तर कांमभोग आय मिले पुन्ययोग क्षमा २ करे लोग कीरत अपार है, एसी रूद्धि-तणो थाट तजलीनी शिव वाट आठही करमकाट हुवा सिद्धसार है, चंद्रभाण चितधार शिक्षकहे, त्रिनकार संतनाथ तंनसार जपो जेजेकार है, १६, चवदे रतनसार अदभुन गुणकार नरवर अज्ञाकार बत्तीस हजार है, षोडस हजार सुर अज्ञाकारी तंतपुर पटखंड नरवर साराही सिरदार है नाटक बत्तीसविध रिद्ध सिद्ध नवनिद्ध सहु छोडी हुवा सिद्ध लीया सुख प्यार है, भणे मुनि चंद्रभाण सुण हो विवेकवांन कुंथुजिनंद-ध्यांन तारत संसार है, १७, चउअसील ग्वाज इतारुडा गजराज पियादल सबसाज छिनवेक रोड है, छिनवेक-रोडगांम चोसठ हजार धांम पासवान दूणीतांम रहे कर जोड है, एसी रूद्धितजकर जोगलिया जिनवर अ-जर अमर पुर गये करम तोड है, भणे मुनिचंद्रभाण सुण हो विवेकवान अरिनाथ ध्यांन कियां मिटे करम कोड है, १८, विरकत रह्या आप जगको न लागो पाप परि हरे सहूताप यैठा धरम पोत है, दयावंत ग्वंतदंत गुण तणो नहीं अंत उपगारी अरिहंत, टाली मिथ्या छोत है, घटमें गिनान घाल काढीया करमसाल धरममें रहे लाल लीनी शिव जोत है, भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान मल्लि जिन ध्यांन किया निरमल होत है १९, बीसमा जिनंद राय सांवलीसूरतकाय चारित्रसुं चितलाय तजेठाट है,

है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान शीतल जिनंद ध्यान टाले भवताप है १०, ज्ञान घोड़े भगवान चढ़ा महा बलवान शील शैन्या सावधान समकित शेल है, धीरज कटारी धार तपसारी तरवार गुणारी गुरज सार पाप दिया पेलहै, जीत हुई जिनराय सुर नर लागा पाय सुगति विराज्या जाय सदा सुख रेलहै, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान श्रेयांस जिनंद ध्यान आप सुख बेलहै, ११, वासुपूज्य जायापूत शिवपुर दिया सूत आप घणा अदभूत संवर कषाय है, अठ लख दशावास लीलामणि गृहवास परहरे मोहफास तजे लोभ लायहै, धर्मनें शुकल ध्यांन पांम्यापद निरवाण सुरनर रायराण बंदेंमिर नाय है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान वासुपूज्य जायेपुत महा सुखदाय है १२, विमल विमल बैण अमल कमलनैण सकल जीवांरा सैण दीठां जागेंगमहै, सुमता मिरेंहै शोभ लाभै नहीं मूल लोभ समुदर ज्युं अण क्षोभ निरमल नेमहै, सुरनर काज सार जनम मरण जार निरमल निराकार लिया सुखपेम है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान विमल विमल बैण चिंतामणि जेमहै, १३, अजोध्या पुरीना ईस आयु वरस लक्षमीस जोगसिरो जगदीश दयादिल आणीहै, काम कुंभ जेम माम मारी या जगत काम जीव घणा ठांम २ किया गुणखाणी है, सुखदाई सुरनर पारसज्यु गुणकर अजर अमरपुर थया निरवाणी है, भणे मुनिचंद्र भाण सुणहो विवेकवान अनंत जिनंद ध्यांन शिवकी निसाणी है १४, धर्मनाथ धर्मधार कीयो घणो उपगार उपदेश दियो धार मोटा कि पालहै, उवाजा अंतर नेम किया घणा मावधेन पर उपगारहेत वांणी धरमवाल है, धर्मध्वे

सुधार गुण भणो नहीं पार मेरी बुद्धि अनुसार कीया थे प्रमाण है, सवइया पचवीस गाथा गुण जगदीशभ-भणें सुणे निसदीस करन कल्याण है, संमत अठारेपास पचावन माघमास सुदि पांचम फले आस धार भला भाण है, भणे मुनि चंद्रभाण सुणहो विवेकवान चोवीस जिनंद ध्यान महामुख खाण है. इति चउवीस जिन-स्तुति भीष्मपंथी चंद्रभाणजीकृत संपूर्णम् ॥

[अथ मुनिगुण २२ सवइया ३१ सा]

॥ पापपंथ परिहरे मोक्षपंथ पगधरे अभिमान नहीं करे निधार्यं निवारी है, संसारको छोडयो संग आलस नहीं है अंग कर्मासुं करे जंग मोटा उपगारी है, मनमांहे निरमल जेहवो गंगाको जल काटे है करम दल नवतत्व धारी है, संजमकी करे खप धारे भेदे तपंतप एसे अण-गारताकूं वंदना हमारी है १ ज्ञानकरी भरपूर विकथासुं रहे दूर तपस्या करण सूर मोटा अणगारी है, तारण तरण ज्याज आतमाका सारे काज दोष सेती आंणे लाज गुणांरा भंडारी है, छोड़ी सब खोटी मन चोखी शासे समकित निरधय धोले सत्त झूट परिहारी है, देई सुद्ध उपदेश घालत हे दया में रेस एसा अणगार ताकूं वंदना हमारी है, २ तन सहे शीततापं जिन जीरो जपे जाप कर्म्म मल देवे काप बहुत विचारी है, छोडदियो धन धांन ध्यावे हे शुकल ध्यांन सुधार है सावधान कु-मति विडारी है, सुनाघर समधार नकरे देही की सार शील पाले खड्ग धार विषय दूरवारी है, राग द्रेष मल दोष निरमल होवै घोष एसा अणगारताकूं वंदना ह-मारी है, ३ क्रियाको कथाण कीप दयालणा बंध दीध

ब्रह्मचर्य पणकु सीख वखांन करागी है. तपस्याका किया वाण दुर्ग्या निदाण जाण वाल्या है सधुरी वाण ध्यांन की करागी है. समकित सेल झाल ज्ञांन घोडे चढया ढाल धीरज की करी ढाल क्षमा तरवारी है शीलसे ग्यालई लार कम्मांसु करे राड एसे अणगारनाकुं वंदना हमारी है. ४ परीसा उपना धीर हुवे नहीं दिलगीर सैठा रहे सुरवीर देपन दिगारी है ममता नांही शरीर पर जीवां जांणे पीर सचित्त न पीवे नीर पाप परिहारी है, मारण कम्म सीर तपस्याका वावे तीर राखे नहीं तक-सीर आतमाकु तारी है मान पेचे राखी सीर कोडी नही राखे तीर एसे अणगारनाकु वदना हमारी है. ५ अष्ट आचार पाले दोष सब दुरे टाले जामण मरण जाले ममताकु मारी है तप करी ततगाले तारी सांमो नही नाले विपे दृष्टि पाछी वाले विशुद्ध विचारी है, छोडदियो रंग नाद करे नहीं परमाद चखे अनुभो को स्वाद उपन विहारी है वस करे तन मन वाले हे करम वन एसे अणगारनाकु वदणा हमारी है ६ ज्ञान ध्यांन रहे लीन जमुनाकु माहे मीन प्रवचन रस पीन शुद्ध गु-णधारी है. इडी पाच वसकीनदाच्या यणा परवीन देव गुरु धम्म तीन विशुद्ध विचारी है, देहीने पाडन क्षीण हुवे नहीं खिण दीन कम्म काटे छीन छीन धम्मके वेपारी है, यथातथ्य पंथ जिन सुगतका सुन दिन एसे अणगार नाकुं वदना हमारी है, ७ जिन जीको लीयो धम्म मेट दियो मिथ्या तम कांम भोग दिया वम तजी ऋद्धि सारी है. साकर काकर सम गाल योल्यां ग्यावे गम दीना है आतम दम क्षमा गुण भारी है, बाईस परीसा सम सहे मुनि एकदम जाको कामुं करे जम कुगति विडारी

है सिद्धां तमें रहे रम चाले नहीं धम धम एसा मुनिराज ताकूं वंदना हमारी है, ८ मुगनि फालेड मग जोपश्मेले पग मन मन राखे टग तजी सप जारी है, ज्ञान ध्यांन रहे लग गुणांरो नहीं छैधग उपदेश देवे जग कुमनि विमारी है, दुर्जन नर पग गालपोल्यां मुख अग हुवे नहीं धग धग समता अपारी है, तपस्याको झेल्यो गगग मारण करम ठग असे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, ९ निरवद्य पोले वेण सकल जीवारां सेण धारम्रमें पावे चैन आतमा सुधारी है, निरवद्य सेवे लेण वसराग्ये नि-जनेण नारी सप जाणे वेण शुद्ध ब्रह्मचारी है, साचो जाणो मन जैन धीजा सह माने फेन उपदेश देवे ऐन जग हितकारी है, ध्यांन धरे दिन रैण समजांणे वेरी सेण ऐसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है १० करणी करे कठिन दुरवल करे तन निरे है कर मरन थोकडी धदारी है, अशुद्ध न लेवे अन्न कुकथा न देवे कन्न धूट समजाणे धन्न समता तो सारी है, मारिये दुसट मन गावे सप शुद्ध गण हटे नांही कीर्त्त धन महिमा वधारी है विलंपन करे खिन ज्ञान भणे भिन भिन एसे अण-गार ताकूं वंदना हमारी है, ११ अकल यहोन ऊंडी साचो पंथ लियो ढूंढी रात दिन ताकी हुंडी प्रभुजी सि-कारी है, ज्ञान तरणी घणी पीक भिन्नरपाटे तीक सदा रहे निरभीक माया सप टारी है, बया लीस दोप टार निरदोप लेवे अहार संजम री यहे भार लडे नलिगारी है, तप तेज रहे दीप परीपहकूं लेवे जीप असे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, १२ दिलसाफ निसदिन भजन है भगवन मिथ्या सेनी दूर मन मुनि गुणधारी है, अशुद्ध न खावे अन तप कर दहेतन कोडी नहीं राखे धन छती

साचरी पणछ सीख वहोत करारी है. तपस्याका किया वाण टस्यां निशाण जाण वाज्या है मधुरी वाण ध्यांन की कटारी है. समकित सेन झाल ज्ञांन घोड़े चढया लाल धीरज की करी ढाल क्षमा तरवारी है शीलसे स्याद्वाद ल्याय कर्मांसु करे राड ऐसे अणगारनाकं वंदना हमारी है. ४ परीसा उपनां गीर हुवे नहीं दिलगीर सेठां रहे मरयाद छोपत दिगारी है ममता नांही शरीर पर जीवां जाणे पीर सचित्त न पीवे नीर पाप परिहारी है. मारण कर्म भीर तपस्याका वावे तीर गावे नहीं तक-सीर आतमाकं तारी है माल पेचे गरवी भीर कोडी नहीं रावे तीर ऐसे अणगारनाक वंदना हमारी है. ५ अखंड आचार पाले दोष सब दूर टाले जामण मरण जाले समताकं मारी है. तप करी तनगाले तारी मांमो नही नाले विषे दृष्टि पाछी वाले विशुद्ध विचारी है, छोडदियो रग नाद करे नहीं परमाद चखे अनुभो को स्वाद उग्रन विहारी है. वस करे तन मन वाले हे करम वन ऐसे अणगारनाक वंदणा हमारी है. ६ ज्ञांन ध्यांन रहे लीन जगनाके माहे भीन प्रवचन रस पीन शुद्ध गु-णधारी है, इंद्री पांच वसकीनडाला थणा परवीन देव गुरु धर्म तीन विशुद्ध विचारी है. देहांनं पाडन क्षीण हुवे नहीं खिण दीन कर्म काटे कीन कीन धर्मके वेपारी है. यथातथ्य पंथ जिन मुगतका सुन दिन ऐसे अणगार नाकं वंदना हमारी है, ७ जिन जीको लीयो धर्म मेट दियो मिथ्या तम कांम भोग दिया वम तजी ऋद्धि सारी है, साकर काकर सम गाल थोल्यां ग्वावे गम दीना है आतम दम क्षमा गुण भारी है, वाईस परीसा सम सहे मुनि एकदम जाको कासुं करे जम कुगति विड़ारी

तजी कपट प्रंथरासगेरी है, विपरत गोगवट नभपर जे मनट तपें रही भवतट आतमा उजेरी है, घणो साफ करी घट रहे जिन नामरट, ऐसा अण० १८, ज्ञांन घोडे असवार हुया सन्त अणगार सिमायना याजासार विधि- सुं यजायनें, संजम सिनाह टोप अधिक रक्षा छैं ओप दया आउध अनोप कर मैं संभायनें, दांन शील तप भाय चारों मोटा अमराय साथे हुया सम भाव मन मैं उमायनें, मुगति किल्लारे मांप जंगकरी पैसे जाप, ऐसा अण० १९, काटत करमदल छोडदीया सप छल परिहरे फल फल जोयें नहीं आरसी अनुकूल प्रतिकूल परीसहा पर पन्न ऊपना रहे अचल सोही काज सारसी, मेटे मोह मिथ्या मल ग्यानतणी अटकल सीलाई ने परयल संसा सव टारसी, आणीनें संतोप जल मेट दीवी लोभ झल ऐसा गुरुचारो जीव तिरे सोही तारसी, २० संसार नीम जीलील सिद्धांतमें करी झील साचें मन पालै सील, नहीं जोयें नारसी, दुरयल करी देह गिरया गुणारा गेह न्याती हूं सी तज्यो नेह माया जांणे छारसी, आसमांरा टाले दोप कर मांरो करे शोप मगनराडक मुनी येगाह यजारसी दातासूंम रंकराय सहू सेती समभाव एसा अणगार सही तिरे सोही तारसी, २१, भाय नींद गई भाग जंबू जेम उठया जाग विधि सुंलीयो यैराग छती ऋद्धि छोडनें, निमी पणी तजी माग रंचक न घरें राग तेम जगदियो त्याग मायादल मोडनें, अन्तर बुझाई आग लयलेस नहीं लाग दिलरा मेटण दाग तपैनन तोडना, घास करी मन याग मालत मुगत माग ऐसा अणगार हस जपुं कर जोडनें, २२, झीणो जिन मत झाल सोधि- या भीतर साल मुनी भए तज माल चित जांणे धन्दणं,

ऋद्धि छांडी है, धरत धरम धन छांडे नहीं एक छिन गौतम ओपमगिन धीर गुणधारी है, भलो उपदेश भन जुगतिसुं तारे जन एसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, १३ तजय चंपेल तेल मांन सब दियो मेल विषरूप विषे वेल उपरथी उपाडी है, वधारे धर्म वेल परीसाकूं लेवे झेल खेलत उत्तम खेल साचा सुविचारी है, इंद्रियांकूं देवे गोप क्षमासुं रख्या है ओप करे नहीं मूलकोप गिरवा अपारी है, सदा रहै निरलेप कर्म्मांकूं देवे लेप ऐसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, १४ भगवंत ज्ञानभेट, सुरत लगाई ठेट, मिथ्या मत दीयो मेट, अखंड आचारी है, शशि जिम दीसे सोम हुवै नांही प्रति लोम संथारों करे छै भोम दया अधिकारी है, दिखाडत सुद्धराह सकल जीवानां नाह मेट देवे भवदाह आतमा सुधारी है, थिरकत रहे सदा लोभ न धरे कदा एसे अणगार ताकूं वंदना हमारी है, १५ दिलसाफ निसदिन भजत है भगवन मिथ्या सुर नाणे मन एसी इकतारी है, अधिक न खावे अन तप करी दहे तन कोडी एक नहीं कन छती ऋद्धि छारी है, धारत धरम धन छोडे नहीं एक छिन गोसुन ओपमगिन धीर गुणधारी है, भलो उपदेश भन जुगत सुंतारे जन ऐसे अणगार० १६ मिथ्या मोह उनमूल हिंसा तजी लघु थूल झूठ नहीं बोलै मूल तजी सब चोरी है, परिहर्यो मैथुन, नवविध तज्यो धन राते नहीं भखे अन धरमका धोरी है, सुगुरूकी पाले सीख कुपंडे न भरे बीख भमरा ज्यूं लेवे भीख तजी सब जोरी है, मित्रदभाखै भेद मूल नहीं करै खेद, एसे अण० १७ पर छन परगट मारे नहीं काय पट कुडरूख देत कट सत समसेरी है, धरजीने मनवट उनमूले मद अटकायासे

रघाट घाँ, शिवपुर घाट आंणी नहीं मद आठ निरम-
नेम है, घन घर मजी म्याट परदत्त मेंय पाट आणे
हीं अम घाट सुर अन्त मीम है, दुश्मन दीवी दाट
या दया मणा माट थिर करें नरघाट हीयो ठाठो हेम
- हममा मजाना म्याट कर्म रिपु देवै काट ऐमा अण-
तार माफ़ मेरी मगन्लीन है. २८. मह्द मेट दीवी मंक
कीर्ही कारी एक एक पर जीनें मन चक रेद दीवी री-
सई, पर हर काम एक करै नांही फेर कंम रागद्वेष करी
रंक काट दे कर्मीनई, अरीनणो न्योवै अंक टालो नहीं
कटंक देवहै मुग मटंक नरेजगदीमई, अंजे मंजे नहीं
कंम मोहै जेन रूप कंम नमो मई नर नार अेमे मुनी
ईमई. ३०. मनरिन हिय शुद्ध बहुन धर मदै शुद्ध गीर
जेन मजी गिद्ध ननना लिटायनें, दिलमाक जेन रूप नि-
रनन शुद्धनिध विधा नवै चिव विच आटम उठायनें,
नार हैन मोह नर कार नहीं होवे कद हेन कया करै
हद करनी है करायनें, पूर्जीने परम पद रिपुकर देनरद
रेन अनतार माफ़ू मंद्र निर नांवनें, ३०; धुमाई नीनर
काल करनीने नोइमान निद्धन्तर चन दान मुनी
नन जैन है. मना नहीं मनें मूट किनहीं मैं पाले
कृक मनि जैनवनी हर टाटे निरना होन है, अंतर्यी
[illegible] गोट करनिर ठोर ठोर जिनवर नमो जोर करन
[illegible] नन मुनन नांहि और मंजा करै नांहि ऐमे
[illegible] हनमी ईडोन है, ३१ जगननी नजी बुद्ध
[illegible] बुद्ध नर बने नमोरद अमंडन होन है,
[illegible] नीन मीठो जेन रूप शुभ मंनवान नहनीक
[illegible] रूपि रीन मनजीनु परी
[illegible] होन है, [illegible] कर होन है, जिनके उ-

लग्यो ज्ञान रंगलाल चालै श्रपनणी चाल सखरा लेवै सयाल नखरनि कंदणं, अनोपम ज्ञान आल खेलत उत्तम ख्याल वेग शिव करे भाल नमी नाभिनंदणं, घण दढ घाव घाल पापरिपु दैतपाल ऐसा अणगार ताकूं वार२वंदणं, २३ अङ्के धरी उछरंग सुंदरी को तजे संग भाव नहीं करे भंग कुल सोभ करसी, आगम अरथ अंग चित मांहै धरे चंग ज्ञान जिसो तोय गंग दया मग दरसी, राचत सञ्जम रंग अरिहंत धरे अंग जोरावर करी जंग पाप पर हरसी, लीयां फिरे जैनलिंग रहे सदा एकरंग एसा अणगार इस वेग शिववरसी, २४, सिद्धान्त का वैणसुणी माया नज हुआ मुनी गिरवा यहोत गुनी अंगमें उल्लासता, भिन्न२ज्ञान भणी चोखा गुण लेतगुनी दया करतारे दुनी भला वैण भासता, हरखत पाप हनी घटमें अकल धणी, धारे जिन राजधणी दुरमनि ग्रासना, गीन नाद तुछ गिणी, याल दैतकाम भणी ऐसा अणगार एसे सुख लहै सासता, २५, उरसें गयो अन्धेर ग्रन्थरा सदीयी गेर फाहि नांहि धरै फेर सूर वीर सतमें, मन दढ जेममेर शत्रुअघ पर सेर हणत है हेर हेर मुनी जिन मन में, साही सत्त समसेर घोर काल लीयो घेर जमहूकूं कियो जेर चतुराई चित्तमें, भगवंन वैण भेर वजायत्त येर येर एसा अणगार इस गछै शिवगत में, २६, परम धरम पांम वरजत भाव वाम हणने हियारी हांम ओर तजे दांमकूं, गच्छत नगर गांम ठहरे नहीं एकठांम जतना सूं राखै जाम कामी करे कामकूं, घोर नार कीरी घांम तप करी टालै तांम निसदिन सिरनाम समरत सांमकूं, सूरपणे संगराम करीने सुधारे काम ऐसा अणगार थे सिधावै शिव धामकूं, २७, कुमन जं-

जीरकाट वहै शिवपुर वाट आंणै नहीं मद आठ निरमल नेम है, व्रत धर तजी खाट परदत्त सेवै पाट आणै नहीं अघ घाट सुर अन्त सीम है, दुरमत दीवी दाट मया दया तणा माट थिर करै नरथाट हीयो ठाढो हेम है क्षमता खजाना खाट कर्म रिपु देवै काट ऐसा अणगार ताकूं मेरी तसलीम है, २८, सहु मेट दीवी संक फीही कारी फक फक यर जीनें मन वक रेड दीवी रीसकूं, पर हर काम पक्र करै नांही फेर कंख रागद्वेष करी रंक काट दे कलीसकूं, अरीनणो खोवै अंक टालो नहीं करैटंक देनहै मुग तडंक जपैजगदीसकूं, अंजे मंजे नहीं अंग सोहै जेम दूध संग नमो सह नर नार ऐसे मुनी ईसकूं, २९, समकित हिय शुद्ध वहुत घट भई वुद्ध रीट जेम तजी रिद्ध ममता मिटायनें, दिलसाफ जेम दूध निरमल गुणनिध विद्या भणै विध विध आलस उडायनें, मार दैल मोह मद कार नहीं लोपे कद हेत कथा कहै हद कापी है कषायनें, पूजीनें परम पद रिपुकर देतरद ऐसा अणगार ताकूं वंदू सिर नांयबें, ३०; बुझाई भीतर झाल कापदीयो मोहजाल सिद्धन्तर चल ढाल खुली ज्ञान जोत है, माया नहीं राखै भूल किमही मैं योलै कूड भवि जीवतणी दूर टालै मिथ्या छोत है, अंगथी आलस छोड गांमपुर ठोर ठोर जिनवर तणो जोर करत उद्योत है, सुरत सुगत मांहि और यंछा करै नांहि ऐसे अणगार ताकूं हमारी दंडोत है, ३१ जगनरी तजी युद्ध आतमांसें करै युद्ध तार यानें भवोदद्ध अखंडत पोत है, सण जेम देतसीख मीठो जेम दूध ईख तंतवान तहतीक मिथ्या तम खोत है, रातदिन रूडी रीत प्रभुजीसुं धरी प्रीत गावै रूडा गुणगीत तज्या सब तोत है, विचरै ज-

[[illegible]]

॥ [illegible] ॥

[[illegible]]

[illegible]

२, बलदेवकी बाय सुणी कृष्णराय सखीयनसें जाय यह फुर माया, परणावो नेम कृष्ण बोलाएम सखीघरके पेम मन हुलसाया, किरसनकी बान किये परमान नेमीकूं आपके विलमाया, होलीमें फाग खेले घरके राग सब सखी लाग व्याह मनाया, उग्रसेण राय जोकी कीना लाय क्या जान सझाई हदभारी राजुलसी ना० ३, मिल छपन कोड़ जादवकी जोड़ नेमी बांध मोड रथपर चढिया, बांदे तोरण जाय सुण पशुवोंकी हाय दया चित्तमें लाय रथ फेर दिया, तजके संसार चढगये गिरनार सुमतीकूं धार सुधरस पीया कहे राजुलसती नवभवके पती तुम छोडो मती क्या गुना किया, मन छोडो हाथ मुझे लेवो साथ तुम दीनानाथ हो उपगारी राजुलसी नार० ४, बरसी दांन दिया बनमें संजम लीया काया सफल कीया अपणाजीया, धनराजुल नार संजमकूं धार रहे नेमि तार समझाय दिया, इंद्रियोंकूं जीत तज जगकी रीत प्रभूसूं प्रीत कर ज्ञान लिया, चोपन दिन जान प्रभु पहली आन लहे शिवथान शुद्ध कांम किया, कहे कनीराम भज आठूं याम प्रभूका नांम ले चितधारी राजुलसी नार दीवी० ५, इति पदं ॥

[श्रीपार्श्वनाथजीरी लावणी टेर अलखके लावणीमें,]

॥ पास जिन ऐसा हेहो पास जिन ऐसा देवोहो मया देव मेरा पास पास निनरटुं घरमें ध्यान सदा तेरा, टेर अश्वसेन हेराजा हेहो अश्वसेन राजा हेवो वटे नप धारी सकलकला गुण खान जिनों घर वामादे नारी, तीन ज्ञानोंसें हेहो तीन ज्ञानोंसें आये उदर मातारे सुपना दश और चार देख माता हरखी भारे राणी राजासें हेहो राणी

राजासें कहती सुपनानिण बेला पास पास नितरहूं घरूं में ध्यांन सदा तेरा १ टेर, वनारस नगरी हेहोव० हेहो प्रभु आप जनम लीया, चोसठ इंदर छपन कुमारी जनम महोछव कीया, नीलवरण काया हेहोनी० देखीनें हुलसे मेरा हीया, कमठ विडार नागकूं ताको धरणेंदर कीया, सबी मन मोहे होकांइ दरस पास केरा, पास० २, तीस वरसां लग हेहो तीस वरसां लग प्रभु रहे घरमांही, वरसी दांन प्रभु देकर लीनो संजम सुखदाई, बाईस परीसा हेहोबा० प्रभु खचिन लाये, तप जप करणी करके प्रभु केवल पद पाये, करम खपाकर दिया शिवपुरमें डेरा पास० ३, दासकी अरजी हेहोदा०, प्रभु सुणियो जिन राया, किरपा करके दीजो मुझकूं शिवरूपी माया, जिनंद गुणगाया हेहोजि० सब काहूके मन भाया, ओर देव सब दिया छोड़ पारस चित लाया, कनीराम कहता प्रभु मेटो भवफेरा, पास० ४, इति पदं ॥

[लावणी दूसरी नेमनाथजीकी]

॥ प्रभुनेमनाथ तजगये साथ मेंकहुं कयलग बात सखी कहै राजुलनार मेरे जिनसें प्यार में जाऊं नेमके साथ सखी, टेर, थे आठ भवोंके सजन मेरे करगये गमन उत पात सखी, ना आप आये ना पाती लिखीना रखी कुछ लोकात सखी, हुये बारेमास करे सबी हास जा दिनसें चढी बरानसखी, फेरोंकी बार तजगये प्यार मन मार मार पिसनात सखी, चुप कहांसें रहुं, दुखकासे कहूं मन देखत थान लजान सखी, कहै राजुलनार मेरे जिणसें प्यार में जाऊं नेमके साथ सखी, १, मोहोकी झडी में खुनी पडी थी जोबनमें मदमात सखी, अब आया

सुझा मेरे दिलकूं मुझा अब निसंक गिरिकूं जात सखी, रस्तेके बीच भव रहाकीच थी विर खारुत बरसात सखी, भीजे हैं चीर बरसे हैं नीर सती चीर सुकाणे जात सखी रहनेम मुला ज्ञान ध्यान डुला यो देखे उघाडा गात सखी कहेरा० २ रह नेम बोल नहीं तेरे तोल है अदमुत रूप विख्यात सखी, घरमांही रहो फिर कांसुध हो सुख विलसो मेरे साथ सखी, कहे सती पिछाण सुणहो सुजाण तेरे दिलकूं तूं समझातो जती, संजमकूं धार फिर वंछे नार धिक्कार तुझे है सात जती, सुण सती बैण खुलगये नैण रहनेम ठिकाणे आत सखी राजु० ३, रहनेमि धीर होगये धीर तैं तार दिया मुझ मात सखी केवल उपाय शिवपुरकुं जाय करगये नांम विख्यात सखी, सती भव सुधार रहनेमि तार हुई ब्रह्मरूप साक्षात सखी, दाखला दिया धन उसका जिया सुण समझे उत्तम जात सखी, बीकानेर गुलजार सेहर ये राम मुनि छंद गात सखी राजु० ४, इति पदं ॥

[अथ श्रीसीमंधर स्वामीका स्तवन लिख्यते]

॥ महा विदेहमें चोथो आरो जिहां विराजो आप भरत क्षेत्रमें करूंजीवंदना जप सुं थांरोजाप मैं तो दरसणकरसूंजी मैं तो सेवा करसूंजी म्हांरेरे सतगुरूजीरीमैंतो सेवा करसूंजी, १, सेवाकरसुं दरशणकरसुं जिकोदि हाडो धन्न, कयातो जांणे केवल ज्ञानी, के जांणे मारोमन्न म्हैंतोद० २, हंस घणादि नारी हूंनी मुझहि पडेमें तेज आवणरी भारी आसंग होती, तो इन करतो जेज म्हैंतोद०३, स्वामीजीतो माहरो साहब म्हैं स्वामीजीरोदास वसरह्या मारे हियडे भीतर ज्यूं फूलनमें वास, म्हैंतोद०, ४, स्वामी

जीरी सूरत मूरत वाली लागे मोरा निर गंनारा नैणन प्यांरे, पाणी मीठी होय म्हेंतोद० ५, स्वामी जीतो सोधन वरणा दिप २ करती देह नैणा दीठां लागे मीठा ज्यांरीकर सुंसेव, म्हेंनोद० ६, अंतर जामीरा वारणा लेऊं वाडामें लगवार करुणा सागर किरपाकी जो भवसागरथी तार म्हेंतोद० ७, स्वामीजीतो म्हारे मनमें, व्याप्या सगली देह, रूंम रूंममें वस रह्यामारे, ज्युं वादलमें मेह, म्हेंतोद० ८, दूर दिसावर म्हारा साहब, मिलियां चावे मन्न, पपइयो पाणीनें तरसे जूंतरसे म्हारो मन्न, म्हेंतोद० ९, म्हारो मनडो आवे जावे, जहां बैठा जगनाथ, भाग्वर भीतर कोही न गिणुं, नहीं गिणुं दिनरात, म्हेंतोद० १०, स्वामीजी तो मिलियां पीछे, रंगमें पडगयो पास, स्वामी जीरे आगल करता, सुणसी सब अरदास, म्हेंतोद० ११, म्हारेनें जिनवरजी सरखा नहीं कोइ जगमें देव, जिनवरजी तो साचा साहब ज्यांरीकरसुं सेव म्हेंतोद० १२, ओर देव म्हारे दाय न आवै, जीता रागनें द्वेष ऋषि रायचंद इम कहे, केवल ज्ञानी एक म्हेंतोद० १३, समत अठारे वरस छतीसे रेवाड रह्या च्यार रात सीमंधर मिंदरजी आगे जोड्या दोनूं हाथ म्हेंतोद० १४, इति पदं ॥

[अथ सीमंधरजीरो दूसरो स्तवन लिख्यते]

॥ श्रीसीमंधरसांम इकचित वंदू हो वेकर जोडनें पूरबदेसे हो प्रभुजी परवखा नगरी पुंडरपुर सुख ठाम वेकर जोडी हो श्रावक वीनवै श्रीसीमंधर स्वाम इकचित वंदू हो वेकर जोडनें, १, चौंतीस अतिशय हो प्रभुजी शोभता वाणीपन रे ऊपर वीश एक सहस लक्षण हो प्रभुजी आगला जीता रागनेंरीस इकचि० २, काया

गाया, सुण प्यारे जद शीने [illegible]
ही आया, [मिला,] देवता तुरन्त [illegible]
पणाये, वेस्याके संगही [illegible]
लगेल बूरण वेस्या तांई नाह [illegible]
जिमकेज० ७, वेस्या को नो [illegible]
पहोन पिस्ताप, अब कन्या के [illegible]
न भाय, कन्या मोल जो [illegible]
माह, पत्ता सेठजी उस कन्या [illegible]
सुण प्यारे पत्ताजी कहै [illegible]
प्यारे पापक कहै मोनइया [illegible]
प्यारे एक लाख मोन इया [illegible]
कन्याकूं सेठ लेजारे [illegible]
पपन उपारे, आधार सेठ [illegible]
आपक मेरे धरमका है [illegible]
पाला जीकूं लेकर सेठ [illegible] र
उस पापककूं सेठनें तुरत [illegible] पा
कुटम कर्पाला सेठनें तुरत [illegible] ले प-
कर मांली मपकूं पपन [illegible] मुनीकूं,
कूं पूरी सेठ पणाई, [illegible] वण लगी
खुसी जदलाई, सुन [illegible] जोग मो मप
मांही, [मिला,] मांनकरी [illegible] एक जोग नहीं
माला, सुन ऊपर पंद्र [illegible] सुण प्यारे मुनि-
पत्ता सेठजी आया [illegible] ला सुण प्यारे
जिनकेज० ३ ऊनो [illegible] प्यारे पीछा मो
इहां ले आप, ऊनें [illegible]] पंद्रपालाजी
पोपाप, ऊनो पा [illegible] लो निज मांही,
पाय, धरम सिपाई [illegible] उपगारी ~.

धाय, सुण प्यारे खोले हे पिनाका मैल चरण हाथोंका, सुण प्यारे मैल खोलने छूटाकेस माथाका, सुण प्यारे माथासें केस लटका दो दो हाथोंका झेला, घन्नाजी केस सवारा, आंख्या आडे सुंटारा, सेठाणी पाप विचारा, धनदत्तजी सामाभारा, ये मेरी सोकडली होगा मने निकाले घर सुंवार, जिनकेज० ८, सेठसिधाया गांम अजी, सेठाणी मन उठियो पाप, रीस करी चंदनवाला पर, मूंढा पर दी एक दो थाप, पकड कतरणी माथो मूंड्यो, सभी केस कर डाल्या साफ, हाथ हथकडी पांवोंमें बेडी मूंद दई कोठामें आप, सुण, प्यारे चंदणवालाकूं मूंदी कोठा मांही, सुण प्यारे सेठाणी तो वा अपणेपी हरसि धाई, सुण प्यारे चंदणवाला पर एसी आफत आई, [झेला], म्हें केसी करी कमाई,आ पूर्व जनमके मांही, म्हेंथी राजाकी बाई, अब हाटोहाट विकाई, जेसा बांधा जेसा भोगे जीव, अब क्यूं झांके आल जंजाल, जिनकेज० ९, घणाजी वांसें वैरमें बांध्यो, घणाजी वोकूं दुखी करा वैर भाव ये जीव समझले, येतो टाला नहीं टरा, महा अघोरमें पाप कीया था वृक्ष सताया हराहरा, रतन हींडोलेमें झूलेथी वहतो सुख सब रखा धरा, सुण प्यारे चंदनबालाजी अपणा मन समझाती सुण प्यारे करने लागों पचखाण ज्ञान गुण गाती, सुण प्यारे, इस संकटमें वो जरान हींयभरानी, [झेला,] जद सेठ गांमसे आया, घरताला जडिया पाया, जद ताला सेठ खोलाया पाडोसण हाल सुनाया, सेठाणी तो पीहर गई चंदणबाला पर कर तकरार, जिनकेज० १०, माहावीर सामी प्रभूजी एसो अभिग्रह लीनो धार तेरा जोग मिले इक ठोडां, जिनके हाथसें वहरूं अहार, रा-

जाकीतो कन्या होवै, मोल विकाणी बीच बजार, हाथ हथकडी पांवों बेडी, सिर मूंडा हो एसी नार, सुण प्यारे काछडो लग्यो तेलेको पारणो होवै, सुण प्यारे सूपडे आहार उडदोंका बाकला जोवै सुण प्यारे सुद्ध परणामें देहलीमें बैठी रोवै, एक तो पग देहली माई, इक पग बाहर हो भाई, आ अैसी मिले जोगवाई, नहीं मिले तो लेणो नांई: इतना जोग नहीं जो मिले छव महीना मुग तें लेसूं आहार जिनकेज० ११, धनजी कहै चंदण-बाला तेलेका पारना ले तूं कर, हाजर है उडदोका बाकला, बिन बरतण लाउं क्यों कर, आमा सामा लग्या देखनें, और बरतण नहीं आयो निजर पड्यो सूपडो देख्यो धनजी लिया बाकला उसमें भर सुण प्यारे सूपडे मांहे उडदोंका बाकला लीना सुण प्यारे धन्नाजी जाके चंदणबालाकूं दीना, सुण प्यारे, चंदणबाला हाथोंमें सूपडा लीना, [झेला,] बंधन तेरा तोडाऊ जाकर लुहारकूं लांऊ मेरे मनमें मैं पिस्ताउं, क्या गुण मूलाका गाऊं, महावीर स्वामी प्रभु फरते गोचरी आनिकले धनजीके द्वार जिनकेज० १२, आपा देख्या सती मुनीकूं, मन इनका हो गया हरिया, आहार बहरावण लगी मुनीकूं महा सती सुंदर तिरिया, और जोग तो सब मिला पिण नेणोंमें जल नहीं भरिया, एक जोग नहीं मिला जिणीसुं वीर प्रभू पाछा फिरिया, सुण प्यारे मुनिराज फिर गया आहार आप नहीं लीना सुण प्यारे चंदनबाला जिस घडी रोदन कीना सुण प्यारे पीछा तो फिरो म्हाराज यूं हेला दीना, [झेला,] चंदणबालाजी रोई, वे नैण बरस रहे दोई, पीछा तो फिरो निर मोही, मारे तो संको नहीं सोई, दयावंत पर उपगारी भगवान

जाकीनो कन्या होवे, मोल विकाणी बीच बजार, हाथ हथकडी पांवों बेडी, सिर मूंडा हो एसी नार, सुण प्यारे काछटो लग्यो तेलेको पारणो होवे, सुण प्यारे सूपडे आहार उडदोंका बाकला जोवे सुण प्यारे सूद्ध परणामें देहलीमें बैठी रोवे, एक तो पग देहली माइं, इक पग बाहर हो भाई, आ अैसी मिले जोगवाई, नहीं मिले तो लेणो नांई: इतना जोग नहीं जो मिल छव महीना भुग ते लेसूं आहार जिनकेज० ११, धनजी कहे चंदण-बाला तेलेका पारना ले तूं कर, हाजर है उडदोका बा-कला, बिन बरतण लाउं क्यों कर, आमा सामा लग्या देखनें, ओर बरतण नहीं आयो निजर पड्यो सूपडो देख्यो धनजी लिया बाकला उसमें भर सुण प्यारे सू-पडे मांहे उडदोंका बाकला लीना सुण प्यारे धन्नाजी जाके चंदणबालाकूं दीना, सुण प्यारे, चंदणबाला हा-थोंमें सूपडा लीना, [झेला,] बंधन तेरा तोडाऊ जाकर लुहारकूं लाऊं मेरे मनमें मैं बिस्ताउं, क्या गुण मूलाका गाऊं, महावीर स्वामी प्रभु करतें गोचरी आनिकले ध-नजीके द्वार जिनकेज० १२, आया देख्या सती मुनीकूं, मन इनका हो गया हरिया, आहार वहरावण लगी मुनीकूं महा सती सुंदर तिरिया, ओर जोग तो सब मिला पिण नेणोंमें जल नहीं भरिया, एक जोग नहीं मिला जिणीसुं वीर प्रभू पाछा फिरिया, सुण प्यारे मुनि-राज फिर गया आहार आप नहीं लीना सुण प्यारे चंदनबाला जिस घडी रोदन कीना सुण प्यारे पीछा तो फिरो म्हाराज यूं हेला दीना, [झेला,] चंदणबालाजी रोई, ये नेण बरस रहे दोई, पीछा तो फिरो निर मोही, मार तो संको नहीं सोई, दयावंत पर उपगारी भगवान

र्मे संघाती, म्हें मूलाका गुण गाती, मुझकूं नहीं कष्ट
नानी हुआ कैद पदवी पानी, सेठाणीकूं सेठ बुलाई
गई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आवत देखी
मूलाकूं चंदणबाला सांहमी दोडा, करी चंदना पडी चर-
णमें ऊमी भई हाथ न जोडा, तेरा गुन नहीं भूलूं माता
करमोंका बंधन तोडा, क्षमा धरममें धारन कीना राग
द्वेष सारा छोडा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी
सागर है, सुण प्यारे. अब करो पारणो तूं सब गुनकी आग-
रहै सुण प्यारे नगरीयाकोसंबी करदी उजागर है, झेला हुई
मनमें घणी खुसाली, जद मूलाके संग चाली, भोजनकी
पुरसी थाली, पारणो करो गुणवाली, कख्यो पारणो चंद-
णबाला धनजीकैघर मंगलाचार जिनकेज० १७, मोल
ओरा देवे मूला रतनोंका भरिया भंडार उछय चंदण-
बालाका मूलाकर रही बारमवार, बोही पायक ओर
योही बैस्या फेर आया धनजीकैद्वार, इस कन्याकूं मोल
लईमें इसधनपर मेरा इखत्यार सुण प्यारे पायक यै
धनजीकू वचन सुनाया, सुण प्यारे, ए रतनवर सिया
जिस पर मेरा दाया, सुण प्यारे इस कन्याकूं तो मेंई
जहरके लाया, झेला] मूलाक है बैस्या झूठी, तनें मिले न
कोडी फूटी, पायक तेरी किस्मत रूठी क्यूंपिये जहर-
की घूंटी, मूला ओर पायक बैस्या इन तीनोंके होरही
तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हलकारा राजका धन-
जीकैघर [illegible] ताप, छिपकरकै ऊभा हलकारा सब
[illegible] न लगाप, बैस्या ओर पायककूं पक-
[illegible] चोडी मांय, लगे पूछने राजा इनकूं
[illegible] लाप, सुण प्यारे, चंपा नगरीका
[illegible] बैची धनजीकै
[illegible] प्यारे,

धर्म्म संघाती, म्हें मूलाका गुण गाती, मुझकूं नहीं कष्ट घनाती हुआ कैद पदवी पानी, सेठाणीकूं सेठ बुलाई आई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आयत देखी मूलाकूं चंदणवाला सांहमी दोडा, करी वंदना पडी चरणमें ऊभी भई हाथ न जोडा, तेरा गुन नहीं मूलं माता करमोंका बंधन तोडा, क्षमा धरममें धारन कीना राग द्वेष सारा छोटा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी सागर है, सुण प्यारे. अब करो पारणो तूं सब गुनकी आगरहै सुण प्यारे नगरीयाकोसंमी करदी उजागर है, झेला हुई मनमें घणी खुसाली, जद मूलाके संग चाली, भोजनकी पुरसी थाली, पारणो करो गुणवाली, करो पारणो चंदणवाला घनजीकैघर मंगलाचार जिनकेज० १७, ब्लोल ओरा देवे मूला रतनोंका भरिया भंडार उदय चंदणवालाका मूलाकर रही मारमचार, योही पायक ओर योही वैस्या फेर आया घनजीकेद्वार, इस कन्याकूं मोल लईमें इसघनपर मेरा इखत्यार सुण प्यारे पायक ये घनजीकूं वचन सुनाया, सुण प्यारे, ए रतनवर सिया जिस पर मेरा दावा, सुण प्यारे इस कन्याकूं तो मेंहै जहरके लाया, झेला] मूलाक है वैस्या झूठी, तने मिले न कोडी फूटी, पायक तेरी किसमत रूठी पयूंपिये जहरकी घूंटी, मूला ओर पायक वैस्या इन तीनोंके होरही तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हलकारा राजका घनजीकैघर पहुंची आय, छिपकरके ऊभा हलकारा सब सुणी बात यह कान लगाय, वैस्या ओर पायककूं पकडके ले गया देख कचेडी मांय, लगे पूछने राजा इनकूं कैसें खडा किया है लाय, सुण प्यारे, चंपा नगरीका राजाजीकी धाई, सुण प्यारे, मैं हरलाया वैची घनजीकै

सतीकी सुणी पुकार, जिनंकज० २३, सुण करुणाका वचन फिर भगवान सती पर निजर पड़ी, देख रह्या भगवान सतीके दोनु नेणसे लगी झड़ी, जो धारासो जोग मिल गया आहार वहिराया उसी घड़ी, धन २ चंदणवाला महा सतीयोंमे आप हो सती वड़ी, सुण प्यारे उस वख्त सतीका देवन कारज सारा, सुण प्यारे उसी वख्त सती सिणगार एसा ले धारा, सुण प्यारे सिंहासण बैठी दांन हाथ पसारा [झेला] थोवांसुं दांन लयो देणे भगवान लगा है ल्यो देवता लगे है केणे, शुभ दान लगा है वेणे भला दान दिया भला दान दिया करे देवता जैजैकार जिनंकज० २४ साढाबारे कोड रतनोंकी विरखा हुई पणा सारा बाजा बजा देव दुदुभी ओर पुष्प वनका वृष्टि हुइ भारा पणा वान रूपा वरसाया खुसी हुई सोनया सारा उछला अपरंपार सतीके द्वार जाणे सब नरनारी सुण प्यारे भगवान अभिग्रह कीयो देवता जाणे सुण प्यारे सबके सुणनाहिनरे जाग बखाणे सुण प्यारे देवनाके कहणोंमे जाणे भव्य पिराणे, [झेला] राजाजी पाला आया वरे वडाहरगाम पाया मन मांहे अचरज लाया एसा क्या दांन दि-राया आनंदसे दरशणकरणे धनजीकेघरमवसंसार, जिनंकज० २५ चंदणवाला करो पारणा अपणा कारज सार दिया धन २ पुण्यी है वडभागन धनजीकानांमउ-जाल दिया, ह वड भागण कीना धनो अपणे कुलकूं तार दिया, राग द्वेष अहंकार इरखा चंदणवाला मार दिया सुणप्यारे चंदणवाला कहे अरजी एक सुणाऊं, सुणप्यारे पहली मेरी माताका दरशण पाऊं, सुण प्यारे दरशण कर पहली पीछे आहार पुकाऊं. [झेला.] माता है

धर्म्म संघाती, रहें मूलाका गुण गाती, सुझकूं नहीं कष्ट पतानी हुआ कैद पदवी पानी, सेठाणीकूं सेठ बुलाई आई मूला हो लाचार, जिनकेज० १६, आवत देखी मूलाकूं चंदणबाला सांहमी दोडा, करी वंदना पडी चरणामें ऊमी भई हाथ न जोडा, तेरा गुन नहीं भूलूं माता करमोंका बंधन तोडा, क्षमा धरममें धारन कीना राग द्वेप मारा छोडा, सुण प्यारे, मैं ओगण गारी तूं गुणकी सागर है, सुण प्यारे. अब करो पारणो तूं सब गुनकी आगर है सुण प्यारे नगरीयाकोसंबी करदी उजागर है, झेला हुई मनमें घणी खुसाली, जद मूलाके संग चाली, भोजनकी पुरसी थाली, पारणो करो गुणवाली, करयो पारणो चंदणबाला धनजीकैघर मंगलाचार जिनकेज० १७, खोल ओरा देखे मूला रतनोंका भरिया भंडार उछव चंदणबालाका मूलाकर रही वारमवार, योही पायक ओर वोही वैस्या फेर आया धनजीकेद्वार, इस कन्याकूं मोल लईमें इसधनपर मेरा इखत्यार सुण प्यारे पायक यें धनजीकूं वचन सुनाया, सुण प्यारे, ए रतनघर लिया जिस पर मेरा दावा, सुण प्यारे इस कन्याकूं तो मेंई जहरके लाया, झेला] मूलाके है वैस्या झूठी, तनें मिले न कोडी फूटी, पायक तेरी किस्मत रूठी क्यूंपिये जहरकी घूंटी, मूला ओर पायक वैस्या इन तीनोंके होरही तकरार, जिनकेज० १८, इतनेमें हलकारा राजका धनजीकैघर पहुंचो आय, छिपकरके ऊभा हलकारा सब सुणी बात यह कान लगाय, वैस्या ओर पायककूं पकडके ले गया देग्व कचेंडी मांय, लगे पूछने राजा इनकूं केंमें झगडा किया है हाय, सुण प्यारे, चंपा नगरीका राजाजीकी धार, सुण प्यारे, मैं हरलाया वैची धनजीके

ताई, सुणप्यारे, पायक राजाकूं एसी घात सुणाई, [झेला,] कन्या भाणेजी हमारी, पायक आसंग क्या धारी, इतनेमें भीड भई भारी, गई वैस्या निजर चोरारी पायक अपणो ओसर देखके निजर चोर कै भग गयो वार, जिनकेज० १९, दधिवाहन राजाजी पाछा आया है चंपा नगरी, नहीं राणी नहीं पुत्री महलमें भूप करी चिंता जबरी, राजाजी परजाकूं कहे अब बात सुणो परजासगरी, म्हारो दुखतो भूल गयो पिण थांरी घणी चिंता लगरी, सुण प्यारे, नहीं मेरी चंदणबाला नहीं मेरी राणी, सुण प्यारे, वो गई किधर थेयी कोई जाती जाणी सुण प्यारे परजा कहे राजा राणीकी खबर कराणी, [झेला,] एक सेट कहे चिठी आई, राजाकूं वांच सुणाई, धन चंदणबालाबाई, है नगरकोसंबीमांही, चंदनबालाजीके हाथ भगवान दान बहलो ततकार जिनकेज० २०, चंदणबाला दान दियो आ खबर पोहचगई बडी २ दूर, दधिवाहनराजा बोला, कन्यासुंमिलणो जाय जरूर, नगरकोशांबी आयाराजा हरख हुआ मनमें भरपूर, जाय मिला पुत्रीसें चंदणबालाके सुखवरसे नूर, सुण प्यारे, पुत्रीको देख राजाकोहीयो भर आयो सुण प्यारे, गदगद वाणी हो गई नैणजलछायो, सुण प्यारे, राजा कहे पुत्री अब जीव सुख पायो, [झेला,] सुण चंदणबाला प्यारी, पदमावती माता थारी, थे सांमल रहीके न्यारी, सोसारी बात बतारी, वर्त्तमान बरतोसो पुत्री राजाकहे कहो ततकार जिनकेज० २१, पुत्री कहे सुणो पिताजी होणहार है समरथवान, आप कठे हूं कठे मेरीमातानें तजदिया वनमें प्राण, बीच बजारे हूं बेचाणी कठे रह्यो यो मांन गुमान धन्ना सेठ पुत्री कर

लापा घणो वधायो म्हारो मांन सुण प्यारे राजा पुत्रीसें सुणी हकीगत सारी, सुणप्यारे, राजा कहे चंपापुरीकूं चलो मेरी पियारी सुणप्यारे पुत्री राजासें एसी अरज-गुजारी, [झेला,] में एसो अभि ग्रहलीनो, संसार सवी तज दीनो, ओ जोग मिल्यो रंगभीनो, म्हारो मन में दृढकीनो, जद केवल भगवनकूं ऊपजै जद में लूंगा संज-मभार, जिनके ज० २२, धन्ना सेठजी धनका थेला, भर राजाकी भेट करी, चंदण बाला मिली पितासें, मनकी बातें कही सगरी, धन्य भाग मिलगई पितासें म्हारे मन एसी लगरी, दधिवाहन राजाजी पीछा आय गया चंपानगरी सुणप्यारे, राजाजी कहै चिंताथी म्हारे मनमें सुणप्यारे राणीकी चिंता घणी लगी थी तनमें, सुण-प्यारे पुत्रीसें मिला जब चिंता मिटगई छिनमें, [झेला,] पुत्री तो हूई वडभागी, वैरागमें इछालागी संसार तुरत जिन त्यागी धन पिरालय दया जागी, दधिवाहन राजा कहै पुत्री मातपिताकूं दिया उजार जिनके ज० २३, बारा वरस साडाछव महीना छद मस्त भगवांन रया इझारे वर्ष पचवीस दिन इतना तपस्या में वीत गया, इझारा मास उगणीस दिनोंका इतरा आप पारणा कीया, फिर केवल भगवानकूं उपजा घणा जीवांकूं तार दिया, सुणप्यारे, चंदण बाला भगवानके लागी चरणा, सुण-प्यारे मोहे दिक्षादो म्हाराज देर नहीं करणा, सुणप्यारे संसार छोड में लीया आपका सरणा, [झेला,] दीक्षा लै जनम सुधारा, ये पंच माहा व्रत धारा, सुत्तरकी रीतसें पारा, महा सनीज कारज सारा, छत्तीस हजार सलोनें चंदण बालासें लीया संजमभार जिनके ज० २४, उग-णीसें गुण चास साल भादू महीना एकम बुधवार, सु-

नारी सुणज्यार पायक राजाके एसी यात सुणाई,
[झेला] कन्या माताका रुपाणी पायक आसंग कया
भारी उनसमें भीड भइ भारी गई वेस्या निजर चोरारी
पायक अपणा धामर इसके निजर चोर के भग गयो
वार जिनकेज० २० दधिवाहन राजाजी पाछा आया
हे नपा नगरी नहीं राणी नहीं दीखी महलमें चुप करी
चिंता नरवर राजाजी दरबार करे अब वात सुणो पर-
जासमरा इन्यांरी देवता अब गयो पिण धांरी घणी
चिंता लागी मण प्यारे तब मरी चंदणवाला नहीं
मेरी रांणी मण प्यारे यो गइ किस येथी कोई जाती
जाणी सुण प्यारे परजा कहे राजा राणीकी खबर क-
राणी [झेला] पर भव रख जिर्म आई राजाकूं वांच
सुणाइ तब चंदणवालाबाइ हे नगरकोसंघीमांही,
चंदनवालाजीके सार भगवान दान बहरयो नवकार जि-
नकेज० २० चंदणबाला दान दिया आ खबर पोहचगई
वहाँ हे डर दधिवाहनराजा बोला कन्यामुंमिलणी
जाय जरुर नगरकोशोवा आयाराजा हरख हुआ
मनम अपार जाय मिला पद्मासें चंदणवालाके मुखवरसे
नर, सुण प्यारे पुत्रीको देख राजाकोहीयो भर आयो
सुण प्यारे गदगद वाणी हो गई नैणजलछायो, सुण
प्यारे राजा कहे पुत्री अब जीव सुख पायो, [झेला,] सुण
चंदणवाला प्यारी, पदमावती माता थारी, थे सांमल
रहीके न्यारी सांमाची वात बनारी वर्त्तमान वरतोसो
पुत्री राजाकहे कहो नवकार जिनकेज० २१, पुत्री कहे
सुणो पिताजी होणहार है समरथवान, आप कठे हूं
कठे मेरीमातानें तजदिया वनमें प्राण, बीच बजारे हूं
वेचाणी कठे रह्यो यो मांन गुमान भला सेठ पुत्री कर

लाया घणो वधायो म्हारो मांन सुण प्यारे राजा पुत्रीसें सुणी हकीगत सारी, सुणप्यारे, राजा कहे चंपापुरीकूं चलो मेरी पियारी सुणप्यारे पुत्री राजासें एसी अरज-गुजारी, [झेला,] में एसो अभि ग्रहलीनो, संसार सवी तज दीनो, ओ जोग मिल्यो रंगभीनो, म्हारो मन में दृढकीनो, जद केवल भगवनकूं ऊपजे जद में लूंगा संज-मभार, जिनके ज० २२, धन्ना सेठजी धनका थेला, भर राजाकी भेट करी, चंदण वाला मिली पितासें, मनकी वातें कही सगरी, धन्य भाग मिलगई पितासें म्हारे मन एसी लगरी, दधिवाहन राजाजी पीछा आय गया चंपानगरी सुणप्यारे, राजाजी कहे चिंताथी म्हारे मनमें सुणप्यारे राणीकी चिंता घणी लगी थी तनमें, सुण-प्यारे पुत्रीसें मिला जब चिंता मिटगई छिनमें, [झेला,] पुत्री तो हुई वडभागी, वैरागमें इछालागी संसार तुरत जिन त्यागी धन पिरालम दया जागी, दधिवाहन राजा कहे पुत्री मातपिताकूं दिया उजार जिनके ज० २३, वारा वरस साडाछव महीना छद मसत भगवांन रया इग्यारे वर्ष पचवीस दिन इतना तपस्या में वीत गया, इग्यारा मास उगणीस दिनोंका इतरा आप पारणा कीया, फिर केवल भगवानकूं उपजा घणा जीवांकूं तार दिया, सुणप्यारे, चंदण वाला भगवानके लागी चरणा, सुण-प्यारे मोहे दिक्षादो म्हाराज देर नहीं करणा, सुणप्यारे संसार छोड में लीया आपका सरणा, [झेला,] दीक्षा लै जनम सुधारा, ये पंच माहा व्रत धारा, सुत्तरकी रीतसें पारा, महा मनोज कारज सारा, छत्तीस हजार सत्यों नें चंदण वालासें लीया संजमभार जिनके ज० २४, उग-णीसे गुण चास साल भादू महीना एकम बुधवार, सु-

रतरांम विरामण गाया चंदण बालाजीका अधकार, पांच महा व्रतधारी मुनीकूं करूं वंदणा वारमवार, धन जायदकी रत्न भोमका जैन धरमका भरा भंडार, सुणप्यारे अठारे पापोंकूं त्यागे बडा वो त्यागी, सुणप्यारे ए पंच महाव्रत पाले वोही वैरागी, सुणप्यारे ये बाईस परीसा सहै सोही वडभागी, [झेला,]ये महासती वडभागन, चंदण बाला वैरागन, यो तवन सतीको धन धन, गुनीपेममें कियो वरनन, धनवो हे जैन धरमकूं धार लेवै अपणा जनम सुधार जिनके ज० २५, इति पदं ॥

[अथ वैराग्य लावणी लिख्यते]

॥ देखत भूली ख्याल तमासा बाजी गरका है खलका यो संसार धूं वेंसा बादल ओस बूंद बिजली चमका, [टेर.] सतगुरु सीखतूं मांने क्युंनी जनम मरणका, दुख मिटना, दांनशील तपभाव आराधो, संसार समदका फंद कटना, संवर पोसा करो सामायक सुत्रसिद्धंतपरचित्त धरता, वखाण वांणी सुणोरे सरधा पाप घटे जब पुन्य वधता, तवनसिझायां बोलो थोकडा नउं पदारथ मुखकरता, जांणपणे आ समकित फरस्यां पापकरमसुं रहे डरता इती बुद्ध जो नहीं हुवे तो नोकार मंत्रहिरदे धरता, भाव चढायां भवने छेदे मन वंछित सब सिद्ध करता [उडावणी] चवदे पूरव विद्यासारी, भगवंत भाख्यो यो अधिकारी, अनंत तिरयंच तिरिया नरनारी, सरधा शुद्ध पांमे हितकारी, नोकार जप्यां उंचीगत पांमें सिवरमणी सुख है तबका, यो संसार धुं० १, पृथवी अप या तेऊ वाऊ बनस्पती या त्रस काया, छऊं कायानें मार रह्यो है आरंभ कर २ हरखाया, छेदन भे-

दन फरस आसना गालीदे दे धमकाया, जिकेजिकेनें दुःख तूं देवै घेर जीवासुं विसाया, झुठ चोरी मैथुन सेवा परनारीसुं चिलमाया, स्वाद भोग सुखरसना पोखी परभव चिंता नहीं लाया, कोडी २ माया जोडी लालच लोभमें बहु छाया, आसा तृष्णा मेटी नांही करता है माया माया, (उड़ावणी) कुड कपट छल छेदर करता कोडीमटे तूं जा लडता, जोट २ घरमें धन धरता भायां कुटुंबमें खोटा करता, जनममरण ये बुरा जगनमें ज्यूं कंपैजीया हमका, यो संसार० २, क्रोधमान अहंकार भरा है, रागद्वेषमें रंगराता, जालफासी दगारे फटका अनेक हुन्नर तूं पहछाना, मैणा मोसा देवै लोकांनें सावैनें कुडा करता, वडो आदमी वजे लोकांमें मिथ्यात तुझकों सुहावता, पाप अठारे स्वच्छ बांधे मोह करममें मदमाता, अनेक वस्त तूं लेवें करावे पापकी पोट माथे धरता, मातपिता सब कुटुंब कबीला बेटा लुगाई तेरा धन खाता, पापकरम तूं बांधे एकलो नरक निगोदमें पडजाना, [उड़ावणी] सब मुतल्बकी मीत सगाई, बिना सवारथ करै लडाई, घणा वल्लभ जो घाले घाई, पापउदे फेर नहीं कोई साई, सागर पल्योपम होता आउखा खूट जाय आतम दमका योसंसार० ३, म्हारा म्हारा कररह्यो मूरख थारा सब देखणका है, कनककामनी कुटमकबीला जमीघर देखणका है, ज्यूंवटाउ वासो लियो पंखी पंथपयाणा है, खरची होतो खारे मूरख आखर परभव जाणा है, मातपिता सब कुटम कबीला मिलीया जूं अयाणा है, विछड जाय सब जुआ २ मोहजाल मुरझाणा है, जरदा सुपारी खानपांनमें मुंडां दिन टलाणा है, खावै पीवै गप्पां मारे योंही जनम गमाणा है [उड़ा-

आनमा ज्ञानीवचन पकडो रस्ता, नकसी हु० १, पाच प्रकारे काम भोगनूं सेवे सेवावै सारा करना, शब्दवरण गंधरूप फरसनूं जहर न्यायकं क्यूं मरता, आछी भूंडी कथा लोकांरी करनां आनम भारी करना, केने मरावै केने विसरावै हरख २ आनंद धरना, आंयवंछे ओर धंबूल पावै. आंयरस मुन्किम पडता, रोग सोग दुख कलह दालिदर दुखमें दुख पैदा करता, [उडावणी] धारी म्हारी करतां दिन जावै, आमा सामा भाठा भिडावै. सुखमें दुखतूं धैर घलावै. ज्यूं दीपकमें पडे पतंगा धेनन दुरगति क्यूं पडना, नकसी० २, हूंनरो तूं क्या मरावै, अणहूंनका विसराना है, पुन्यपाप जो यांधा जीवनें वैसाही फल पाना है, किणनें माया दीवी भोगणने कोई रुखवाली करना है, जस अपजस जो लिखा करममें जैसा करज धनाना है, पाप अठारे सेंधाजीवरे इणमें समही फसना है, स्वाद वाद सुखकांम भोगमें कूचापुलोंका करना है, [उडावणी] रुख २ पाप यांधे तूं सोरा, उदे आयां भोगंना दोरा, लखचोरासी भुगने फोडा, आकधोर ओर तुंवा निंबोली पापफल कडवा लगना, नकसी० ३, विपाक सूत्रनें मिरगा लोढो देखो पाप उदै आया, हाथ पांव मुख आकार नांही राजा घर वेटा जाया, जीमण पाणी एकही सुरमें झाडा नाडा उणमें लाया, जों नदीको टोट सुमारे इनखा स्वेडन धकाया, नरक सरीखा दुख जिनभाख्या मलमूत्रमें लपट रहा, अत्यंत दुर्गंध जगा गंधावै भवरे मांही इकारहा, [उडावणी] गाडी भरियो आहार करावै, उण भवरेमें कोई पन जावै, जो जावै तो मुरछा आवै, विचित्रगति करमोंकी भाखी ज्ञानीवचन तूं रहडरता, नकसी० ४, मो-

जोयकै, ज्ञानी देयपिण इम कह्यो तिणमें मन जाणरे नि-
लभर झूटकै, प्राण पाराया तूं मती लूंटकै, जैसुग्व पावै
धारे जीवनो, तिण २ आऊग्वो आवे छे ग्वूटकै, तिण २
को कर जायसी छुटकै, चेनहो चेनहो मानवी ३, सुग्वम
भाव सुणावै सलकै, आदि अनादरो लोनहीं अंतकै,
भव २ मांहे तूं मटकियो, नवघाटी उलांघीनें आयो दु-
र्लभ मांनव भव पायकै, ऊंचनीच कुल ऊपनो सुनरमें
भाली घणी घातकै, ओ म्हारो बापनें बाम्हारी मायकै,
मोह मायामें फस रह्यो, मोह मिल्या घणा रागने छेपकै,
लारली उतपत इण विधतूं देग्वकै, चेनहो चेनहो मांनवी
४, नरनें नारीनो छुवोरे संजोगकै, भोगवतां संसारना
भोगकै, उतपत जोय जीव आंपणी, विस्तार भाग्वसी
पैररे मांहिकै, जिण जगामें तूं ऊपनो आयकै, सांकड
सरीररो थांभणो, नीचो है मस्तक ऊंचा है पायकै, हार्नी
कने है गोड़ समायकै, नेत्र कने रहै मूठियां, आगनें
ऊपनो उदरमझार शुक निज धरणरो कीयोनें आहारकै,
अपनो सेरी करे रे हजारकै, धार रे धार दयाधर्म्म मा-
रकै, चेनहो चेनहो मानवी ५, अशुचि जगामें ऊपनो
जीयकै, साडेरो नवमास भणी न्यायकै, धमधेट ज्यूं
लटकी रयो, मातानें छुधाकै वेटानें भुग्वकै, निसदिन
भोगियो है घणो दुग्वकै, सुत्र आचारांगमें कह्यो, गर-
भनें दुग्वरो कियोरे निचोड़कै सुई सांमटी मादामान
पगोदकै, अगनवरण कीयी आकरी, पांचदीयां मेलो
सकल सारीरकै, मेरु गरभमें हुवै अठगुणी पीडकै, सुत-
रमें भाग्वगया महावीरकै, चेतो चेनहो मानवी ६, सी-
झारे पालक बामदे टाटकै, पयदे चोयरे नांग्वियो घाटकै,
अठगुणी वेदनागरभमें जनमतां तिन कोडगुणी घटे

याला रूपेराथालकै, मोंहगी मिठाईनें चावल दालकै, भोजन नव २ भांतरां, गींधीयो दाखपाणी पीयो ठारकै, मनवांरा घले पेलीजी पारकै, वसतमंगावै निका तुरत तइयारकै, कमी नहीं कोई यानरी, केलगर्भ हुंनी ज्यांरी कायकै, बादल जिमगई चिलायकै, सुख जो भोगीयाहै भरपूरकै, देही ज्यांरी देखतां हुयगई धूडकै, चेतहो चेतहो मानवी १२, सोवनरा सिंहासण हींडोलाजी खाटकै, विरदावली देवेछै चारण भाटकै, गिदरा दुले चाधुरमांनी ओटकै, जां नर नरानें काल करगयो चोटकै, पोख्या नरक दुवारे घूजै होठकै, लीजो सील दयानणी ओटकै, चोवाने चंदण तेल चंपेलकै, नारी मिली जांणे मोहन वेलकै, चालती चालै हंसगज गेलकै, भरतार जोडी मिली तो भणी कंचनवरणी हुती ज्यांरी देहकै, निणमांहे थल जल होयगई खेहकै, प्रीतम पदमणीनें दे गयो छेहकै, साहिय राखता अधकोस नेहकै, कारमो जोयनकारमी देहकै, इमजांणी धरमसुं तूं राखजे नेहकै, चेतहो चेतहो मानवी १३, रमणी पिणराचरही संसारकै, नितनया करती सिणगारकै, इंद्रतणी जांणे अपछरा, दासी उभी रहती वे कर जोडकै, एक बुलावै तो दश आवे दोडकै, सेज बैठी रहती सुंदरी चावती बीडानें सुंघती फूलकै, कंतनें मालीजी वसमानकै, हुकम घरनें हलावती, येटा बहूनें कुटुंब परचारकै, लोपे नहीं कोई तेनी कारकै, पूरमलादेखोरे पुन्यपर कारकै, पांम्या सुख संसारना, नितनव करती कपडां रीज लूसकै, गहणांरा दब्या कपडांरी मंजूसकै, कामणीकनें गिणती नहीं इतीसदाई लीलविलासकै, एक दिन समान जाणती मासकै, तिण बाईरो निकल गयो सासकै, जाय मसाणामें कर-

तेना भरतारकै, जक्षरी जक्षामें गया, निजरा देखतां भोगवी नारकै, छवतो पुरुष एकया नारकै, सानोईज-णारो हुयोरे संहारकै, नरक गया घणा जावसी, परनारी रोमोटोरे पापकै, जीवनें जोग्यो परभव खरापकै, चेन-हो० १८, इसटी सांभल भगवननी वाणकै, केइयक घेनिया चतुर सुजाणकै, परनारी धुर परिहरे श्रावक व्रत लीयाछै धारकै, साचीजी पांमेछै समकित सारकै, पडि-क्कमणानें पोसाकरे, सूधीजी पालेछै जिनवर आणकै, तनेहुसी देवविमाणकै, चेनहो० १९, केइयक साधांरा करे गुणग्रामकै, केहीक करै दरसणसूं कामकै, केहीक वखाणसुणे सदा केहीक नहीं सकेछै आय पिणभावना राखेछै मनरे मांहिकै, तो पण गरज सरै घणी, केहीक छोड दिया घरवारकै, केईपक लीनोछै संजम भारकै, मुगत गया घणा जावसी, इम परुपियो श्रीवृद्धमानकै, शालभद्दरनें संभालो जो सुख विपाकमें चाल्योछै पा-ठकै, कुमर सुवाहू पांच्या पुन्यरा ठाठकै, चेतहो० २०, अथर जांणजो आऊखो इसकै, अथिर जाण जो कारमी देहकै, अथिर जोपन धन जांणजो, अथिर जाण जो यो परवारकै, इम जांणीनें लाहो लीजो थैलारकै, दीजीयै दांन तजियै अभिमांनकै, ममता टालीनें ध्याइयै ध्या-नकै, ज्ञान रतन जतन राखियै, मांन टालनें विनय जो-कीजकै, सीयलपालीनें सोजस लीजकै, तपस्या करीनें करम क्षय करो, करमांरो बंधछै फिर धन लोभकै, तेहने जीनीयांसु हुवै मोक्षकै चेनहो० २१, परमपर भावै जावै देवलोककै, मन गमता जठे मिले, थोककै रतन जडत घर आंगणो, नाटक पड रह्या बत्तीस प्रकारकै, कोडगमे देही-तणा सुख भोगवै, करंजेपधारे वेइ थेई करे घणा, चोसट

मणरा हुवैजठै मोतीकै,लाग रही जठै, झिगमिग जोतकै, पल सागरना आऊखा तुज लग रही जरानें भूलकै, आवागमण आगलगी इसी लगादूं थारे हेन जुगनतो वेगी मिल जावैलनें मुगतकै, जठेरे सुखसे सासता चवद राज लोक ऊपर जांणकै, सिद्धसिल्लाछै तेहनो नांमकै, आवा गमण जठै नहीं ओ उपदेश कह्योछै एमकै, शुभ चित्त तूं राखजै पेमकै, गुण उपजसी अनि घणा नरनारी मनि कर- जो हेपकै, जो तुमें चावोछो जीवनें चैनकै, सीख साचकर मांन जो एमकै, चेतहो चेनहो मानवी २२, इतिपदं ॥

[अथ सात विसनकी लावणी]

॥ सात विसनमत सेवो कोइ, सव शुण ज्यो नरनार, इण सेव्यां कुण २ दुखपाया, सो कहूं एक तार, एक चि- त्तसुं शुणिया सेनी, जव निकलेगा सारजी, मतसेवो कोइ विसन बुराछै परतिख देखलो, [टेर,] पांडव राजा मोटा राजवी, सूरवीर जोधार कृष्णशरीखा सायक यांहरे, पोतै वल अपार, जूवै रमणरे, मांह नैस कांइ, हारी द्रौपदा नारजी, मत २, तीनखंडरा साहवास कांइ, रावण राज माहाराय, सती सीताकूं लेकर आयो, बै ठो लंक गमाय, फीट २ हूयो मुल करे मांही, घका नर- कमें सायजी, मत ३, सेट माकंदीतणाईकरा, जिन रखनै जिनपाल, मदन कीवीजक्ष देवता, लिया आपरी लार, देवी देख जिनरिख डिगीयो तव, नाख दीयो तत- कालजी मत० ४, मांस आहारी नरवे पापी, करै जीवांरी घात, हांडा ज्युं परतारहेसकांइ, नहीं गिणै दीनरात, परभयमांहें, हूसी ख्वारवी नहीं, चालै कोइ साथजी, मत० ५, विषय विकाररा विकल हूवोडा, रमै वेस्यासुं

प्यार, नरकामांहें घणीज पड़सी, ज्युं जूल्यांरीमार, अग्नि वरणी पूतलीसथारें, चांपसी हीयें मझार मत० ६, मदरापान पीयनें उछ्रू, हो ज्यावे मनमांहें, लाज चीहूणा मानवीस फीरें, गली २ के मांह, सातविसन इह सेवै जिनोंका, जनम अक्यारथ जायजी, मन० ७, चोरी करै पारकीस कांइ, कुलनै दाग लगावें, राजाडंडै लोकीक भंडै, फिर २, घणो वोधावें, पांह पकड पैन्डामें नाखै, कोरडांरी मार लगावें जी, मत० ८, संवत उगणीसे गुणताळीसे, माहावदीमझार, उदयचंदगुरु आज्ञासेनी, जोड करी चितलाय, ऋषिहजारी वीनवैस कांइ विसन तज्यां सुख पायजी, मन० ९, इतिपदं ॥

[अथ धर्म्म बजाजकी लावणी]

॥ कह्यो मांन बजाजी सद्गुरुदें पूंजी मांड दुकानजी, [टेर,] काया रूप नगरकै मांही, बैरागमालमो जाय रज मिथ्यामन बाहर कढावो, शुद्धभाव पाल विछाय हो कह्यो० १, जिनवाणीको गजलै भारी, जरा फर्क मत जाण, माप २ तनें सतगुरुदेवे, मतकर खेंचाताणहो कह्यो० २, जीवदयाका सुखमलभारी, रेसमहै संतोष, इच्चल जीणसमता तपोसरे, ज्ञान दांमदे रोकरे कह्यो० ३, तपस्याको थंदागरभारी, साटी शीलकी जांण, एसा व्यापार करो चेतनजी, मिले तुझे निर्वाणजी कह्यो० ४, इतिपदं ॥

[तेरा पंथीयोंके चरचाकी लावणी]

॥ रहणीरा परतहीं प्यरा उद्यविचरत गंगधरा ये चाउ ॥

॥ सदा मोहे नूत्र लगे प्यारा जिनोंसें होना निसनारा,

[अथ थूलभद्रजीकी लावणी]

॥ थूलभद्रजी किंयो चोमासो दुकर २ चित्रशाला, प्रतिबोधी यारे व्रत दीया समझाई पेंडयावाला, [टेर,]ज्ञा-नभंडारा खोल्या मुनिवर हेतजुगतकर समझावें, लख-चौरासी जीवाजोनिआ गतीचार कह घनलावें, तिर्यच नारकी और देवता मनुष्यगतिया कहलावें, रल्यो काल अनंतनिगोदे तुरत छेटो नहीं आवें, [उठावणी] हेयो अजाण आंधो मिथ्यात्वी कहलावें, हेयो उजड पडता जिन मारग मुनिलावें, कामभोग विष जहर सरीखा विपाक फल मतखा आला, प्रतियो० १, जीवाजीव पुन्य पाप घताया, आश्रव संवरचितलाया, निर्जरावंध अरु मोक्षभेदनव भिन्न २ कर घतलाया, पृथ्वी अप्प और तेऊवाऊ वनस्पती ओर त्रसकाया, छउंकायाका नांव घताया उणके घटमें विठलाया [उठावणी] हेयो त्रस थावर सुक्ष्म बादर बोले, हेयो परजापता अपरजापता खोले, पाप अठारे सब समझाया जन्ममरणका भय आला प्रतियो० २, अष्टकर्म्मका भेद सुणाया प्रकृती ओर न्यारे २ समकित पामी व्रत आदरिया बारे व्रत उन सुद्ध प्यारे, मोहछाक ममताने मारे तपजप करणी अधकारे, पछीघनंतर हुई श्रावगा समझगई यो सबसारे, हेयो दानशील तप भावफेर आराधे, हेया सम्बर पोसा फेर सामायकसाधे, पडिकमणो बाकरे रोजीनां नेमधर्म्म पाले आला, प्रति० ३, व्रतपाले दोषण टाले तपजप सं-जम स्वप करता, बाईसपरीसा सेवे मुनीसर बारे भावना चित्त धरता, मन वचन काया वसकीनी पांचुं इंद्री थिर करता, चार कषाय आठमद त्यागी इच्छा रहत

मर देख घरमें आवे पूछागाछा करै चोकसी आहार सूझनो वैलावे, जिसघर मुनिवर हाथ जो फरसे सो बड-भागी कहलावे [उड़ावणी] हेवो उपयोगसहित यसकी काया आनसकूं, हेवो धनधन मुनिवर मारे अपणे दमकूं, हे मैं जाउं बलिहारी सीस नमाउं उनकूं, साधु करणी-पार उतरणी क्षमानणा गुण है सवाया, वीका० २, राज मलजी लालचंदजी मगन चांद मुनि तपधारे, गयूजी दीवल फजोडी गंभीर मलजी सुखकारे, आठ मुनिः संग आया पूजके इछा माफक रहे म्हारे, माहा सनियां महा-राज विराजे सात ठाणासे अधिकारे, सोनाजी जिवणाजी कहिये पान कवर विद्या धारे, सिणगारांजी पेमकय-रजी मो भाग भूरांजीरी बलिहारे, [उड़ावणी] हेवो सतरे भेदे संजमका गुण छाजे, हेवो तपस्या करके देखो सिंघ ज्यूं गाजे, हेवो धरम धरै सो सब निर्जराके काजे, आश्रव रोके संवरमां हे तप जपमें सरमावे, वी-काने० ३, अनाचार ये बावन टाले नवकलपी विहार करे, चार भावना भावे मुनीसर नववाड सुद्ध मनमें धरे, दोनुं वखत वखाण वाचता अष्ट कर्मासूं स्यूम लरे, हेत जुगत दृष्टांत सवइया भिन्न भिन्न भिन्न करके ख्यर पडे समनी परसनी आवे परिषदा पुन्यवंत दया धरम करे, जिनवर वांणी अमिय समाणी आराध्यां दुख दूर करे [उड़ावणी] हे गुण पहोत गुरूका केणेमें नहीं आवे, हेवो छोडा जगत जंजाल भविकुं समझावे हेवो निज गुणपावे सो शिव पुरकूं जावे, तेज करण गुण करे जि-यांरा ज्ञान ध्यान हुवा चितचाया वीका० ५ इति पदं ॥

किरिया पाले शुद्ध आचारे वे पंच महाव्रत मेरूसम सि-
रधारे महाराज भव्यजीवां मन भायाजी, शिव० ३,
फिर केईवरसांलग ज्ञान गुरांसें लीना महाराज सालसो
बावन जाणोजी, क्या कानी सुदिके मांह सहर रतलाम-
पिछाणोजी, मुनि विनयवैया वच कर साता उपजाई,
महाराज पूज्य मन अनिहरखाणोजी, हे लेवो पूज्यपद
आज स्वयं मुख इम फुर माणोजी, [उडावणी] जब
गुरु आग्रहसें पूजपद मुनि लीनो, पूज मस्तक हाथ रख
हित उपदेश बहु दीनो, मुनि शुद्ध भावसें अमृत सम-
रस भीनो, चारों संघ सन्मुख भोलावण बहु दीनो,
महाराज चौथ पूज्य स्वर्ग सिधायाजी, शिवला० ४, मु-
निसम भाव शांति मूरत है प्यारी, महाराज संप गुण
अधको पायाजी, ये भक्त वच्छल मुनिराज सबकों
अधिक सुहायाजी, रतलाम सहर चउमासो पूरण करकै
महाराज फेर इंदोर सिधायाजी, केई गांम नगर पुर
विचर बहु उपगार करायाजी, [उडावणी] मुनि जहां
जावै जहां सबकों लागे प्यारे, क्या अमृत वांणी मूरति
मोहन गारे, मुनि जहां विचरै जहां करै बहुत उपगारे,
तपस्या सामायक पोषध व्रत बहुधारे महाराज भव्य
मन बहु हुलसायाजी शिव० ५, फेर साल अठावन नवे
सहर पधारा महाराज जहांमें दरशण पायाजी कांई
रोम २ हर खाय हीया मेरा उमटायाजी, उस वखतभी
मेरे मनमें गुण कथ गाऊं महाराज दिलमेरा ललचा-
याजी पिण थिरता नहीं थी जिससें नहीं कुछ गुण कथ
गायाजी [उडावणी] अब दीन दयाल दयानिधि तुम
हो मेरे अब रखो हमारी लाज सरण हूंतेरे, कृपाकर का-
टोलख चौरासी फेरे, दरशण कर पीछा आया फिर

वायाजी शिवला० ९, फिर साल नेसठे रतलाम आप पधारे महाराज श्राविक श्राविका मनभायाजी, की चउमासेकी अरज पूज्यसें आण मनायाजी ये वचन पूज्यका अमृतसम नित यरसै, माहाराज सुणन सहुमन ललचायाजी, दिवान मुसद्दी ओरराज अहलकार केई आयाजी, [उड़ावणी] जहां मुसलमानकेइ वखाण सुणवा आवे, उपदेश पूज्यका सुण कर यहु हरखाये, जहामद मांसका त्याग किया शुद्ध भावें, फिर ठाकुर पचेटे काकूं सिकार छुटाये, महाराज जैन परमावक थायाजी, शिवलाल० १०, फिरकर चोमासोभाण पुरे पधारे, महाराज भव्य जीव यहु हरखायाजी, एक ठाकुरकों समझाय यदद सेरा यचायाजी, फिरकेइ जाल मछयांका यंध करयाये, महाराज अतिसय गुण अधिका पायाजी, कांइ सूरत देख दिलमस्त हुवे धरम चितलायाजी, [उड़ावणी] जो वखाण सुणवा एक यार कोइ जावे, फिर नहीं कहणेका काम तुरत चल आवे, उपदेश सुणके दिल उनका हुलसावे, करे आपसुं पचखाण त्याग मन भावें महाराज आपका गुण यहु छायाजी, शिवला० ११, फिर कोटेसें अजमेर जो आप पधारे महाराज नव ठाणेसें आयाजी, यहु हाव भावके साथ चोमासो जाण मनायाजी, अजमेर पधारा सुणके झटमें आया महाराज दरशण कर प्रश्न थायाजी हुवो हरख हिये उल्लास जोड कथ गुणमें गायाजी [उड़ावणी] कहे लालकनइया बीकानेरकावासी, अजमेर लावणी जोडके गाई खासी, चोसठे साल असाड एकमसुदि भासी सय श्रावक श्राविका सुणके हुआ हुलासी, महाराज पूज्यका जसस-

तो गुणपार आवै नांई, जेसें पंगु चढे गिरपै मनमें हरख आनंद लाई, सुण वैराग पांमें लावणी कनीं राम कहै सुखदाई उगणीसें पचासे चोमासो भीनासर सुखकारी है, रुघना० ५, इति पदं ॥

[पूज श्री उदयचंदजी महर्पिजीरी लावणी]

॥ कर ले पूज चरणका ध्यांन जिणासुं पांमें सुख निधान, [टेर,] मुरधर देश मालवै मांही जनम भोम सुथान उज्वल वंश उजागर रूपना उदय चंद भूभान, करले० १, देख अनंत असार जगतनें, विषकी वेल समान, सम किनसेल संभाही सूरां, ऊठ खडेमें दान, करले० २, ज्ञान तुरीपर चढ कर बैठा, सुमती साज पलाण, तप तरवार ढाल धीरजकी करता अष्ट करमकी हांण, करले० ३, आदित्यजेम उद्योत करत है, मिथ्या मेटन जान, हेत उपदेश देत सुखकारी, उपगारी पद प्राण, करले० ४, परंपरागत पद आचारज सोहत गुणकी खाण, मुनी सारांमें वृद्ध विराजे योंही इंद्र विधान करले० ५, देश २ का नरनें नारी, धरना धरणा ध्यांन, पुन्यवंत वड भाग हमारा, मिलिया दरद्राण, आन, क० ६, चारू संगके वीच विराजै पंडितपणा वखाण, भरी सभामें एसी दीपै, जाणे फूलण श्रीजिनवाण, क० ७, देव गुरूधरम परसादे सदा जोत जगान हीरालाल कहै पूजजी दिन २ चढते थान, करले० ८, इति पदं, ॥

[अथ हुकम मुनीजीकी लावणी]

॥ हुकम मुनी दीपै जगमांही सूरवीर हो रह्या ऋषी सर तपस्याके मांही, [टेर,] कोटे कानींसुं आया मुनीसर

पयधारा, है कायासरीर सुंदराकार लगै बहु प्यारा है क्या छोटी वयमें प्रगटे हैं गुण सारा, सतसंगत साधोंकी करके सीम्या ज्ञान अपरम पारी, पट्० १, उगणीसैं अड-तीसे सालमें रतनपुर लागे प्यारी, असाढ सुदनम्मजाण मंगलवार आण मुनि दीक्षाधारी, पूज उदयचंदजीकेपासै महा वरत शुद्ध उधारी, रतन चंदजी गुरु किया चरण चितदिया बहै आज्ञाकारी, [उडावणी] है क्या शुद्ध मन चित्तसें संजम मुनि वरलीना, है क्या तजा जगत जंजाल दया चितदीना, है क्या अल्प दिनोंमें ज्ञांन ध्यांन रंग भीना, विनय विवेक नेकगुण प्रगटे क्षमा गुण-पर तिखजारी, पट्० २, पंचमहाव्रत सूधा पालै तप जप संजम खप करता, दोप वयालीस टार लेवै शुद्ध आहार भावना चित धरता, बारे भेदे तपस्या करके अष्ट करमकूं वैहरता, पालै शुद्ध आचार सूत्र अनुसार पापसें वै ड-रता [उडावणी] है क्या सतरे भेदे संजम मुनिवर पाले, है क्या बावीस परीसाजीत दोप सहु टाले, हेक्या नवकल्पी विहार मुलकमें माले, बहु वरसां लग पुज्य पासमें सूत्र उद्यमकीनो भारी, पट्० ३, गांमनगर पुर-पाटण विचरे महापाल विरमचारी, नववाडसील पार लोपै नहींकार जगमें महिमा सारी, गुण सत्ताईस दीपे मुनीसर कहूं कहांलग विस्तारी, तीन करणमें योग पाले शुद्धयोग निज आतमकूं उजवारी [उडावणी,] है क्या समती परमती पूछें परशन आई, है क्या हेतजुगत दृष्टां-तसें दें समझाई, हेंक्या न्यायनीतकी रीतसें दे वैठाई, वचन जिनोंका सरधे सोही पांमें भवजलसें पारी पट्० ४, मुन्नालालजी महागुणधारी बालचंदजी परउपगारी, लालचंदजी मुनिजाण हुकम गुण खाण चंद आनमतारी,

प्यारे, महमोहन पेलमरब परपद्दा परसें ज्युं अमृत धारे है सादुल्जी महाराजथें मुनीसर मोटा, है थांरी सेवाकरै नरनार उणीयें नहीं टोटा, हेलिया महावीरका ओटा, पडिक्कमणा ओर बोल थोकडा सीर्खे थागां ओर भापा, धीरज० ६. पांच महाव्रत ओजी पाले शुद्ध सिद्धांत भण भागारा, पांच सुमती तीन मनगुती शुद्धपार जो विस्तारा, पांचूं इंद्रीगोपें मुनीसर पटरस छोड्या सप सारा, पोषणपाणी धोयें मुनीसर साघ मारग नांदं धारा, ह्येंं सतरे भेदे संजम मुनियर पाले, ह्येंं नवकल्पी विहार सुलकमें माले, ह्येंं बावन अनाचार टाले, पालपरूपे परभय बिना जनम मरणका भय टाया धी० ६, दोप बयालीस टाले मुनीसर आहार गृहस्थो वेलावे, बारे भेदे करे तपस्या आठ करमांनें उडावें, बारे भावना भावें मुनीसर सर्वी जिनेसर येघावें, निरवद्य भाषा बोले मुनीसर धरम उपदेशमें पिलमायें, ह्येंं सज्या संथारो सदा पलेवणा करता, ह्येंं बाईस परीसासह पापसें डरता, ह्येलिया मुक्तिमारगका रसता, इरिया भाषा और एषणा उपयोग सहित पसकरी काया, धीर० ४, त्यागी वैरागी नहीं सवादी नित बुलाया जावें नहीं, अवसर देखकर घरमें जावें अजाणतरसुं आवें सही, पुछा गाछा करे थोकसी गाला गोली करे नहीं, अचित्त वस्तुवे लेवें कल्पती दोषण लागेसो लेवे नहीं, ह्येंं जिसघर उस बडभाग महरण मुनि जावें, ह्येंं हरखे चित्तहुलास आहार वहरावें ह्येंं भवसागरतिर जावें, चित्त वित्त पात्र संजोग मुस्कल भवि जीयांके मनभाया धी० ५, सीयल पालें नववाडसुं क्षमा खडगकं हाथ रहा, आठकर मांनें मारहटाया धरमपूर्सा गाजरहा, गुण सत्ताईस दीपे मु-

घरता, पापरूप रज दूरै हरता, जनम मरण ओर जरा तीनोंका भय घटमें लाया, भवि० ३, नववाड शीलपाल आठ प्रवचन चितलाया, चार कषाय आठमद त्यागी रागद्वेष उपशमाविया, बारे भेदे करै तपस्या जिसका पार नांही, घडी तपस्या करी जिनोंनें कहूं कठातांई [उडावणी] सोले पारणे सोले करिया, दिन बत्तीस अभिग्रह शुद्ध फलिया, धोवण आगार इता तप करिया, छुटकर तपस्या करी जिसीकी गिणती नहीं लाया, भवि० ४, सवादवाद इंदरी सब जीता समता चितधारी, धन्य पुरुष रसना बस करता जिन पुरुषोंकी बलिहारी, पूज पधारा बीकानेरमें हुवा उपगार भारी, सम्वर पोसादया समायां नहीं आवै पारी, [उडावणी] बायोंमें तपस्या हुई भारी, कहां लग महिमा कहुं जियांरी, जिन घरकी चाहूं बलिहारी, पांच महीना सुखसें बीता आनंद बहु पाया, भवि० ५, दोनूं वखत बखाण देवे जद अमृतधारा बरसै भविजीव पिराणी सुण २ हरखै समकित शुद्ध फरसै, स्वमती परमती पूछै परसन दै उत्तर सुग्रन्याय, कोहूमानै कोऊ नहीं मानै सब परसम भाव, [उडावणी] न्याय नीत सब चितधरे हैं, पक्षपात दूर करे हैं, जो पुरुषोंका काज सरे हैं, एसे मुनीकै चरण भेटते दुरगति विरलाया भवि० ६, गैनचंदजी गुणवान जिनोंकी महिमा हदछाया, कोट जिभासें करूं गुणतो पार नहीं पाया, चुनीलालजी चोखे चित्तसें छोडी जगमाया, दोघठाणासें कियो चोमासो भविजीव मन भाया, [उडावणी] कनीराम मन उछरंग आया, बुधसारू अलप गुण गाया, पेम मगन हुइ मेरी काया, उगणीसे सैंतालीससाल काती सुदि नवम गाया, भविजी० इति पदं॥

रज अब सुणो हमारी रे, [टेर,] हीरालालजी पिता आपकै, साकरबाई मात, कडवड गांममें जनम लियो सिरे, गांधीयांरी जात लागती सबकूं प्यारी रे, श्रीकर्म० १, उगणीसे गुणचालीसमें, रतनचंदजी गुरुकीना आसोज सुदि तेरसदिन मंगल, संजमके रंगभीनां, छोडदी ममता सारी रे श्रीक० २, सतरे भेदे संजमधारी, दोष बयालीस टालै, ज्ञान ध्यांन क्षमागुण भारी, जिन मारग उजवाले, लोभ ममताकूं मारी रे श्री० ३, ज्ञान ध्यांन भणनेतणो सरे, उद्यम करै दिनरात, धरम ध्यांनमें दिन गमेसरे कांई, नहीं दूसरी बात, मुनी मोटा उपगारी रे, श्रीक० ४, बीकानेरका श्रावक श्राविका, एककरे अरदास, चोमासेरो कलपजिकोस कांई, करो बीकाणेवास, अरजली जो अवधारी रे, श्रीक० ५, फजोडी मलजी है गुणवंता, जुहारमलजी छाजै, सूरजमलजी मांगीलालजी, धर्म्मध्यांनमें गाजै, मुनीसर सब गुणधारी रे, श्रीक० ६, धर्मध्यांनका ठाठ घणेरा, तपस्या हुई अतिभारी दोनुं वखते वखाण वांचता मूरतमोहन गारी रे सुणे है सब नरनारी रे श्रीक० ७, महासतियां उगणीस विराजै, अधिक अधिक गुण दीपै, ज्ञान ध्यांन ओर करै थोकडा, आठ कर्म्मांनें जीपै, तपस्या इण विधधारी रे, श्रीक० ८, रंगुजीकी धापांजीतो, नवठाणासूं सोवै, धूलांजीतो इकसठकीना और घणी तपस्या होवै, करदिया अगता जारी रे, श्रीक० ९, खेतांजीकी लिछमांजीकै, थोक सैतीसको कीनो, सुगन कवरजी पानकवरजी, दोइकतीस जलीनो आठ ठाणा सुखकारी रे, श्रीक० १०, रतनकवर समुदायमें सिरे, सिरदाराजीरी चेली, फतैकवरजी करी अठाई ठाणा दोय रहेली, सतियां सोभैसारी रे, श्री०

लावै सूझतो आहार धन २ भाग उसीका जिसका हाथ फरसाया, अ० ६, हेजी पंचमहाव्रतधारी मुनिःकों, वंदन करूं त्रिकाल, समकिन होवै निरमलीस कांई, पावै मंगलमाल, अनाथी मुनिसें श्रेणिक समकित पाया अरे० ७, चार मुनिःजी संग आपकें, तपसी ओर गुणवांन कजोडी मलजी जुहारी लालजी अर कमलजी गुणखान, हेक्या मांगीलालजी चपल बुद्धि दरसाया अरे० ८, उगणीसें छासठकै मांही, बीकाणे चोमास, चोमासो फेर करो कलपतो आ सबकी अरदास, हेक्या आवड माहानमा छंद जोडकर गाया अरे हारे० ९, इतिपदं ॥

[अथ लावणी ऋषि करमचंदजीकी तीजी.]

[आलाप,] करजोडकै बीनती करूं, चरणामें शीश न मायकै, गुरू गुणवरणन करूं, अज्ञा वडोंकी लायके १, मातपिता ओर जनमनगरी, कहताहूं समझायकै, कोण गांममें लीनी दीक्षा योकहूंमें गायके २, साधुसंतकी करे सेवा,वो नर चतुर सुजाण है, जो उनोंकी करे निंदा, वो मूरख नादान है ३, वार २ करताहूं अरजी तुमारे चरणमें ध्यांन है, करो चोमासो कलपतो अब अरज लेवो मांन है ४,

पट्कायाके पीर मुनीसर पंचमहाव्रतके धारी बीकानेरमें कियो है चोमासो करमचंदजी मुनि उपगारी [टेर] अवल हकीगत कहूं आपकी पांच मुनिसंग आये है, राजमलजी जुहारीलालजी, धनराज मन भाये है, सूरजमलजी मांगीलालजी एकसे एक सवाये है, विनयवंत सभी संतोंकूं लुल २ सीस नमाये है [उडावणी] हेपे पंचमहाव्रत पालो उत्तम है किरिया, हेशुद्ध पालो शील

सुखशाता गुणसत्ताईस दीपे मुनीका क्षमारस पाना, दोष वयालीस टाल मुनीसर निरदोषण लाता निरदोषण लाना सयकूं हितकारीरे गुरुसुखकारीरे, १, पंचमहाव्रत पाले मोटका जिन आज्ञाअनुसार दानदयाका मारग यतावे सुमती गुपतीधार दोष वयनको वखाण देवें पाले शुद्ध आचार मुनी ब्रह्मचारीरे गुरुसुखकारीरे, २, मन वचन काया वसकर लीनी रागद्वेषको मार धारे भेद करे तपस्या नवकल्पी करे विहार यारे भावना भावे मुनीसर निरवद्य योले विचार क्षमासुखकारीरे गुरुसुखकारीरे, ३, कजोडी मलजी जुवारीलालजी मुनिवर हितकारी, सूरजमल ओर मांगीलालजी, वांदो नरनारी, थोल थोकडा सीखणकेरा आदेश करे भारी आनमको तारीरे गुरुसुखकारीरे, ४, श्रावक श्राविका अरज करत हैं, मुनिवर सुणलेणा, कलपेसो चोमास बीकाणे दरशण नित देणा, तेजकरण हे शरण आपकी भेटे गुरुचरणा, अलप बुध माहारीरे गुरुसुखकारीरे, ५, इतिपदं॥

[अथ लावणी शोभालालजी ऋषीकी ।]

॥ अथ आडार लंगडोट लिख्यते ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्या उवझाया मुनीराजरे पंचपरमेठी नितनमूं तारण तरणजिहाजरे १, गुणवंतके गुण गावनां पूरे जोमनकी पाजरे उत्कृष्ट रस उत्पन्न हुवे सारे थोसगला काजरे दीरगुणीका गुण कोई गावेगा दुखदरिद्र गमावेगा फल मनवंछित पावेगा पार सागरसें लंघावेगा जीव षट् काय न हणावेगा धर्म्म अहिंसा यतावेगा भक्ती गुरुकी जो करावेगा विधीसें सीसन

रह्या आपसही, विनयभक्ति अपार नेकप्रकार करकै बहु ज्ञानलही, पूज्य श्रीमुख प्रशंसा आपकी सुणीसो मुझसें नजाय कही, मुझजिभ्या हेएक गुण अनेक पारकैसें जो पही, [उडावणी] हेकोडकवी मिल गुणकरै कोई आपका, हेसुरपतीनल हेपारसोई आपका, हेशुद्धक्रिया ज्ञान है दोई आपका, पंचमहाव्रत पालत विचरै दोपसहू दूरां टारी, ज्ञान० ४, पांचे सुमती सोहे मुनीसर त्रणगुप्तीके भंडारी, षट्कायाके पीर ज्ञान गुणधीर सम दम खम गुणभारी, नववाडशील पाले मुनीसर दशविध जतीधर्मके धारी, अष्टमदको गार कषाय चार टार निजातम उजवारी, [उडावणी] हे मुनिचरण करण गुणधार सुणो नरनारी, हेदोप वैंनालीस टार लेवैं शुद्ध आहारी, हेपूज आणावरतें राखे घणी विचारी, पडिलेहण प्रतिक्रमण हमेसां सुधेठांम करता भारी ज्ञान० ५, सूत्रभगवती पन्नवणादी भाव विविधमुनि फुरमावें, हेतजुगत दृष्टांत देवै बहु संत भिन्न २ कर समझावें, अमृत समवाणी हमेसां दोनुंवख्त मुनि वरसावें, सुणकै मस्त होजाय भव्य हरखाय मजा आनंदपावें, [उडावणी] हेमुनिनय निक्षेपा सप्तभंगादी जाणैं, हेकरे न्यायसहित परमाण पक्ष नहींटाणे, हेपूछें प्रश्न उत्तर देवैं सूत्रप्रमाणैं, स्याग संघ बहु हुवा बीकाणैं तपस्याका नहीं आवैं पारी, ज्ञान० ६, शाल अडसठ चोमासो बीकाणे शोभामुनिकी हद्छाई मुनि देविचंद गेवर उमंग छनि ऋद्धि दिपटाई, आरजियां तेवीस ठाणेसें त्रण समुदायकी सुखदाई, करै तपस्या घणी स्वरगकी अणी जनम सफलपाई [उडावणी] हेअमलाल कन्हइया छंद जोडकै गावें, हेसब साध संतोंको सुग्र २ शीस नमावें, हेसुखसंचित प्रशेपेही अरज

सुभाव सरल माहा गुणखाणी, हेआगम अनुसारे वचन कहै सुखदानी, भिन्न २ ज्ञान सीखावै सयकूं वचन जिनोंका है थाला, दुक्कर० ३, तीजांजी महाराजकी महिमा कहूं सुणो सय नरनारी, सोहतीस भाव अहो निस जिनका क्षमातणा गुण है भारी, नरम वचन निरदोष योलता राखे घणो दिल विचारी, रातदिवस करै ज्ञानका उद्यम कहूं कहांलग विस्तारी, [उडावणी] हेक्या सोनकंवर छगनांजी जीवणांजी सोहै, हेक्या पेमाजी यखता वरांजी मन मोहै, हेमाणकभूरांजी राजकंवर गुण होवै, हरखांजी महाराज ग्याराजी थारे ठाणा शोभे आला, दुक्कर० ४, नंदकवरजीके टोलेमें गुणवंती सतियां सारी, एकएकसें अधिक गुणोंमें विद्यावंत है अधिकारी, किरिया पातर सरल स्वभावी सरय सती महागुणधारी, कोडजिह्वा गुण करे हो जिनूंका नहीं आवै उनका पारी, [उडावणी] हेक्या आवड महातमा छंद जोड गाता है, हेदुख जावै दूर फेर सुखसंपत पाता है, हेक्या श्रावक श्राविका दरश सदा चाता है उगणीसें ओर साठसालमें जोडकरी अनिरसाला, दुक्कर० ५, इति पदं ॥

[अथ साधपणेकी लावणी लिख्यते ।]

॥ कायामें ज्ञान कर धरा ध्यांन जिन जिगकी माया छोडदिया, होगया साघ सय छोड वाद जिन समता रस भरपूर पीया, [टेर,] झुठे मात सय भ्रात भ्रात ये सय स्वारथके जांनलिया, परभूसें प्रीत तज जगकी रीत श्रीजिन मारग पहचान लिया, भजते अरिहंत रहते एकंत जिन चित मनसेती ध्यांन किया, होगया० १, तज हिंसा

तपना तेरारे, श्रीते० ४, घडे नागकूं काढउपाखा, मेल्या सर्ग मझार, पद्मापति धरणेंदर हूवा, सुणा मंत्र नवकार, उठालिया तापसडेरारे, श्रीने० ५, कमठमर हुआ मेघमाली, प्रभुहुये अणगार, मेहवरसाये प्रभु न चलिये रचिया फैनहजार, कमठ मन भया अछेरारे श्रीतें० ६, धरणेंदर पदमावती सरे, आसण अधर उठाय, उपसरग टाल्या प्रभुजीका, आया जिणदिसि जाय, गावै गुण प्रभुफेरारे श्री० ७, पारस केवल पांमिया सिरे, तीरथ थाप्याचार, साधसाधवी श्रावक श्राविका इसमें फरक नसार जगतमें किया उजेरारे श्री० ८, घलते नागकूं जिम तुम तारो, तिम प्रभु मुझतार, हिमन मलसुत कनीरामकी अरजीये अवधार, मेटभव २का फेरारे श्रीने० ९, इति पदं॥

[अथ मुक्तिमार्गकी दुकरता ढाल]

॥ मुगतिरो मारग दोहलो जीवा चतुर सुजाण, [टेर,] पृथवी काया नहीं छेदिये, जाणो निज मातसमान, त्रसथावरयासोवसे, घणाजीवा इंदीखाण, मु० १, पाणीविना परजा डुले, आसा फरेरे राजान, ऊंचो मुखकर जोवना, किरपा करो भगवान, मु० २, येचेरे फरजन आपरा, तोपिण नहीं मिलेधान घसको खाय धरती पडे, ऊभा तजदे प्राण, मु० ३, तेऊ कायारो दासनर आफरो, वायू देवेरे बधाय, उडता पडेरे पतंगिया, जीव घणा जलजाय, मु० ४, तेऊ वाऊरो नीमरयो, मानवभव नहीं पाय, निश्चेरे जावै निर्यचमें, घणो दुखियोरे थाय, मु० ५,

---

१ [मेडतवर पार्श्वनाथ मंदिरने एक नाग कहतेने अपवछेकूं बचाया ऐसा लेख है बाद बनको दिगंबर कहते है इसवास्ते पठ पड़का है मनसे नहीं.]

कर धांधियो, श्री श्रीकृष्णमुरार, आज्ञा दीधी आणंदसु, लेवो संजमभार, मु० २१, साढी वारे वरसां लगै, झूझ्या श्रीवीरजिनंद, जीवदयारो सिर सेहरो, धांध्यो त्रिसला-रेनंद, मु० २२, कालो रे मुखकीयो चोरनो, फेरयो नगरमझार, समुद्र पाल ते देखनें, लीनो संजमभार, मु० २३, हिंस्यामें चोरीरी नियमा कही, छूंटै जीवांतणां धृंद, कुगुरुरो भरमावियो, होरयो अंधाधुंद, मु० २४, करण मुनीसर इमभणे, पालोवरत अखंड, जीवदयारो धर्मआदरो, भाख्यो श्रीभगवंत, मु० २५, इति पदं ॥

[अथ श्रावककरणीकी सिझाय]

॥ श्रावक नांम धरायनें, एहयाकरै अकाज, तिणनें समझु श्रद्धतां, मनमें आवै लाज, [१, ढाल,] यांदृ सोले जिनसो०, अंडामारीनें घडियां उडावै, सुदरी यदि फगीनें दीखावै, त्यागे नहीं पारकी नारो, तेश्रावक किम उतरें पारो, १, परनारीनें रहे तकता, जिम ग्रहण मांहि मंगता फिरता, वचन पदै अनिविकारो, २, ते०, मुंक ग्वायने पेटभरे, विसवास देयनें घाम करे, टाले धर्म निंदे संसारो, ३, ते०, नीर अछाण्या मांहि पडै, भैंसा जिम पैसीनें रोल करै, पहै पीवणरो नहीं परिहारो ४, ते०, कंदमूल भखैनें तकै मूला, यहु बीजारांध करैं होला, पलै पोरभखै लटसंहारो, ५, ते०, पलै गेररमेनें घोलै अछता, परनार तकै रातूं फिरता, सपटैनो ग्वावै मारो, ६, ते०, अछताक जिपा मांहि मिलै, कयड़ी माड़ै पैजार पलै, ओ उत्तमरो नहीं आचारो, ७, ते०, हुको पीवैनें मदमांस भखै, रात्री भोजन निशदिवस तकै,

आपै आछीनरै, यांधे पेटनी पाल, ओमारग नहीं साधरो [आंकडी,] घेटा यहू मावापना, असत्रीनें भरतार, सासू यहू सगातणा, कहै समाचार, २ ओ०, लाभ अलाभ भाखै यले, जोतपनें जोय, जनममरण बतायदे दोप तीसरो होय, ३ ओ०, जात जणावै आपरी, दीनदया मणोथाय, आहार नआवै पातरै, मूंढोदें कुमलाय, ४ ओ०, ओपघ भैपज करै, यलेदेवै सराप, क्रोधकरी लडविघ लिये, ज्ञानी कह्यो पाप, ५ ओ०, मान माया लोभ करी, हुवा दोपण दश, पहिला पछेनें साथे, करै घणो जस, ६ ओ०, चारणदे विरदावली, भोजगनें भाट, अणदीधां ओगुणकरै, थोथो यैठो पाट, ७ ओ०, विद्या फोर कामण करै, यलै मंत्रनें चूर्न, संजोगमेले सर्वथा, इसड़ां करै खून, ८ ओ०, उसासणारा दोपए, गलावै, गर्भ, उत्तम ए नहीं आदरै, साधूटालै सर्व्वे, ९ ओ०, रसनाना लंपटीधका, मेलै आहार संजोग, आछो मिलियां राजी हुवै, भूंडो मिलियां सोग, १० ओ०, ताक २ जावै गोचरी, लावै ताजामाल, उवास व्रत करै नही, कुंदा वणरह्या लाल, ११ ओ०, रसनारा गिरधीधका, आरामें जाय, लघुता लागे लोकमें, निंदा धर्मनी थाय, १२ ओ०, उणदिन जायसकै नहीं, रहे रातरा ध्यांन, प्रभाते जावै तेडियो, स्यूंपायो ज्ञान, १३ ओ०, भारी आहार भलीतरे, खावै ठंढोठार, भांगेवाड तोलपांधका, पीछै हुवै भांड, १४ ओ०, येसवार भला घालिया, भलो दीयो यघार, तीपण आछीतरे कियो, यले कहै छमकार, १५ ओ०, चावलदालमें घी घणो, सरायने खाय, चारित्रनें करै कोयलो, कह्यो सूत्तरमांय, १६ ओ०, निरसो आहार तीवणवले, नहीं मिरचनें लूंण, चारित्रमें निकले

समझके देखो साहिब, गज बहुत डरती, गरीब ओर लाचार दीनमें, दूध पिलाके सुख करती, ५, मेरा दुखमें कहूं किसीपें, कोणसुणे अरजी, ज्ञानी होयसो ज्ञानसें समझे, और सभी गरजी, ६, दूध पिलाती पूत्र जनमती, दुनियां पालणकूं, जमी दारका करूं गुजारा, हासल राजाकूं ७, वैद्यकग्रंथ पढा जो पूरा, मेरीकदर जांणे, शोथ संग्रहणी अजीर्ण खोवै, मेरी छाछ स्यांणे, ८, रक्तपित्त दही शिरवरन सेनी, अनीसार जावे, नेत्ररोग सब और रतोंधी, घीसें नास पावे, ९, सभी रोगपर दवा घृतकी, दवा संग बणती, बादी पित्त सब रोग मिटावे, एसा में सुणती, १०, दवा शुद्ध गोमरसें केई, गोमुत्रसें होती, पांडू सोथ गोमूत्रसें मिटता, जहर केई खोती, ११, दूध दही घृत छाछ बिगरनर, किसीके नहीं सरता, मुझसें पलें और मुझकों मारें, एसा जुल्म करता, १२, दूध दही घी घरमें धरतें, छाछज पेटनकूं, इतने सुख मेरे संगरहते, लष्ट पुष्ट तनकूं, १३, गाडी रथके पूत्र जूतते, खेती करनकूं, ईंधन और घरकी करें शोभा, गोबर नीपनकूं, १४, लूणनीके शिर चमर डोलावें, शोभा बहुत करती, मेंअबला लाचार होयकर, सरणा हियेधरती, १५, इति गौअरजी पदं ॥

[अथ प्रशस्ति ॥]

॥ समकित केलक्षण यही गुणका ग्राहक होय, जैसेकूं जैसा समझ, रखै विरोधन कोय, १, सम परिणामी दानका कपलग करूं बखाण, अन्यमती शुभगुण धरे, वोभीनीका जाण, २, धनकण कंचन सब तजै, निंदाविकथा

त्याग, जिन आज्ञामें चलतजो, सोही संतवड भाग, ३, उगणीमें अडसठमें, बुधजन किया विचार, संपचढे जिन धर्ममें, नो होवे जयकार, ४, मांने कर्त्ता तो कहा, नहीं मैं कहा विशेष, मनमांने मानेविगर, नगई ममतारेख, ५, धर्म अनादि जैनका, देवपुज अरिहंत, शुद्धदेत उपदेशसो साधू वर्जेमहंत, ६, सूत्रादिकमें जो कहा, नय निक्षेपामूल, स्याद्वाद रुचि जब बढे, यही धर्म अनुकूल, ७, गोले छा-गोत्रीप्रवर, वींझराज सुतनेक, मोहणलाल पूनमशशि, बडभागी सुविवेक, ८, इनके कहणेसें किया, संग्रहपाठक राम, छपायके परगट किया, तद्भक्तोंके काम, ९, वा-चक जीवण प्रेमचंद, अमरचंद गुणरास, वीकानेर मरुदे-शमें, विद्याशाल प्रकाश, १०, जैसा जिसने रचदिया, सोहीलिख्या सुजाण, अगर अशुद्धि होयतो मुझ दोषण मनजाण ११, यायां भाषा पढमही, मनमें हरखित होय अधिक ओछ लिखने रहा, मिच्छामि दुकडमोय १२, इति॥
